इस मतबेमें जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

नवीनसंग्रह

जिसमें कवित्त सवैया भजन होली आदि शृंगाररसके प्रेमी पुरुषोंको अतीव आनन्द दायकहैं ॥

मनमोहनी

जिसमें हज़ारों तरहके राग ऐसे २ चुहचुहाते लिखे गये हैं कि बयानसे बाहर हैं रसिकोंके वास्ते तो सजीवनही हैं ॥

हफ़ीजुल्लाहखांकाहजारा

इसमें नानाप्रकारके बहुतही उत्तम २ सब २१८४ कवित्त लिखे गयेहैं स्थान २ पर तसवीरें भी बनीहैं ॥

महिपालसिंहसरोज

इसमें सब तरहके ३०१ कवित्त बहुत अच्छे २ हैं ॥

गुलदस्तैहफ़ीजुल्लाहखां

उर्दू में है। इसके दो भाग एकही में छपेहैं। पहिलेमें गज़लें उमदा २ और दूसरे में सब तरहके राग व कवित्त सवैयादि हैं ॥

नानार्थनवसंग्रहावली

पण्डित मातादीनशुक्क रचित सातपोथी का संग्रहहै (१) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक (४) ज्ञानदोहावली (५) रससारिणी (६) तिथिबोध (७) मातृदत्तकृत पिंगल अक्षर बहुत पुष्ट कि वृद्ध और बालकभी पढ़सक्तेहैं॥

कृष्णप्रिया

मंगलीप्रसाद विरचित ब्रजबिलासकी तरहपर श्रीकृष्ण का जन्मसे बैकुण्ठ गमन पर्यन्त चरित्रहै यह काव्यालंकार बहुतही सुन्दर पुस्तकहै ॥



चित्रचन्द्रिका सटीक ॥

छप्पै ॥

वारण आनन शुभ्र भाल सिंदूर सु चर्चित । देव सिद्ध गंधर्व नाग किन्नर करि अर्चित ॥ एक दन्त भुज चारि सुभग लम्बोदर राजत । अष्ट सिद्धि नव निद्धि बिबिध बिद्याबर छाजत ॥ कवि काशिराज सुख पाइकै चरण कमल में चित धर्यो । नाम लेत शिव पुत्र को बिघ्न सकल तत्क्षण टर्यो १ ॥

टी० ॥ यह मंगलाचरणहै गणपति की स्तुति ग्रन्थकर्त्ता करतु है कैसे हैं गणपति गजबदन उज्ज्वल मस्तकमें सिंदूर लगायेहुये हैं पुनि देवता आदि देके पूजित हैं पुनि एकदांत चारभुज सुन्दर लम्बा उदर शोभित है पुनि आठ सिद्धि नव निद्धि अनेक प्रकार की बिद्यारूपी जो वर हैं तिनकरिके सोहै हैं ऐसे जो गणपति तिन के चरण कमल में कवि काशिराज सुखपाइके चित्तलगायो शिव पुत्रको नाम लेतही सम्पूर्ण बिघ्न तुरतही दूरभये १ ॥

श्लोकः ॥ विघ्नातिमिर चयतरणि र्धिषणिः सद्बुद्धिबिबिध रत्नानांभक्तेप्सित कल्पतरुर्गौरी पुत्रश्चिरंजयति २ ॥

टी०॥ यहमंगलाचरण है कवि गणपतिकी स्तुति करतुहै कैसे हैं गणपति बिघ्न तिमिर चयतरणिः विघ्न रूपी जो अन्धकार ताको चय नाम समूह ताके दूरकरिबेकूं सूर्य्य हैं विपणिः सद्बुद्धि विविध रत्नानां पुनि कैसे हैं भली जो बुद्धिनाम अनेक शास्त्ररूपी सोई हैं अनेक प्रकारके रत्न ताके विपणि हैं नाम बजार हैं पुनि भक्तेप्सित कल्पतरुः नाम भक्तजनका ईप्सितनाम वांछित ताके देबेकूं कल्पवृक्ष हैं पुनि ऐसे जो गौरी पुत्र गणेश हैं सो चिरन्नाम बहुतकाल पर्यंत जयतिनाम कल्याणकरररहैं उनकूं नमस्कारहै २॥

प्राकृतआर्या॥ जिस्सा संह्मरणेणप्या हादिसब्बंकरग अब अरंब अणाणां बिणाणं देन्ती साज अइवागीशा ३

टी० ॥ यह मंगलाचरण है ग्रन्थकर्त्ता कवि वाणी की स्तुति करतुहै जिस्सा नाम जस्या संह्मरणे ण नाम स्मरणेन जाके भजनकरिके प्याहादिनाम प्रभाति सब्बन्नाम सर्व करग अव अरंब्वनाम करगत वदरमिव प्रकाशमान होत है सम्पूर्ण वस्तु जैसे हाथ में बेरकेलिये तें कोऊ अंग बेरको छिपो नहीं रहतु तैसेही वाणीके स्मरणते कोऊ वस्तु छिपी नहीं रहतु है अस्माणांनाम अज्ञानां विस्माणंनाम विज्ञानं देन्तीनाम ददाति मूर्ख जो है तिनकूं शास्त्र ज्ञानदेति है सानाम सो जअइनाम जयति वागीशा सो सरस्वती सम्पूर्ण अधिकताकरिकै वर्तै हैं जिनके भजनकरने तें सम्पूर्ण वस्तु दीखै हैं मूर्खता दूरकरिकै ज्ञान देती हैं ऐसी जो वाणी हैं तिनकूं नमस्कार करूंहूं ३॥

छप्पै॥ उज्ज्वल भूषण वसन जयति बीणा पुस्तक कर। शुभ्र हंस आरूढ़ कंठ गत मुक्त मालवर॥ शेष सुरेश महेश चरण पंकज वंदत नित। मन बांछित फल लहत कहत जनवाणी धरि चित॥ कवि काशि राज अनुनय करै कुमति तिमिर तुमहीं हरौ। यह चित्र

चन्द्रिका ग्रन्थको जगत जननि पूरन करौ ॥ ४ ॥

टी० ॥ यह मंगलाचरण है कविवाणीकी स्तुतिकरतुहै कैसीहै वाणी जिनके ऊजरेगहना अरुवस्त्रहैं जयतिनाम अधिकताकरिकै सो हैं हैं पुनिवीन अरु पुस्तक करमें लिये है अरुउज्ज्वल हंस परचढ़ी है अरुकंठ में मोतिनकी माल श्रेष्ठहै पुनिशेष नागअरु इन्द्र अरु शिव जिनके चरणकमलकी पूजा नित्यकरतु हैं हेभक्त नरबाणी जू कों चित्तमें धरूं मनवांछित फललेहु ऐसे शास्त्रकहतु है तावानीसूंकबि काशिराज विनतीकरतुहै कहा विनती कि हमारी कुबुद्धिरूपी अंधकारको तुम दूरिकरौ अरुयह चित्र चन्द्रिका ग्रंथको हे जगतूमाता पूरणकरिदेहु ४ ॥

छप्पे ॥ चित्र समुद्र अगाध कोऊ कवि थाह न ल्यायो । मैं अतिहीं बुधि हीन कछुक ग्रंथन बल गायो ॥ अध ऊरध विनु विंदु विंदु युत एकहि जानो । रल डल सष बव यजहि सकल समता करि मानो ॥ अक्षर मोटे पातरे इनको दोष न देखिये । क्रम भंग होय नहिं चित्र को सो विचार उर लेखिये ५ ॥

टी० ॥ यह चित्ररूपी समुद्र अथाह है याकीथाह कोऊकबि ने नहीं पाई अरु मैं तो अतिही बुद्धिकरिकै न्यूनहूं परन्तु थोड़ो सो ग्रंथनके बलकरके कह्यो है चित्रकीरीति यह है कि अधविंदु नाम विसर्ग ऊर्ध्व विंदुनाम अनुस्वार इनकरिकै युक्तअक्षर अथवा इनकरिकै रहितअक्षर चित्रकाव्य में इनकूं एकही जानिये अरुरकार लकार डकार इन तीनन कूं एकजानो अरु सकार षकार शकार ये तीननकूं एकजानो अरु बकार वकार ये दोऊन कूं एकजानो अरु यकार जकार ये दोऊनकूं एकजानो अरु अक्षर मोटे पातरे नाम दीर्घअक्षरकूं लघु जिह्वासूं उच्चारण करिकै लघुमानिये याको दोष चित्र सैली में नहीं है जारीतिसोंचित्रको

निर्वाहहोय सो कीजिये चित्रकी रीति बिगरै सो न कीजिये ॥

अथचित्रलक्षणम् ॥ तोमर छं० ॥ अब शब्द चित्र बखानु । पुनि अर्थ चित्रहि जानु ॥ शंकर सुचित्रहि मानु। त्रयभेद चित्रहि आनु १ ॥

टी० ॥ अबशब्द चित्रको कहु पुनिअर्थ चित्रको जानो फिरि संकर चित्रसुन्दर को मानिये तीनभेदके चित्रआनिये १ ॥

अथशब्दचित्रलक्षणम् ॥ दो० ॥ वर्णस्थान स्वर गनो आकृतिगति पुनिबंध । चित्रभेद षट्जानिये वरणतकविकरिसंध ६ ॥

टी० ॥ वर्णचित्र अरु स्थानचित्र अरु स्वरचित्र अरु आकारचित्र अरु गतिचित्र अरु बंधचित्र यहछःप्रकारके चित्र कविकहतहैं करिसंध नाम प्रतिज्ञा करिकै नाम वर्ण प्रतिज्ञास्थान प्रतिज्ञा इत्यादिक जानिये ६ ॥

अथवर्णचित्रलक्षणम् ॥ दो०॥ इकव्यंजनतें चारिलगि स्वरव्यंजन सब भाखि । अरुसरिगम व्यंजन कह्यो ग्रन्थनमतरसचाखि ७ ॥

टी० ॥ इकव्यंजनतें चारि लगि नाम एक वर्णकाचित्र अथवा दो वर्णका अरु तीनवर्णका अरु चारवर्णतक अरुसर्वमात्रा अरु सर्ववर्णका एकचित्र कह्यो है अरु सरिगम पधनी इनसातवर्ण का एक चित्रकियो है आगे सूधो है ७ ॥

एकाक्षरलक्षणम् ॥ दो० ॥ एकी अक्षर को जहां कीजे छन्द सुबंध । सो इक व्यंजन कहतु हैं चित्र काव्यकी संध ८ ॥

टी० ॥ एक अक्षरको जहाँ छन्द कीजिये भलीरचना सूं ताकूं एक व्यंजन नाम चित्र कहतहैं चित्र काव्यकी यह प्रतिज्ञाहै ८ ॥

यथा ॥ दो० ॥ केकी केका कू कि कै काका कूकै को-
क । कंक काककी का कुकू काक काकके कोक ९ ॥

टी० ॥ यहां उद्दीपन विभावहै नायिका संयोगिनी अरुवियो-
गिनी इन दोउनको उद्दीपनकरतु है एक कूं दुःखरूपी एक कूं
सुखरूपी केकी नाम मयूर केका नाम मोरकी वाणी कूकिकै
नामबोलिकै का नाम कहा काकूकै नाम कहाकहै है कोक नाम
मैंडुक यहसखी प्रतिसखी को बचनरूपी प्रश्न तहां उत्तर कंक
नाम कोमल काकनाम संभोगको आरम्भकी नाम ताकी काकु
नाम ध्वनिविकार कूनाम पृथ्वी काकनाम क कहिये सुख अक
कहिये दुःखकाकनाम बादिकेनाम तिनको काकनाम कोकशास्त्र
या दोहाको भावार्थ यहहै कि मयूर अपनी बाणी बोलिकै कहा
कहैहै अरु कहाबोलै है मैडुक तहां यह उत्तर कोमल संभोगके
आरम्भके ध्वनिकी पृथ्वी है अर्थात् उत्पन्न करै है सुख वादिनी
संयोगिनी अरु दुखवादिनी विरहिनी तिनकूं कोकशास्त्र है नाम
कामोद्दीपनकरिकै सुख दुखको दाता है ९ ॥

अन्यच्च ॥ दो० ॥ नोने नैनी नैन ने नोने नुने ननून ।
नानानन ने नानु ने नाना नैना नून १० ॥

टी० ॥ यहां सखी की उक्ति नायकसूं नायिका परकीया की
रूपाधिकता वर्णन करैहै नायककूं श्रवणानुराग करावै है । नोने
नैनी नाम सुन्दर हैं नेत्र जाके नैन ने नाम ताके नेत्रने नोनाम
नूतन नैनाम नीति नुनेनाम बटोरे हैं ननून नाम ते घाटि नहीं
हैं नानानन नाम बहुत हैं आनन जाके ऐसे जो हैं ब्रह्मा नैनाम
तिनने नाम नहीं रचे सृष्टि में ऐसे अरु रचे हैं ते नानानाम नाना
प्रकारके नैनानाम नेत्र नून नाम हीनहैं उनते याको यहभावार्थ है
कि सुन्दर नेत्रवालीके नेत्रने अपूर्व कटाक्ष ऐसे बटोरे हैं किलघु
नहीं हैं अरुब्रह्माकी सृष्टिमें ऐसेकटाक्षकाहूं नेत्रमेंनाहींदेखे१० ॥

द्व्यक्षरलक्षणम् ॥ दो० ॥ इक इक व्यंजन द्वै अधर

पुनियुग व्यंजन छन्द । यहयुग व्यंजन चित्रहै बरणत बुद्धि अमन्द ११ ॥

टी० ॥ आधो छन्द एक अक्षरको अरु आधो छन्द दूसरे अक्षरको एक जाति द्विव्यंजन चित्र की यह है अरु द्वै अक्षर मिलाइकै छन्द कीजिये ताकूं दूसरी जाति कहत हैं जिन कविन की बुद्धि नहीं मन्द है ते ११ ॥

यथा॥ दो० ॥ तूँती तातत त ततैं तोते ताते तत । लालो लीला लै लली ललो लाल ले लल्ल १२ ॥

टी० ॥ यह सखीका वचन नायिका मानिनी सूंमान मोचन करायबे में तूँती नाम तुम तिया तात नाम गरम त नाम युद्ध ततंनाम विस्तर तैं नाम तूने तोते नाम तोसों ताते नाम ता नायकसूं तत नाम तत्त्व लालो नाम लालसा लीला नाम विलास लै नाम लीनता लली नाम हे लाडिली नायिका ललो नाम रलयो ऐक्यं नाम रलो अर्थात् मिलो लाल नाम श्रीकृष्ण ले नाम लेहु लल्ल नाम प्रयोजन या दोहाको भावार्थ यह है कि तूँ तो तियहै नाम तियमें थोडी बुद्धि होति है यातें गरम युद्ध फैलायो तैंने तोसों अरु नायकसूं तो तत्त्व है नाम एकताही है याते हे लाडिली बिलास की लालसामें लीन ह्वैके लालसों मिलो अरु लेहु अपने मनोबाञ्छित फल कों १२ ॥

द्वितीयो ॥ यथा दो० ॥ हरि हर हर हरि हेरि ही ररि ररि रूरैं रोहि । हारि हारि रहि राहहीं हरें हार हरि होहि १३ ॥

टी० ॥ यहां मनस उक्तिप्राणीके हेहियनाम हेमनहरि जो विष्णु तिनकूं हरनाम महादेवरूप हेरिनाम देखु अरुमहादेवको विष्णु रूपी देखु अर्थात् देखिके ररि ररि नाम रटि रटिके रूरैं नामभल भांति सों रोहिनाम चढि या कीर्तन मार्गमें अरु हारिहारि रहि एहहींनाम थकि थकिके रहो या याही राहमें तौहरैंनाम सहज

हार हरिहोहि अर्थात् विष्णुतेरेहारहोयँगेनामहृदयबासकरैंगे १३॥

त्र्यक्षरलक्षण ॥ दो० ॥ तीनि वर्णको नियम करि रचिये छन्द सुजान । सो त्रिव्यंजन चित्रहै कहत सुकवि परधान १४ ॥

टी० ॥ जाछन्द में तीनहीं वर्णको प्रयोग कीजिये ताकूं त्रिव्यंजनचित्र कहतहैं जेकबिनमें श्रेष्ठहैं १४ ॥

यथा ॥ दो० ॥ तरल लताते ती ललित रत तर लाला लोल । रूरी लीलाते रलो तू राती रति तोल १५ ॥

टी० ॥ यहांदूती की उक्तिनायकासूं नायकसूं मिलाप प्रगट करायो चाहति है हेतिया तरललताततेी ललित नाम चंचल बेली हूंते तू सुन्दर है अरु रततर लाला लोल नाम अनुराग में अत्यन्त करिकै रँगहै अरु याहीते श्रीकृष्णचंचलहैतासूं रूरीलीला तें रलो नाम भले विलाससोंमिलो नायकसों अरुतू राती रति तोल नाम कामदेवकी स्त्री के तुल्यता करिके तूहूं रंगी है यहां अनुराग लखिके दूतीपरकीयाकी सकुच छुटावै है तातें अनुराग लक्षिता परकीया है १५ ॥

चतुर्व्यंजनलक्षणं ॥ दो० ॥ इक इक व्यंजन प्रति चरण जहाँ वरणिये । मित्र चतुरक्षर सो जानिये अति अद्भुत यह चित्र १६ ॥

टी० ॥ एकवर्ण का एकचरण या रीति सों चारि वर्णके चारि चरणजहां रचिये ताको चतुर्व्यंजन चित्र कहत हैं १६ ॥

यथा ॥ दो० ॥ लोल लाल लोलै लली नोने नोने नोन । रूरे रूरे ररि ररैं जोजे जीजे जोज १७ ॥

टी० ॥ यहां सखीको बचन सखीसूं लोलनाम चंचल लाल नाम श्रीकृष्ण लोलैनाम चंचलही ललीनाम नायिका नोने नोने नाम सुन्दर सुन्दर नोननाम नुनाई रूरे रूरे नाम चोखे चोखे ररि

नाम रत्नयो रैक्यं अर्थात् रलिकेनाम मिलिके ररैं नाम बातैं करैं हैं जो जेनाम मिलाये जी नाम जिय जेनाम जय जोजनाम जोजना याको भावार्थ यह है कि चंचलल्लाला अरु चंचलही लाली है अरु लावण्यता दुहून सुन्दर सुन्दर हैं सो भले भले प्रकारसूं मिलिके बातैं करतहैं सो हे सखी मुग्धनायक मुग्धानायिका जोजे नाम मिलाये दुहूनकूंहमने अब जियमेंजयको जोउ अर्थात् हे सखीतुमप्रसन्न होहु यहबड़ोई कार्य भयो कि दोऊमिले १७ ॥

सर्बव्यंजनलक्षण ॥ दो० ॥ एक छन्द में सब चरण अरु सब मात्रा होइ । सब व्यंजन चित्र यह कहत सयाने लोइ १८ ॥

टी० ॥ जहांएकईछन्दमें सम्पूर्ण अक्षर अरुसंपूर्ण मात्राहोयँ ताकूं सर्व व्यंजन चित्र चतुर लोग कहत हैं १८ ॥

यथा ॥ कुंडलिका ॥ केकी खग घन लखि नच्चे छाजें भिल्ली बैन । तट ठठि ढिढ़ चढ़ि गण नदी तत्थ उदधि रहि ऐन ॥ तत्थ उदधि रहि ऐन ढपे फाबि भूमग सगरे । जाय रले बरतियनि पथिक नर परिहरि दगरे ॥ आशिष सहित हुलास लही बिरहिन हियरे की । ओरे ओप अमंद भई जब कूके केकी १९ ॥

यहांसखीको बचनसखीसूं बर्षाऋतुमें आगत पतिकाके आनन्दको बर्णन करतिहै मयूरपक्षी बादर लखिकै नाचनलगे अरु शोभित भये भींगरके शब्द अरुकरारेनसों ठठिनाम मढढि के चढ़तभये नदीनके समूह अरु समुद्र अपने ऐननाम मर्यादा में तत्थ नाम यथास्थित रहे अरु छिपे सुहावने पृथ्वीके रस्ता सिगरे याते जाइके मिले श्रेष्ठ तियानिसों बटोही लोग छोडि के रस्ताको अरु तब आशिष सहित नाम मनोरथ सहित आनन्द पायो विरहिनी नायकानिने अपने हृदयको अरु औरही नाम

अपूर्वशोभा अधिक भई जब बोले मोर अर्थात् आलंबनविभाव समय में उद्दीपन विभाव भये यातें शोभा अधिक भई १९ ॥

स्वरव्यंजनलक्षणम् ॥ दो० ॥ जहँ सरिगमके वर्ण सों रचिये छन्द प्रवीन । सो स्वर व्यंजन चित्रहै कह्यो ग्रंथ रस लीन २० ॥

टी० ॥ जहां सरिगम पधनी इनहीं सातवर्णसों छन्द रचिये ताको स्वर व्यंजन चित्र कहत हैं जो रस ग्रन्थन में लीन हैं २० ॥

यथा ॥ क० ॥ सारससे नैन रस सैननि सरसनिधि गिरागुण ग्राम धनि धनि सुमधुरिमा । राग रागिनीन रंग मूरिमें रँगीसी धुनि सुनि सुनि धाम धाम रमीगान पुरिमा॥परम नरम रानी सानुराग पीपरसि सम गम मन सानि रोपो रूप रूरिमा। रास समो साधि राधे माननमिमानु मानु मेरो पन पूरि मेरी पैनी मैनमुरिमा २१॥

टी० ॥ यह सखीको बचन राधिकासों मान मोचन करायबे में सारसनाम कमलसे नेत्र अरु रसरूपी कटाक्षनमें सरसनाम अधिक ताके निधि नाम समूहहैं अरु गिरानाम वाणी ताके गुण के स्थानहैं धन्यधन्य है तुम्हारी सुन्दर मधुरताई राग रागिनीन के रंगकी जड़में रँगिरही है धुनि ताशब्दको सुनिसुनिके गेहगेहमें रमिके पूरित ह्वैरही है तुम्हारी गायबे की मा नाम लक्ष्मी परम नाम उत्कृष्ट अरु नरमनाम क्रीड़ामें प्रवीन है हे रानी सानुराग नाम अनुराग सहित पीतमको परसु समगम नाम हिलिमिलि के चित्तसों सानिनाम लिपटि के रोपो नाम आरोपितकरो आपने रूपकी रूरिमा नाम चोखी शोभा हे राधिका आज रासको समयो साधि नाम सम्हारु मानको नवायिके मानिले मानिले मेरी प्रतिज्ञाको पूरणकरु तू मेरी है याते तोसों कहतिहूं अरु पैनी नाम चोखीहै तू कामके मरोड़के बीचमें अर्थात् ऐसी रूपवतीहैके अरु

गान विद्या में प्रवीन है के तू मान करती है यह योग्य नहीं है याते रासमयमें श्रीकृष्णते मिलु यहनायका प्रौढ़ा २१ ॥

इतिश्रीमत्काशिराजाविरचितचित्रचन्द्रिकायांवर्ण चित्रवर्णनोनामप्रथमप्रकाशः १ ॥

अथस्थानचित्रलक्षण ॥ दो० ॥ निष्कंठहिको आदि दै पंच स्थानी चित्र । इकइक थानी पुनि कह्यो समुझि लीजियो मित्र १ ॥

टी० ॥ निष्कंठ्य निस्तालव्य निर्मूर्द्धन्य निर्दंत्य निरोष्ठ ये पांच चित्र जानिये अरु एक एक स्थानीय नामकंठस्थानी तालुस्थानी मूर्द्धस्थानी दंतस्थानी ओष्ठस्थानी अरु पांच चित्र ये जानिये मित्र १ ॥

निष्कंठ्यलक्षणम् ॥ दो० ॥ अह कवर्गको छाड़िये अरु सब मात्रा त्यागि । ई ऊ ऋ सों छन्द रचि यह निष्कंठहि लागि २ ॥

टी० ॥ अकार हकार अरु क ख ग घ ङ इन अक्षरनको छोड़िके अरु सब मात्रानिको छोड़िके अरु इकार उकार ऋकार ये तीन मात्रानिसों जहां छन्द रचिये यह निष्कंठ्य की लागि है नामसंकेत है २ ॥

यथा ॥ दो० ॥ श्रीपीप्रीति सुरीतसी निधि विधिवृद्धि सुबुद्धि । रूरी नीति सु भूरि भू सुमिरीजीशुचिशुद्धि३॥

टी० ॥ यहां अपने जीव सों प्राणी की उक्ति यह है कि श्रीपी नामलक्ष्मीके पति नारायण तिनकी प्रीति नाम प्रसन्नता सो कैसी है सुरीतिसी नाम सुंदर रीतिकी श्री है अरु नवो निधि अरु विधि नाम कर्मकांड इनकी वृद्धिकरै है अरु सुन्दर बुद्धि की वृद्धि करै है अरु चोखी नीति अरु सुभूरिभू नाम सुन्दर जो बहुत जो भूमि ताहूकी दैनवारी है ऐसे शास्त्र में सुमिरी नाम

कही है जी नाम हे जीव शुचि शुद्धि नाम पवित्र शुद्धता अर्थात् मोक्ष परिणाम में ताहूकी दाता है भगवत् कृपा ३ ॥

निस्तालव्यलक्षणम् ॥ दो० ॥ इशयच वर्गहि छोड़िये ई मत्ता मति देहु । निस्तालव्य सुचित्र यह कवि पंडित लखिलेहु ४ ॥

टी० ॥ इकार शकार यकार अरु च छ ज झ ञ अरु इकार की मात्रा इन वर्ण मात्रानको छोड़िके जहां छन्द रचिये ताको निस्तालव्य चित्र कहते हैं ४ ॥

यथा ॥ दो० ॥ कमल बदन तेरो सरस मुख मूंदे कस बाल । खोलो घूँघट अरुलखौ कर बांधे नँदलाल ५ ॥

टी० ॥ यहां सखीको वचन मानिनी सों मान मोचन करायबेमें हेबाल कमलसो मुखतिहारो रस करिके सहित है तामुख को कैसे मूँदिरही है घूँघट पटको खोलिके देखो करजोरेनँदलाल तिहारे सन्मुख हैं याते मान छोड़िके इनको आदरकरो ५ ॥

निर्मूर्द्धन्यलक्षणम् ॥ दो० ॥ ऋषर टवर्गहि छाड़िके रचिये छन्द सुजान । निर्मूर्द्धन्य सुचित्र कहि ग्रंथन मत अनुमान ६ ॥

टी० ॥ ऋकार षकार रकार अरु ट ठ ड ढ ण इन वर्णनको छोड़िके जहाँ छन्द रचिये ताको निर्मूर्द्धन्य चित्र कहिये ६ ॥

यथा ॥ दो० ॥ पीतम जब अनुनय कियो तब नहिं मान्यो बाल । कोप मुधा मोपै कियो तैं न मनायेलाल ७ ॥

टी० ॥ यह नायका कलहांतारिता तासों अन्तरंग सखी को उक्ति यह है कि पीतम ने जब अनुनय कियो नाम बिनती करी तब तैंने नहीं मान्यो हे बाल अब मोपै क्रोध मुधानाम वृथा करै है कि तैंने लालको मनायो यह हे बाल तूने मनायो नहीं अरु मेरे मनाये लाल कैसे मानैं ७ ॥

निर्दत्यलक्षणम् ॥ दो० ॥ लसल तवर्गहि त्यागिके छन्द रचो सुख पाय । निर्दती यह चित्र है काशिराज कवि गाय ८ ॥

टी० ॥ लकार सकार लकार अरु त थ द ध न इनअक्षरनको छोंड़िके जहाँ छंदरचिये ताकोनिर्दन्त्य चित्रकहतहैं कविकाशिराज८॥

यथा ॥ दो० ॥ कछु उमगे उरमें उरज बाक मिठाई आव । चाहि अभी ब्रजराजजी परमा वाकोभाव ९ ॥

टी० ॥ यह अज्ञात यौवना नायका है सखी की उक्ति नायक सों यह है कि अभी थोड़े हृदयमें कुच उकसे हैं अरु कछुक वचन के बीचमें मधुरता आई है हे ब्रजराजजी वा नायका की परमा नाम उत्कृष्ट शोभा ताको जो भाव है नाम छटा ताको चाही अब नाम देखो अब ९ ॥

निरोष्ठलक्षणम् ॥ दो० ॥ जहां उकारपवर्गको छाँड़ि कीजियत छन्द । उमता नाहीं दीजिये सो निरोष्ठ रस कन्द १० ॥

टी० ॥ उकार अरु प फ ब भ म अरु बकार वकार एकही हैं अरु ऊ की मात्रा इन वरण मात्रा छोंड़िके जहांछन्दरचियेताको निरोष्ठचित्रकहतहैं कैसो है यहचित्ररसकोकन्दहै नाममूलहै १०॥

यथा ॥ क० ॥ कनकलजात तन आननते चंद्र कांति ललित चखन कंज खंजरीट हीनहै । लालकी ललाई नहीं आदरी अधर रंग कीर नासिका ते हारि कानन लीनहै ॥ तड़ित सरस हास लसत दशन राजि दरी अनारदाने देखियत दीन है । कहि काशी राज अधिक सजी है राधा आनंद अगाधा लखे लाल अधीन है ११ ॥

टी० ॥ सखीका वचन सखी सों यह नायका स्वाधीन पतिका ताको रूप बर्णन करति है सखी सुबर्ण जाके तनके रंग ते लज्जित होतुहै अरु मुख ते चन्द्रमा की कांति लज्जित होत है ललित नाम सुन्दर नेत्रनते कमल अरु खंजन तुच्छ हैं एकरूप करके एक एक चंचलता करके अरु लालमणिकी अरुणाई को नहीं आदर कीनों ओष्ठके रंगने अरु तोता नासिकाते हारिमानि के वचनमें लीनहै अर्थात् वनन में बासकरै है अरु तड़ित नाम बिजुली तें सरस हासनाम अधिक द्युति हँसीमें है तामें शोभित जो दन्तन की राजिनाम पंक्ति ताको देखिके फटे जो अनार अर्थात् दन्तन की समता करिबे लिये तबदीखे जो अनारके दाने ते तुच्छदीखे कहै कविकाशीराज आजके दिवसअधिक ता करके सजीहै राधा अरु आनन्दअगाधानामअथाहहै आनन्दजामें ऐसी जोराधा तिन्हैंदेखिके श्रीकृष्णजी अधीननामआशक्तभयेहैं ११॥

कंठस्थानीयलक्षणम् ॥ दो०॥ अह कवर्गकेवर्णते छन्दरचो निरधारि । अवर्ण मात्रादीजिये कंठस्थानि विचारि १२ ॥

टी० ॥ अकार हकार अरु क ख ग घ इनअक्षरनहीं ते जहां छन्दरचिये अरु अकार आकार अरु अनुस्वार यहीमात्रा दीजिये ताको कण्ठस्थानीय चित्र जानिये १२ ॥

यथा ॥ चौ० ॥ कंक काक खग अघहा गंगा । गाह गाह अक गाहक अंगा १३ ॥

टी० ॥ मनते प्राणीकी उक्ति कंकनाम ढेंक पक्षी काकनाम कौआ ऐसे जो अधम खग हैं तिनहूंकी अघहा नाम अघ पाप ताकी दूर करनहारि हैं श्री गंगाजी यातें हे मन तू गाहगाह नाम न्हाउ न्हाउ अक नाम दुःख ताको गाहक नामग्रहण करनवारो है यह अंगा नाम शरीर अर्थात् अधम पक्षी आदिक गंगा स्पर्श ते तरै हैं तो यह अंग क्यों न तरैगो याते स्नान करु १३ ॥

तालुस्थानीयलक्षणम् ॥ दो०॥ इश यच वर्गन ते रचो छन्द जहां सुख धाम । तालुस्थानी चित्र यह वरणत कवि गुण ग्राम १४ ॥

टी० ॥ इकार शकार यकार अरु च छ ज झ इन अक्षरनते जहाँ छन्द रचिये ताको तालुस्थानी चित्र कहत हैं जे कवि गुण के ग्राम हैं १४ ॥

यथा ॥ चौ० ॥ झाझी झाझ जुझाई छाजे । चाय चाय जय जाची जाजे १५ ॥

टी० ॥ यहाँ युद्धको वर्णन यह है कि झाझी नाम झाँझ के बजावनेहारे झाँझ बाजा जुझाई नाम मारू बजाते छाजे नाम सोहे अरु तासमय चाय चाय नाम चाहिचाहिके जय जाचीनाम जीतके याँचनेवारे शूरबीर जाजेनाम युद्ध करतेभये १५ ॥

मूर्द्धस्थानीलक्षणम् ॥ दो०॥ ऋषरटवर्गनतेजहांकीजे छन्दविचार । मूर्द्धस्थानी चित्रसो ग्रंथनमतअनुसार १६

टी० ॥ ऋकार षकार रकार अरु ट ठ ड ढ ण इन वर्णनते जहाँ छन्द रचिये ताको मूर्द्धस्थानी चित्र जानिये ग्रन्थ मतके अनुसारते १६ ॥

यथा ॥ चौ० ॥ रण रूरे रट ढाढ़ी राटे । रणी ढीठ ठाढ़े रण डाटे १७ ॥

टी० ॥ यहाँ युद्धको वर्णन यह है कि रणरूरे रट नाम युद्धके चोखे रटनाम कड़खा ढाढी राटे नाम ठाढी पुकारत भये तहाँ रणी ढीठ नाम युद्धमें जो ढीठ हैं शूरते ठाढ़े नाम जमिकै रणनाम संग्राम ताको डाटे नाम रोकत भये १७ ॥

दंतस्थानीलक्षणम् ॥ दो०॥ लृसल तवर्गनते जहां छन्दरचैं कवि लोग । दंतस्थानी चित्रको जानि लेहु यह योग १८ ॥

टी० ॥ ल्रकार सकार लकार अरु त थ द ध न इन वर्णनते जहाँ छन्द रचै हैं कविलोग तहाँ दन्तस्थानी चित्र जानिये या चित्र को यह योग है १८ ॥

यथा ॥ दो० ॥ ततनिधानताननितनैं ललितललित दे ताल । सुनिसुनि नततनसे लसत नूतननोनेलाल १९ ॥

टी० ॥ यहाँ सखीको वचन सखीसों यह नायका प्रौढाके बीन बजायबेको वर्णन करति है तत नाम बीणा बाजो ताकी निधान नाम जाननेवाली नायका ताननि तनैं नाम अनेक तानन को विस्तरै है ललित ललित नाम सुन्दर सुन्दरदे ताल नाम ताल देके अरु इन तानन को सुनि सुनिके नत तन से नाम नम्रतन से अर्थात् वशीभूत से भये हैं नवीन जो सुन्दरलालहैं ते १९ ॥

ओष्ठस्थानीलक्षणम् ॥ दो० ॥ जहां पवर्ग उकारते छन्द बनावो मित्र । ओष्ठस्थानी जानिये परम सुखद यह चित्र २० ॥

टी० ॥ प फ ब भ म अरु उकार इनअक्षरनते छन्द बनावो हेमित्र सो ओष्ठस्थानी चित्रजानिये यहपरम सुखदाताहै २० ॥

यथा ॥ चौ० ॥ माभा उपमामें फविबामा । उमा पाप पवि भूमि बिभामा २१ ॥

टी० ॥ यहां पार्वती को वर्णनहै कैसी हैं पार्वती कि मा नाम लक्ष्मी भा नाम कांति उपमा में नाम सादृश्य में फवि नाम सोहै हैं बामा नाम सुन्दरी उमा नाम पार्वती पाप नाम पातक पवि नाम बज्र भूमि नाम पृथ्वी विभामा नाम क्रोधरहित याको भावार्थ यहहै कि सुन्दरी पार्वती जो सोकांतिकरके लक्ष्मीजीकी उपमा में सोहै हैं अरु पृथ्वी में पाप दूर करिवे को बज्र हैं अरु निष्क्रोध हैं नाम दयालु हैं २१ ॥

इतिश्रीमच्छत्रकाशिराजविरचितचित्रचन्द्रिकायां स्थानचित्रवर्णननामद्वितीयप्रकाशः २ ॥

अथस्वरचित्रलक्षणम् ॥ दो० ॥ गुरु लघुमात्राभेद करि रचिये छन्द प्रवीन । अति विचित्र स्वर चित्र यह कहत रसिक रस लीन १ ॥

टी० ॥ जहां गुरु लघु इन मात्रनके भेद करके छन्द रचिये एक छन्दमें सर्व गुरुमात्रा अथवा एक छन्दमें सर्व लघु मात्रा ताको स्वर चित्र कहत हैं जे कवि रसमें लीन हैं १ ॥

तत्रसर्वगुरुस्वरचित्रम् । यथा ॥ चौ० ॥ राधा देखें रामा ऐसी । चन्दा आगे तारा जैसी २ ॥

टी० ॥ यहां सखीका वचन सखी सों अथवा सखीका वचन नायक सों राधिका के रूपाधिक्य वर्णन में राधिका के देखतें और जो रामा हैं नायका सो ऐसी होय जाति हैं जैसे चन्द्रमाके आगे तारा होय जाति हैं २ ॥

द्वितीयंसर्वलघुस्वरचित्रम् । यथा । क० ॥ शशि रुचि मलिन ललित मुख निरखत नलिन नयनसरवर नहि दरसिय । हसित लसित द्युति तड़ित दलित छबि मधुर अधिक रस अधर सुसरसिय ॥ उदित उरज वर कमल मुकुल सम तनुरुह अवलि उदर सर परसिय । चलहु ललन नव मिलन समय अब वचन अमृत मय तिय कछु बरसिय ३ ॥

टी० ॥ यह सखी का वचन नायकसों यह नायका विश्रब्ध नवोढा ताको रूपाधिक्य वर्णनकरै है कैसी है नायका जाको सुन्दर मुख देखतही चन्द्रमाकी कांति मलीन होति है अरु नेत्रके बराबरीको नलिन नाम कमल तेनदेखे अरु हँसबेमें जो कांति लसै है ताकरिके बिजुलीको प्रकाश मन्दहोजाय है अरु ओष्ठमें मिठाई हूते अधिक रस बहुत है अरु उदित नाम प्रकाश भये जो उरमें कुचनके अंकुर सो श्रेष्ठ कमलके मुकुल नाम कलीके बराबर हैं

अरु तनु रूह अवलि नाम रोमावली उदरसर नाम नाभि ताको स्पर्शकरति है अर्थात् तारुण्यता आई चलो हे नव लाल अब मिलापको समयो है या समयमें अमृतमय बाणी कछुकनायका बोली है अर्थात् हाँ कियोहै सो अबदेरनकीजिये चलिये हेलाल ३ ॥

निर्मात्रिकलक्षणम् ॥ दो० ॥ युत अकार सबवर्ण जहँ औरन मात्रा कोइ । वरणत काशीराज कवि निर्मात्रिक है सोइ ४ ॥

टी० ॥ जहां अकार युत सबवर्ण होयँ अर्थात् छुटे अक्षरहोयँ कोई मात्रा लगीनहोय सो निर्मात्रिक चित्र जानिये ४ ॥

यथा ॥ क० ॥ कनक लजत तन अमल बसन सज बदन कमल बर कचन सघन घन । मलन करत कर रदन चमक पर बचन सरस मन बसत अतन तन ॥ नयन सयन शर गमन लसत गज चरण नरम छद सरग फवन वन । रमत गहन वन चलत न धव अब तरल लखत पथ कहत अपन पन ५ ॥

टी० ॥ यहाँ सखीको वचन नायकसों नायिकाका रूपाधिक्य वर्णन करिके नायककूं लेजायोचाहत है यह नायकापर किया वासक शय्याकैसी है कि सुवर्ण लजात है जाकेतनसों अरु तन यहाँ देहरी दीपक न्याय है जैसे चौखट के दीपक सो भीतर अरु बाहरहू प्रकाश करै है तैसेही तन शब्द जो है सो पूर्वपदमें भी लगैहै अरु पर पद में भी लगै है अरु तन में निर्मल वस्त्र की है सज अरु मुख कमल ते श्रेष्ठ है अरु केशके बराबरी को नहीं है सघन घन अर्थात् श्यामघटा अरु मलिन करतु है किरण को दांतनके चमकके ऊपर अरु बोलनि जाकी रस करिके सहितहै अरु मनमें वासकरत है अतनतन नाम कामदेव अरु नेत्र के कटाक्ष शर नामबाण सदृश हैं अरु चलनि सोहत है गजकीसी

अरु चरण नरम छद नाम कोमल पत्र से पुनि सरग नाम रंग सहित हैं ताकी छवि बनी रही है सो नायका रमिरही है सघन बनमें अर्थात् इस समय वहां बैठी है चलिये क्यों नहीं हे भव नाम हे प्रिय अब शीघ्रही देखि रही है तुम्हारी राह यह बात मैं कहूं हूं अपनपन नाम अपनी प्रतिज्ञा करिके अरु द्वितीय अर्थ अपन पन नाम अपनो समझिके ऐसो समयो फेरि न मिलैगो यातें चलिये बनमेंबैठिके पथको देखैहै याते परकीया जानिये५॥

इतिश्रीमत्काशिराजाविरचितचित्रचन्द्रिकायां स्वरचित्रवर्णनंनामतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

अथआकारचित्र ॥

अथआकारबंधभेदकथनंतत्रप्रश्नः ॥ दो० ॥ आकृति बंध बिभेद तें कहे चित्र द्वै रीति । तिनके लखियत रूप सम कहौ भेद करि नीति १ ॥

टी० ॥ आकार चित्र अरु बन्ध चित्र ये दोऊ चित्र एकरूप हैं तिनको जुदे करके दो रीति सों कहे तिनको कहा भेद है १ ॥

अन्यच्च ॥ दो० ॥ जो आकार सुबंधहै बंधसुहै आकार । द्वै प्रकार कैसे बनें कवि कुल करौ बिचार २ ॥

टी० ॥ जो रूप आकार को है सोई रूप बन्ध को है अरु जो रूप बन्ध को सो आकार को है याते दोभेद काहेकोकिये एकही भेद करयो चाहिये याको विचार करिके कहो २ ॥

तत्रउत्तरं ॥ दो० ॥ जो आकृत बिधिने रची ताही क्रम अनुसार। न्यास वर्णकोकीजिये सोजानोआकार३॥

टी० ॥ जैसो आकार ब्रह्मा ने रच्यो है उत्पत्तिमें ताही रीति सों अक्षरन को धरिये अर्थात् वाही रीतिसों पढिवो बने सो आकार चित्र जानिये ३ ॥

आकारकोउदाहरण । यथा । दो० ॥ विधि कृत वारिज में लखो प्रथम कोश पुनि पात । त्योंही पढ़िये वर्ण तहँ यह आकृति अवदात ४ ॥

टी० ॥ ब्रह्माके रचे जो कमल हैं तिनको उत्पत्ति क्रम यह है कि प्रथम कोश उत्पन्न होत हैं पुनि पत्र उत्पन्न होत हैं ताही क्रम ते प्रथमकोश में वर्ण धरिये पुनि पत्रमें पुनि कोश पुनि पत्र ऐसे जहां अक्षर पढ़िये सो आकार चित्र जानिये ४ ॥

बंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ या क्रमको तजि बुद्धिबल कीजे और प्रकार । वर्ण न्यास जा चित्रमें सोई बंध बिचार ५ ॥

टी० ॥ जो रीति प्रथम वर्णन करिआये हैं तारीतिको छोड़िके जहाँ बुद्धिके बल ते और रीति ते अक्षर धरिये ताको बंध चित्र कहत हैं ५ ॥

बंधकोउदाहरण । यथा । दो० ॥ जहां पत्रते कोश में वर्ण पाठकी रीति । पद्म चित्र सो बंधहै सु कवि विवक्षा नीति ६ ॥

टी० ॥ जहाँ अक्षर प्रथम पत्रमें धरिये पुनि कोशमें धरिये पुनिपत्र पुनिकोश यां रीतिते जोकमलचित्र कीजिये ताकोकमल बंध जानिये यह कबिकी इच्छाके आधीन है जैसो कबिन चाह्यो तिहि रीतिसूं कविने अक्षर धरचो याते बंध चित्र जानिये अरु ब्रह्माकी सृष्टिकी रीति करिके जहाँवनाइये ताको आकार चित्र जानिये ६ ॥

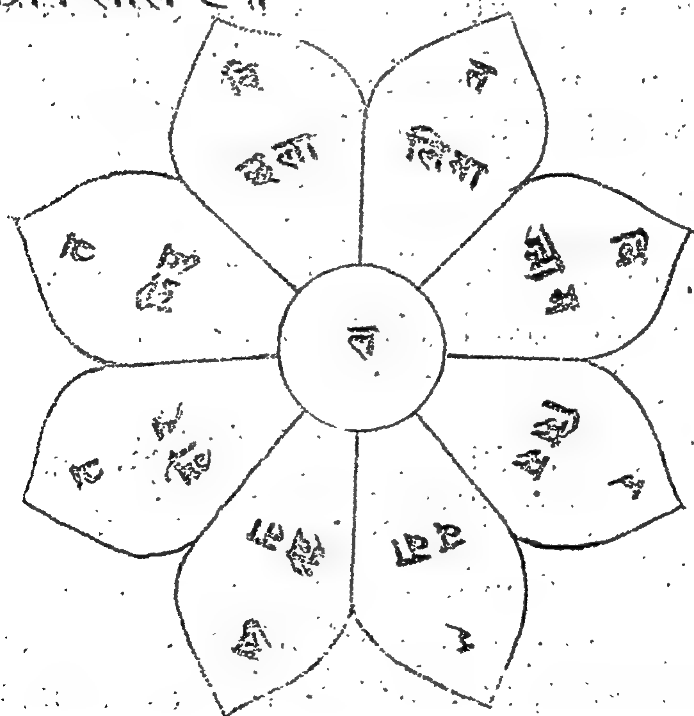
दो० ॥ इहि विधि औरो जानिये आकृत बंध बिचार । काशिराज वर्णन कियो ग्रंथनकी अनुसार ७ ॥

टी० ॥ याही रीति ते औरहू आकार बंधको भेद जानिये यह काशीराज कबिने ग्रंथनकी रीति करिके कह्योहै ७ ॥

अष्टदलकमलाकारलक्षणम् ॥ दो० ॥ षोड़श वर्ण कुं एक करि धरो कोश में मित्र । त्रय त्रय वर्ण जु पत्र में कमल अष्ट दल चित्र ८ ॥

टी० ॥ या अष्टदल कमलाकार चित्रमें सोरहबार कोशको अक्षर आदि अरु अन्त करिकै पढ़िये पत्रनके तीन तीन वर्णको मध्यमें देके सो कमलाकार जानिये ८ ॥

यथा ॥ दो० ॥ ललित माल लज्जा बिमल लसिर सलल बर बाल । लखै सुताल लहो तरल लजित पलल छबि लाल ९ ॥



टी ०॥ यह नायका स्वकीया प्रौढ़ा जल क्रीड़ा के सन्मुख ह्वै रही है ता समय में सखी नायक सों नायका को रूपाधिक्य वर्णन करिके लेजायो चाहतिहै ललित माल नाम शोभित है माला जाकी अरु लज्जा विमल नाम जामें लज्जा निर्मल है अरु लसिर सलल नाम शोभित है रसको बिलास जामें

ऐसी जो श्रेष्ठ बाल है सो लखै है तलाबको लहो तरल नाम ताको शीघ्रही प्राप्त होब लजित नाम लजाइ रही है पलल नाम कमल की छबि हे लाल याते चलिये ९ ॥

कदलीवृक्षाकारलक्षणम् ॥ दो० ॥ जड़तेपढ़िये स्तंभ लौं ग्रंथि पत्र पुनि ग्रंथ । ग्रंथि पत्र पढ़ि शिखरलों कदली आकृत पंथ १० ॥

टी० ॥ प्रथम जड़के अक्षर पढ़िके पुनि स्तम्भके अक्षर पढ़िये पुनि पत्रनकी जो गांठि है तामें को अक्षर पढ़िये पुनि दक्षिण पत्र पढ़िये ग्रन्थ ग्रन्थ पढ़िये पुनि बामपत्र पढ़िये पुनि ग्रंथ पढ़िये पुनि दक्षिण पत्र पुनि बामपत्र अन्त मेंशिखरकापत्र पढ़िये यह कदली वृक्षाकार को लक्षण है १०॥

यथा ॥ दो० ॥ लसत इंदु तें अधिक मुखपरम अमल वह बाल । लखो सुताल लह्यो तरल लजित पलल छबिलाल ११ ॥

टी० ॥ यह नायका लक्षिता है अरु नायकहू लक्षित है तहां सखीको वचन सखी सों यह है कि शोभित है इंदु ते अधिक मुख जाको ऐसी उत्कृष्ट निर्मल वह बाल है हे सखी देखो तुम सुनामसों नायकाने तलाबको लह्योनामप्राप्तभई अरुतरलनाम चञ्चल है लाल अरु लज्जित है पलल नाम कमल की छबि जासों ऐसे जो लालहैं तेऊ सरोवरके तटपै पहुंचेहैं लह्योसुताल यहपद दुहूंओर लगे है ११ ॥

इतिश्रीमत्काशिराजबिरचितचित्रचन्द्रिकायांआकार चित्रवर्णनंनामचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

कदलीवृक्षाकार चित्रम्।

अथगतिचित्रम ॥

अथगतिचित्रलक्षणम् ॥दो०॥व्यस्त समस्तगता

गतहि और अश्व गति जानि । इहि विधि रचिये छन्द जहँ सो गति चित्र बखानि १ ॥

टी० ॥ व्यस्त नाम खंड खंड करिके गतागत समस्त नाम सम्पूर्ण करिके गतागत अरु घोड़ाकी गतिसों जहां छन्दरचिये ताकों गति चित्रकहत हैं १ ॥

तत्रपादानुपादगतागतलक्षणम् ॥ दो० ॥ सुलटे उलटे पाठसों अर्द्ध पादतेपाद । जहां पाद अनुपाद सो जानो विना विवाद २ ॥

दो० ॥ अष्ट बार पढ़ि ग्रंथिको आदि अंत्य में मित्र । अर्द्धपादकी लिपि करो सो स्वस्तिक गति चित्र ३ ॥

टी० ॥ जहाँ आधे चरण को सूधो पढ़िये वाहि चरणको उलटो पढ़िये तब एक चरणहोय या रीतिते जहाँ चार चरण कीजिये ताकों पादानुपाद गता गत चित्र जानिये याही चित्रको स्वस्तिक गति चित्र कहतहैं आठ बार मध्य ग्रंथिके अक्षरों को प्रति चरणके आदि अंत्यमें पढ़िये चारों दिशामें अर्ध अर्ध चरण लिखिये सो स्वस्तिक चित्र ३ ॥

यथा ॥ स० ॥ सारस नैनन वैबस मार रमा सब वैनन ने सरसा । सारस सोहयमैन तियासी सीयातिन में यह सो मरसा ॥ सारद सो मन त्यों नवहार रहावन त्यों नभसो दरसा । सारत लोचन भावर तालतारव मान चलो तरसा ४ ॥

टी० ॥ यह नायका प्रौढ़ा ताको रूप वर्णन करिके नायककूं ले जायो चाहतिहै यहां सखीको बचननायकसों यहहै कि सारस नाम कमल से नेत्रन करिके वै नाम अवस्था करिकें बशिहै मार नाम कामदेवके रमा नाम लक्ष्मीके समान है सबबचन करिके अरु नै नाम नीति करिके सरसा नाम रसकरिके सहितहै सानाम

स्वस्तिक गतिचित्रम् ॥

र मा स व वै

न च लो त र सा

सो नायका रम नाम क्रीड़ामें सोहै है कामदेवकी स्त्रीकेसमान सिया नाम स्विकीया तिनके बीचमें यह नायका सो सरसा नाम सोम वल्लीकी भूमिहै अर्थात् अमृतकी भूमिहै शारद नाम शरद-काल तद्वत् है मन जाको अर्थात् उज्ज्वलहै अरु तैसोही नूतनहार है रहावन त्योंनमसो नाम झुक्यो सो रह्योहै वन त्योंही दरसा नाम देख्योहै याहीतें सानामसो नायका रत लोचन नाम आस क्त लोचन ह्वैरही है अर्थात् वनमें रमिरही है मावरतालतानाम श्रेष्ठ तलाव अरुलतान की शोभा भैरव नाम भैरोशब्द मानिके हे नायक चलो तरसा नाम शीघ्र चलो ४ ॥

अर्द्धगतागतलक्षणम् ॥ दो० ॥ यहीअर्द्धजो चरण

को अन्य अर्द्ध सों युक्त । अर्द्धगतागत चित्रसों सु कविनको यह उक्त ५ ॥

टी० ॥ याही पादानुपाद गतागत चित्रके आधे चरणको और आधे चरण सों युक्त कीजिये ऐसे द्वै चरण लिखिये सूधे ताहीको उलटे पढ़िये तब चार चरण होयँ सो अर्ध गतागत चित्र जानिये यह सुकविन की उक्ति है ५ ॥

यथा ॥ स० ॥ सारस नैनन वैवस मार सिया तिनमें यह सो मरसा । सारदसो मन त्यों न वहार लता रव मानचलो तरसा ६ ॥

टी० ॥ इन दोऊ चरण को उलटे जब पढ़िये तब चारिवर्ण होतहैं या सवैया को अर्थ पादानुपाद गतागत चित्रमें प्रथमही अर्थ कह्यो है सो जानिये ६ ॥

तदक्षरतदर्थगतागतलक्षणम् ॥ दो० ॥ उलटेसुलटे पाठमें वर्ण अर्थ जहँ एक । जानुगतागत चित्रसो कवि करि कह्यो विवेक ७ ॥

टी० ॥ जहां उलटेहू पढने में वैसेही अक्षर आवें जैसे सूधे पढ़ने में आवै अरु दोऊनको अर्थ एकही होय ताहूको गतागत चित्र जानिये ७ ॥

यथा ॥ स० ॥ सारत लोचन मा वर ताल रमा सब वैनन नै सरसा । सारस सो हय मैना तियासी रहा वन त्यों नम सो दरसा ॥ सारद सो मन त्यों नवहार सिया तिनमें यह सो मरसा । सारस नैनन वैबस मार लतारव मान चलो तरसा ८ ॥

टी० ॥ या सवैया को अर्थ पादानुपाद गतागत चित्रमें प्रथमही कह्यो है सो जानियो ८ ॥

द्वितीयगतागतलक्षणम् ॥ दो० ॥ एक अर्थपद भिन्न जहँ उलटे सुलटे बीच । सोऊ गतागत चित्र है कहत सुकवि रस सींच ६ ॥

टी० ॥ जहां सूधे उलटे पढ़ने में अर्थ तो एकही होय अक्षर दो तरहके होयँ सोऊ गतागत चित्र जानिये ९ ॥

यथा ॥ स० ॥ सारस सों सरसा रव मावर सोम समा समसो ततसो । पारद ते दरपा चखमें खच कोमल आलम कोननको ॥ भारद सादर भा भर सौरभ योंनव योवन जोस सजो । हार सुभासु रह्या गलमें लग त्यों गन नौनग लोर रलो १० ॥

टी० ॥ यहां जो सखीकी उक्ति नायक सों होय तो स्वकीया परकीया दोउ सम्भव है अरु जो नायक की उक्ति दूतीसों होय तौ नायका परकीया जानिये सारस सों सरसा नाम कमल हूसे अधिक है अरु रव मावर नाम शब्दकी संपति श्रेष्ठहै जाकी अरु सोम नाम चन्द्रमा को समा नाम समया अर्थात् पूर्णमासी ताके समसो नाम समान तासों ततसो नाम विस्तारको प्राप्त है सो नायका अरु पारद ते दरपा नाम पारेहू ते अधिक चञ्चल है अर्थात् मुग्धा है अरु चख में खच कोमल नामनेत्र में जाके कोमलता खचित है रही है अरु आलम कोनन को नाम लोकके कोनेनमें कोई नहीं है यहां काकुजानिये अरु भारद नाम भारदैनवारी है सादर भा नाम आदर सहित शोभा जाको अरुभर सौरभ नाम अतिशयकरिकै सुगन्ध है जामें अरु योंनव योवन नाम या प्रकारते नूतन योवनको जोससजो नाम उमंग सजि रही है अरु हार नाम माला सुभासु रहा नाम सुन्दर भासि रह्यो है गल में लग नाम गले में लगिकै त्यों नाम तैसेही गननाम समूह नौनग नाम नवरत्नकी लोर रलो नाम

लरी मिलि रही है याको भावार्थ यह है कि ऐसी है यह नायका कि जाके सबै उपमामें संसारमें बराबरीको दूसरो नहीं है १०॥

भिन्नपदार्थगतागतलक्षणम् ॥ दो० ॥ उलटेसुलटे पाठमें अर्थ और पद और । यहौ गतागत चित्रहै कहत सुकवि शिर मौर ११ ॥

टी० ॥ जहां सूधे अरु उलटे दोऊ प्रकार के पढ़िबे में भिन्न अर्थ होय अरु भिन्न पद होयँ सोऊ गतागत चित्र जानिये ११॥

अनुलोम । यथा । स० ॥ नैनन बैवर हार सुभासत सारस यों रस सैनन मा । मैन तियासी लसी सब भा सु रची जस जोवन भार समा ॥ है नव नौं नग बेसर भामिन लाल लखो यहि सार रमा । सैरसजी नचलो तरभौनु सुमानत जो हुलसो तनमा १२॥

प्रतिलोम । यथा । स० ॥ मानतसो लहु जोतनमा सुनु भौरत लोचन जी सरसै । मार रसाहिय खोल लला नमि भारस बेगन नौवन है ॥ मासरभा नव जो सज चीर सुभाव स सील सीया तिनमै ॥ मानन सै सर यों सरसा लस भासु रहा रव बैननने १३ ॥

अनुलोम । टी० ॥ यह नायक मानी है तासों सखीकी मान मोचन करायबेमें उक्ति यहहै कि कैसी है नायका नेत्रन करिके अरु बै नाम अवस्थाकरिकेश्रेष्ठहै अरु हार सुन्दरभासतहै सारस नाम कमलन को अरु या भांति सों रसहैं कटाक्षनके मा नाम मध्यमें अरु कामदेवकी तियासी लसी नाम शोभितभई है संस्पूर्ण भा नाम कांतिकरके सुरची जस नाम सुन्दर रचिरई यश योवनके भारनाम अतिशयके समयमें अर्थात् योवनके भार के समयके यशमें रचिगई है अरु है नवीन नवरत्न कोबेसर जाको ऐसी भामिनिहै नायका हेलाल देखो यह साररमानाम लक्ष्मी

को तत्वहै अरु सैरसजी नाम सैलसजि रई है न चलोनाम नहीं चलोगे तुमकहा यहकाकु अर्थात् चलोही तरनामशीघ्रही भौनसु नाम भवन सुन्दरको मानको त्यागकरो हुलासकरो तनमें १२॥

प्रतिलोम । टी० ॥ यहनायका परकीया नायकपक्षकी दूती की उक्ति नायकसों यहहै कि मानतसो नाम सोनायका मानति है ताकों तुमलहो जो तुम्हारे तनमें बसतिहै अरु जाको सुनिके तुम रतलोचनभौ नामभयेहो अर्थात् जाको गुणरूप सुनिकेआ-सक्त लोचनभयेहो सोनायका अब मानतिहै अरु जीसरसै नाम जा नायकामें तुम्हारो जीव ललचै है मार रसाहिय खोललला नाम हे लला तुम्हारो जो हृदयहै सो कामदेवकी पृथ्वी है ताको खोलो अर्थात् अपने मनोरथको सुफलकरौ अरु तैसेही नमि भारस वेगन नौवनहै नाम भारसों अर्थात् फल पत्रके बोझसों सम्पूर्ण झुकि रह्यो है ऐसो गननीय बनहै अर्थात् संकेत स्थलके लायकहै मासरभा नाम लक्ष्मी के तुल्य है कांति जामें नव जो सज चीर नाम नूतन जो है चीर ताकी है सज जाके अरु सुभाव सुशील नाम स्वभाव करिके अरु सुशीलता करिके सीया तिनमें नाम स्वकीया जो तिय है तिनमें हैं याको आशय यहहै कि हैतो परकीया परन्तु स्वभाव सुशीलता करिके स्वकीयाके स-मानहै यह परकीया तें विशेष गुणहै अरु मानन से सरयों सरसा नाम या भांति सरोवर जल करिके सहित है जाके देखतें मान दूरहोतहै अरु तैसेही भासितह्वै रह्योहै शब्द बैननने नाम बीणा-निकी नीति करिके याको भावार्थ यहहै की ऐसी जो नायका हैं ताके संग बिहारकरौ अरु उद्दीपन सामग्रीहू सबसानुकूलहै १३॥

अथभाषांतरगतागतलक्षणम् ॥ दो० ॥ सुलटे भाषा और है उलटे भाषा और । भाषांतर यह चित्र है सुकवि कहत करि गौर १४॥

मध्य पंक्ति अध पंक्ति पढ़ि दोहा डमरू चित्र ।

मध्य पंक्ति ऊरध उलटि पढ़ो फारसी मित्र १५ ॥

टी०॥ जहाँ सूधे पाठमें और देशकी भाषाहोय अरु उलटेपाठ में और देशकी भाषा होय सो भाषांतर गतागतचित्र जानिये १४ ॥

यहाँ डमरू बंध चित्र कियोहै तामें जो मध्यकी पंक्ति है ताको सूधी रीतिसों पढ़िये अरु ताके नीचेकी जो पंक्तिहै ताहूको सूधी रीतिसों पढ़िये तब भाषा दोहा होतहै अरु मध्यकी पंक्ति जो है ताको उलटिके पढ़िये अरु ताके ऊपरकी जो पंक्ति है ताहू को उलटी रीतिसों पढ़िये तब फ़ारसी को बैत होतहै १५ ॥

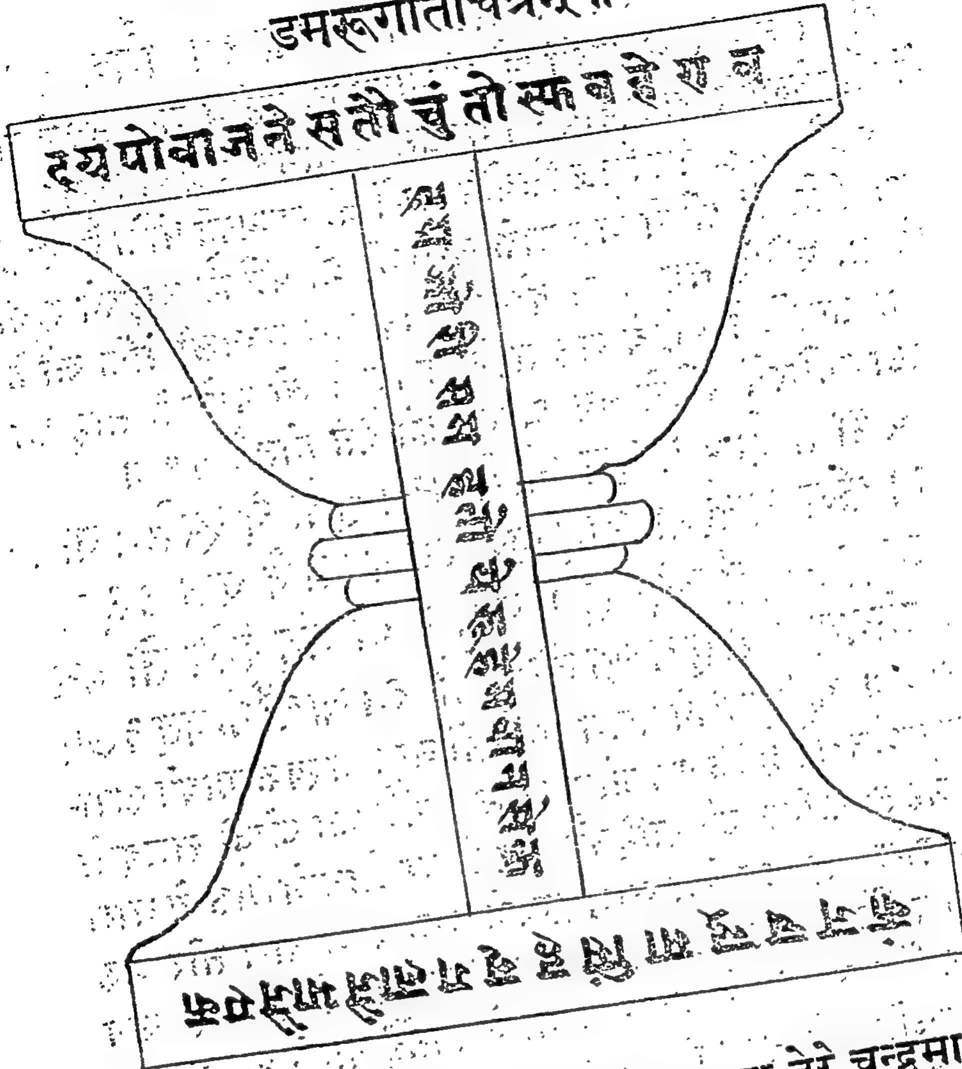
यथा ॥ दो० ॥ दय जोरी सम हतो ये रू हेम वान सेक । कंज चन्द्रमा सिंह मृग लाजै भाजै एक १६ ॥

यथाफारसीकीबैत ॥ कसेन वा महे रूये तो हम सरी जोयद । बराहे वस्फ़ तो चुं तौ सने ज़बाँ पोयद १७॥

टी० ॥ यहाँसखीको बचन सखीसों नायका स्वकीयाको रूपाधिक्य वर्णनकरै है कि दय जोरी नाम दयी है यह जोड़ी समहतो नाम महत्व करिके जो सहितहै जो ईश्वर तिन्हने अरु ये नाम यह रू नाम रुद्र अरु हेम नाम सुवर्ण अरु वाण नाम तीर अरु सेक नाम सिंचन अरु कमल अरु चन्द्रमा अरु सिंह अरु मृग एकतो लज्जित होत हैं अरु एक भाजिजातहैं याको आशय यह है कि यह जोड़ी ईश्वरने ऐसी दई है हे सखीजा नायकाके कुच सों रुद्र लज्जित होत हैं तनकी कांतिसों सुवर्ण कटाक्ष करके वाण रूपा करके अमृत सिंचन चरण करके कमल मुख करके चन्द्रमा येतो सब लाजै हैं अरुकटि करके सिंह नेत्र करके मृग ये भाजै हैं १६ ॥

टी० ॥ यहां नायकाको रूपाधिक्य वर्णन कवि करै है कसेन बामहे रूये तो नाम कोई नहीं साथ माह रूय तेरेके हमसरी जोयद नाम बराबरी ढूंढै बराहे वस्फ तो नाम बीच राह वस्फ तेरेके चुंतौसने ज़बां पोयद नाम क्योंकर ज़बान का घोड़ा दौड़े

डमरूगतिचित्रम् ॥



याको भाषा में भावार्थ यह है कि हे नायका तेरे चन्द्रमा सरीखे मुखकी समताको कोऊ नहीं ढूंढ़ि सकै है यातें कवि कहत है तेरी बड़ाई रूपी जो मार्ग है तामें बाणी रूपी जो घोड़ा है सो कैसे करिके दौड़े अर्थात तेरीस्तुतिमें कविकीबाणी थकिजातहै १७॥

समस्तव्यस्तगतागतलक्षणम् ॥ दो० ॥ जहँ अ-खंड पुनि खंडको होइ गतागत मित्र । ताको कवि कुल कहत हैं व्यस्त समस्त सु चित्र १८ ॥

दो० ॥ चौपाई के अर्द्ध ते कढ़त अर्द्ध जहं चारि ।

नव कोष्टक गति चित्र यह सु कविन कह्यो बिचारि १६ ॥

टी० ॥ जहाँ समस्त पदको पढ़िये ताको उलटिके पढ़िये सो तो अखंड गतागत अरु जहाँ खंड खंड पढ़िये सो खंड गतागत ताहीको व्यस्त समस्त गतागत चित्र कहत हैं १८ ॥

जहाँ आधी चौपाईको नवकोष्ठनिमें लिखिये ताको सूधीरीति सों पढ़िये पुनि उलटिके पढ़िये फेरि खड़ी पंक्ति पढ़िये पुनि ताको उलटिके पढ़िये व चौपाईके अर्धनिकसतहै चारिताकीद्वैचौपाई जानिये १९ ॥

यथा ॥ चौ० ॥ सीता सोभा रमा सयासी । सीया समा रभा सो तासी २० ॥

व्यस्तं ॥ यथा ॥ चौ० ॥ सीभा सता रया सो मासी । सीमा सोया रता सभासी २१ ॥

नवकोष्ठगतिचित्रम् ॥

सी	ता	सो
भा	र	मा
स	या	सी

टी० ॥ यहाँ कबिकी उक्ति यहहै कि सीताजी की जो शोभा है सो रमा नाम लक्ष्मी तामें सयासी नाम विराजमान सी है अर्थात् सीताकी शोभा लक्ष्मीमें विराजमानसी है याते सीता लक्ष्मी सों अधिक हैं सीया नाम स्वकीया समार नाम काम करिके सहित अर्थात् प्रौढ़ा तिनकी जो भा है कान्ति सोतासीनाम तैसीहै यहाँ काकु अर्थात् ताके तुल्य नहीं है याको भावार्थ यह है कि और जो स्वकीया प्रौढ़ा हैं तिनकी जो कान्तिहै सो सीता के समान नहीं है २० ॥

व्यस्त ॥ टी० ॥ यहाँहूँ कबिकी उक्ति यहहै किसीनाम सीताताकी

भासनामकांति सोकैसीहै तारनामअतिउच्चहै अर्थात् परमउत्कृष्ट है यासो नाम या कारणते मासी नाम लक्ष्मीकेसमानहै सीमासो नाम मर्यादा जो है सो यारता नाम यह जो लताहै सीता ताकी सभासीनामकचहरीसी है याकोभावार्थयहहैकि सीताकी जोउच्च शोभाहै सोतौ लक्ष्मीके समानसंभवहै परन्तु मर्यादा जोहै सोतौ सीताहीकीसभाहै अर्थात् मर्यादा सीताहीमेंहै अन्यत्रनहींहै २१॥

सर्बतोभद्रगतिलक्षणम् ॥ दो० ॥ चहूँ ओरते बाँचिये पाठ एकसो होय । ताहि सर्बतोभद्र कहि वर्णत हैं कवि लोय २२ ॥

टी० ॥ चारों ओरते पढ़ने में एकसोइ पाठ आवै अथवा एक पंक्ति छोड़िके दो छोड़िके तीन पंक्ति छोड़िके पढ़िये तहांहूं चारों दिशानि ते एक सोई पाठ होय ताको सर्बतोभद्र चित्र कहत हैं

धा	रा	ती	र	र	ती	रा	धा
रा	सु	भा	सु	सु	भा	सु	रा
ती	भा	र	मा	मा	र	भा	ती
र	सु	मा	न	न	मा	सु	र
र	सु	मा	न	न	मा	सु	र
ती	भा	र	मा	मा	र	भा	ती
रा	सु	भा	सु	सु	भा	सु	रा
धा	रा	ती	र	र	ती	रा	धा

यह चौंसठि कोष्ठ में लिखो जात है याही चित्र को जहां सोरह कोष्ठ में लिखिये तहां पादानुपाद गतागत चित्र जानिये २२ ॥

यथा । अनुष्टुप् ॥ धारा तीर रती राधा रासु भासु

सुभा सुरा। तीभा रमा मार भाती रासुमानन मासुरा २३॥

पादानुपाद गतागतचित्रम् ॥

धा	रा	ती	र
रा	सु	भा	सु
ती	भा	र	मा
र	सु	मा	न

टी० ॥ यहां सखी को वचन सखी सों रास समय में धारातीर नाम प्रवाहके तट में रती राधा नाम प्रीति है राधाकी रासु भासु नाम रासका जो प्रकाश तामें सु नाम सुष्ठु भासुरा नाम देदीप्यमानहै ती नाम स्त्री भा नाम कान्ति रमा नाम लक्ष्मी मार नाम कामदेव भाती नाम प्रकाश रसुमान नाम रसरूपी जो तालका विश्राम नमा नाम नम्र सुर नाम षड्जादिक स्वर याको भावार्थ यह है कि यमुनाका जो प्रवाहहै ताके तट प्रीतिहै जाकी ऐसी जोहै राधा सो रासका जो प्रकाश है तामें भली प्रकार सो देदीप्यमान है अरुस्त्रीनके मध्यमें कान्तिकरके लक्ष्मीहै अरुकामदेवको प्रकाश करै ऐसे रस करिके युक्त जो ताल को बिश्राम तामें नम्र है सुर जाके अर्थात् हे सखी ऐसी राधा गान करैहै २३ ॥

द्वितीयसर्वतोभद्रगतिलक्षणम् ॥ दो० ॥ दोदो अक्षर छोड़िये जोड़िदीजिये अन्त । यहू सर्वतोभद्र है वरणत कविगुणवन्त २४ ॥

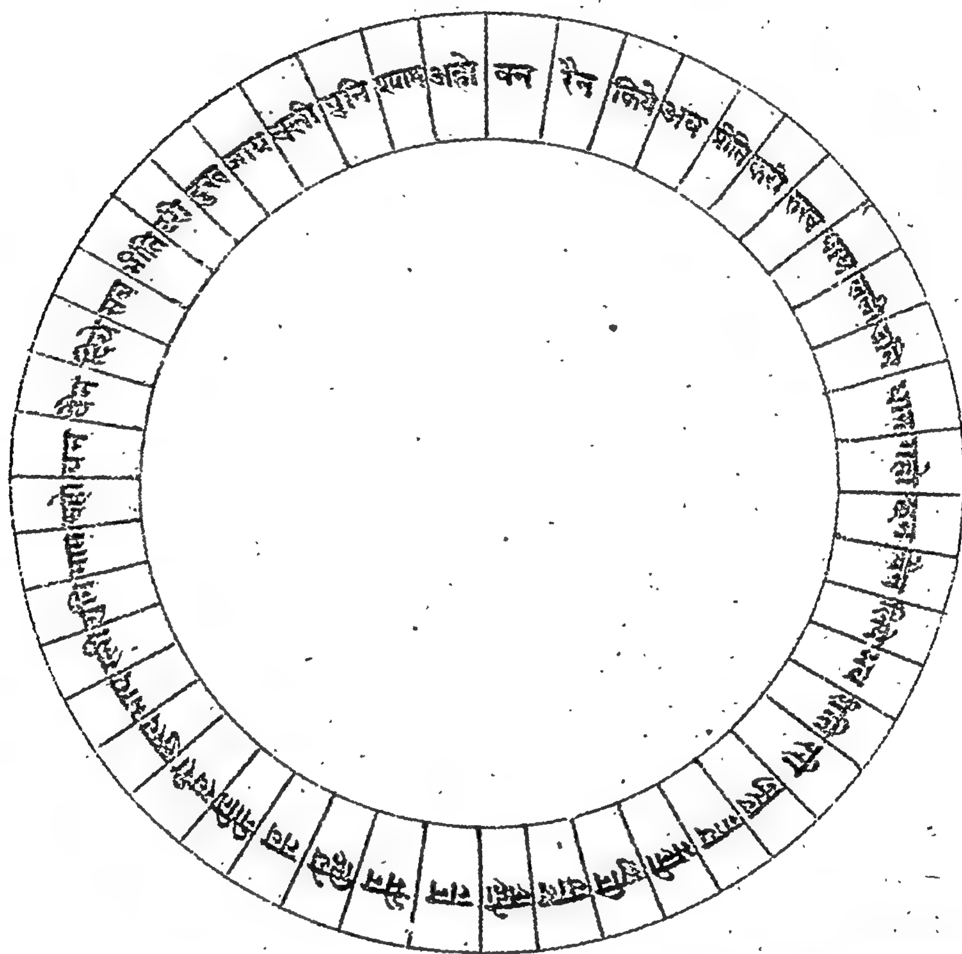
टी०॥ या सर्व तो भद्रको मंडलाकार लिखिये आदिसों दोदो अक्षरछोंड़िके पढ़िये छूटे जो अक्षरहैं तिन्हेंअन्त्यमें जोड़िये तहाँ अड़तालीस सवैया निकसतहै सो जानिये २४ ॥

यथा ॥ स० ॥ श्यामअहो वनरैनकिये अब प्रीति करी रुख पाय लली उनि । धाम गहो छन चैन लिये भव रातिररी मुखगाय भली सुनि ॥ बामलहो तनमैं नहिये तब नीति खरी सुखभाय रलीगुनि । नामचहो

पन वैन दिये सबभीतिटरी दुख जाय बली पुनि २५ ॥

टी० ॥ या सर्वतोभद्र चित्रको अर्थ सतधेनुबंधमें कहैंगे २५ ॥

सर्वतोभद्र गति चित्रम् ॥



रथगतिअश्वगतिलक्षणम् ॥ दो० ॥ ढाईढाईघ रनसों अक्षरलीजैबांचि। जहाँ छन्ददूजोबने सोहयगति है सांचि २६ ॥

टी० ॥ यहां ढाई ढाई घर सतरंज के घोड़ाके रीतिसों अक्षर पढ़िये जा घरमें घोड़ा गयो होय ताघर में फेरि न जाय चौंसठ घरनमें एकहू घरबाकी न रहै ऐसे पढ़ने में जहां दूसरो छन्द नि॰

कसै सूधे पढ़नेमें दूसरे छन्द निकसे सो अश्वगति चित्र घोड़ा फेरिबे के लिये अश्वगति चित्र में अंक दिये हैं वा रीति सों पढ़िये २६ ॥

यथारथगति ॥ पद्धटिका छं ॥ सुनचनि नत नर सुन तय खल कन। वच लज शक तज परसुरु मलपन। वसुदव नव नर ॥ सुयश लस लवन लजरत निकसत सिजतस मिडियन २७ ॥

यथाश्रश्वगति ॥ पद्धटिका छं० ॥ सुतन कनक रुच चखन जलज रसु। लपन निशिप नत तरल मयन वसु ॥ वसन वनक सज दशन तड़ित जसु । रसिय बनिय नव सरल मिलत लसु २८ ॥

रथगतिअश्वगतिंचित्रम्

१ सु	३० न	९ च	२० नि	३ न	२४ त	११ न	२६ र
१६ सु	१९ न	२ त	२९ य	१० ख	२७ ल	४ क	२३ न
३१ ब	८ च	१७ ल	१४ ज	२१ स	६ क	२५ त	१२ ज
१८ प	१५ र	३२ सु	७ रु	२८ म	१३ ल	२२ प	५ न
३३ ब	६४ सु	४१ द	५२ व	३५ न	५६ व	४३ न	५८ र
४८ सु	५१ य	३४ स	६१ ल	४२ स	५९ ल	३६ व	५५ न
६३ ल	४० ज	४९ र	४६ त	५३ नि	३८ क	५७ स	४४ त
५० सि	४७ ज	६२ त	३९ स	६० सि	४५ डि	५४ य	३७ न

रथगति टी०॥यहांसखीका वचन सखीसों राससमयमें श्रीकृष्ण

को गानवर्णन नृत्यकेसमयमें यहहै कि सुन चनि नाम सुन्दर जो नृत्यहै ता करके नत नर नाम वशकिये हैं मनुष्यजिनने अरुवाही नृत्यको सुन नाम सुनि करके तय नाम तापको प्राप्त भये खल नामकंसादिक दुष्टजनते कननामटूक भये अर्थात् खलप्राणिनको दुःख भयो अरु ता नृत्यमें वच नाम बचन अर्थात् गान सो कैसो है गान लज सक तज नाम लाज अरु शंका इनको त्याग किये हैं याही ते परसुरु नाम और गान कर्तानके सुरनकोमलपन नाम मलिनता देत हैं अरु वसुदव नव नर नाम कुवेरके बनावने वारे ऐसे श्रीकृष्ण नरहैं तिनके गान अरु नृत्यकै सुयशनाम सुंदरयश करिके लस लयन नाम शोभित भयो है वृंदावन पुनि लजरतनि नाम लज्जामें रतहै ऐसी जे स्वकीया तिनहिं कसत नाम आकर्षण करत है सिजत नाम सृजत है अर्थात् रचत है स नाम सम्यक्प्रकारेण अर्थात् भलीतरहसों मिडियन नाम मिलन अर्थात् स्वकीया न के संग मिलाप रचै हैं २७॥

अश्वगति टी० ॥ यहाँसखीको बचन नायकसों नायकामुग्धाको रूपाधिक्य वर्णन करिके मिलाप करायो चाहतिहै सुतन कनक रुच नाम सुन्दरहै शरीरमें सुवर्णकी सी रुचि जाके अरु चखन जलज रसु नाम नेत्र कमलनि में रस है जाके अरु लपन निशिपनत नाम मुखते चन्द्रमा हीनहै जाके अरु तरल मयनबसु नाम जामें चञ्चल कामदेव ने बास कियो है अरु बसन बनक सज नाम जाके बस्त्रके बनावकी सज ह्वैरहीहै अरु दशन तडित जसु नाम जाके दंतन में बिजुली को जसहै अर्थात् बिजुली को सो प्रकाशहै रसिय नाम हे रसिक बनियनव नाम वह नवीन दुलहिन है पुनि कैसीहै कि सरल नाम निष्कपटहै मिलतल सु नाम तासों मिलिते भये तुम शोभित हो अर्थात् या समयमें मिलो यह नायका विस्रब्ध नवोढ़ा २८॥

इतिश्रीमत्काशिराजविरचिताचित्रचन्द्रिकायांगति चित्र वर्णनं नामपंचमःप्रकाशः ५॥

अथबंधचित्रम्

बंधचित्रलक्षणम् ॥ दो० ॥ आकृत अथवा गुणनि सों कवि बाँधै जहँ छन्द । बंधचित्र तासूं कहत जिनकी बुद्धि अमन्द १ ॥

टी० ॥ एक आकार बन्ध दूसरा गुणबंध ये दोभेद बन्ध चित्र में हैं आकार बन्ध वह जानिये जहां कवि पुष्प फलादिक इनकी तसवीर लिखिके ता में अक्षर भरै सो आकार बन्ध अरु जहां कवितसवीर न बनावै नाम बन्धकरै अथवा भाषा बन्धकरै अथवा जैसे कामधेनु सों जो मांगो सो देत है तैसेही एकछन्द बनाइये जो छन्द मांगिये सो छन्द वामें सों कढ़ै तो यह कामधेनु का गुणबन्ध भयो याही रीति ते औरहू गुणबन्ध जहां कविकरै ताको गुणबन्ध चित्र कहत हैं जिनकी बुद्धि मन्द नहीं है ते १ ॥

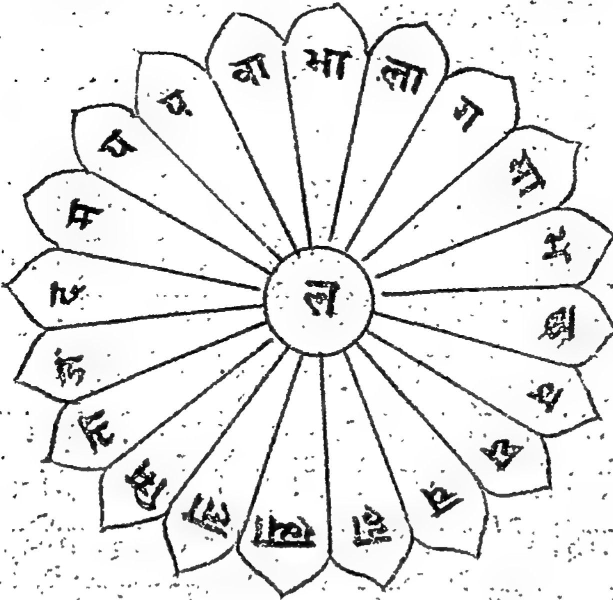
कमलाकारबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ प्रथमपत्र पुनि कोश पुनि पत्रकोशपढ़ि मित्र । कवि कोविद सबकहत हैं कमलबंध यह चित्र २ ॥

टी० ॥ पहिले पत्रका अक्षर पढ़िये पुनि कोशका अक्षरपढ़िये पुनि पत्र पुनि कोश या रीति ते जहां पढ़िये तहां कमलाकार बन्ध चित्र जानिये २ ॥

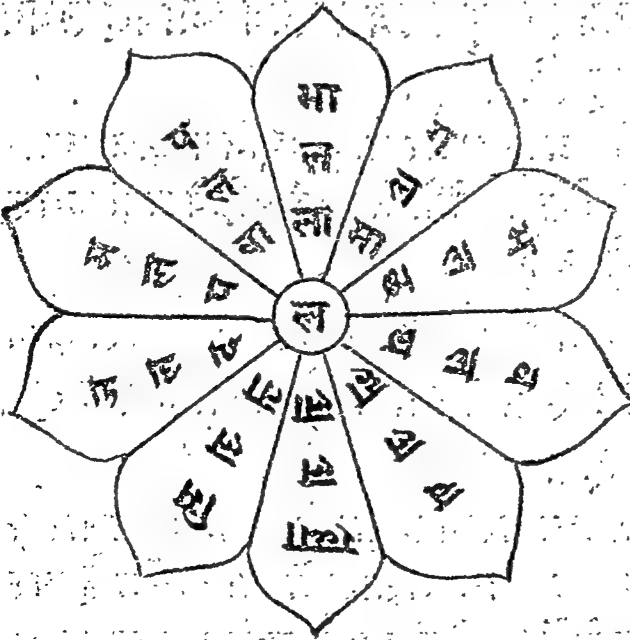
यथा ॥ दो० ॥ भाल लाल गलमाल भल छल बल थल चल हाल । ख्याल लाल मिल तालजल दलमल पल पल बाल ३ ॥

टी० ॥ यह नायका परकीया ताको सखी अभिसार करायो चाहति है भाल लाल नाम मस्तक में लालमणि है अरु गल माल भल नाम गलेमें भली माला है याते अब छल बल नाम प्रपञ्चको बल करिके संकेत स्थलमें शीघ्रहीचल तहाँ लालसों मिलके तलावके जलमें ख्याल नाम क्रीड़ा अरु दलमल पल

बिंशतिपत्रकमलाकारबंध चित्रम् ॥



दशदलकमलाकार बंधचित्रम् ॥



पल्ल वाल नाम है वाल लाल को छिन छिनके अंतर सो दृढ आलिंगनकरौ यह दलमल पदको आशयहै २ ॥

चामराकारबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ घुंडी कँगनी षट वरण शेष अर्द्ध धरु दण्ड । केशवर्ण को दण्ड के शिखरवर्ण सों मण्ड ४ ॥

टी० ॥ चामरा कार चित्र लिखिये तामें प्रथम घुंडी का अक्षर पढ़िये फिर कँगनीका मध्यका अक्षर पढ़िये पुनि बाम कँगनीका अक्षर पढ़िये पुनि मध्य पुनि दक्षिण कँगनी पुनि मध्य येषटबर्ण घुंडी कँगनी में भये बाकी अर्द्धके अक्षर दंडमेंपढ़िये पुनि केशके एक एक अक्षर दंडके शिरसों मिलायके पढ़िये यह चामर बंधके अक्षर धरिबे की रीति है सो जानिये ४ ॥

चामराकारबंधचित्रम् ॥

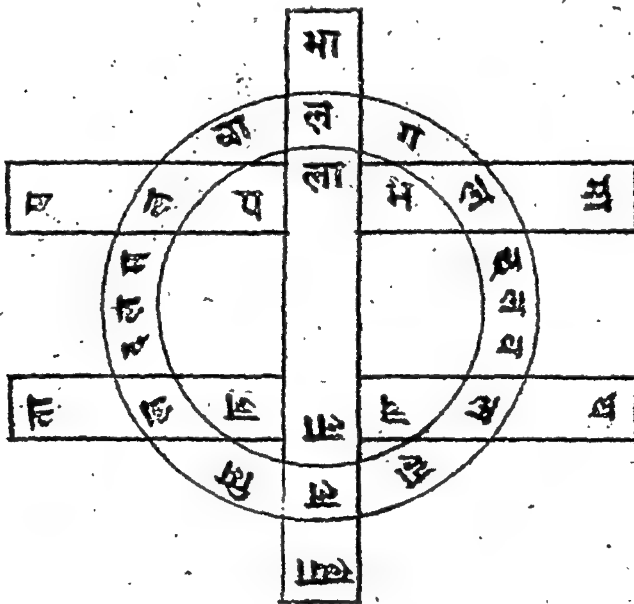
यथा दोहा ॥ माल लाल गलमाल मल छल बल थल चलहाल । ख्याल लाल मिल ताल जल दल मल घल पल चाल ५ ॥

टीका ॥ या चामरबंध को अर्थ कमलबंध में कहि आये हैं सो जानिये ॥ ५ ॥

हलकीकूंडिबंध लक्षणम् ॥ दो० ॥ क्यारीबर्ण मिलाइये कूंडबर्णसोंमित्र । याविधि अक्षर योजना कूंडबंधसोचित्र ६ ॥

टी० ॥ पहिल खड़ी क्यारी के ऊपरका अक्षर पढ़िये पुनि कूंडका अक्षर पढ़िये पुनि खड़ी क्यारीका नीचेका अक्षर पढ़िये पुनि कूंडिका अक्षर पढ़िये पुनि कूंडिपुनि कूंडि आड़ी क्यारी के अक्षरको प्रथम रीतिसों पढ़िये दोहा के अन्तको अक्षर कूंड के पहिले अक्षरमें समाप्तिकीजिये सोहलकी कूंडबन्ध जानिये ६ ॥

यथा ॥ दो० ॥ भाल लाल गलमाल भल छलबल थलचल हाल । ख्याल लाल मिल लाल जल दलमल पलपल बाल ७ ॥



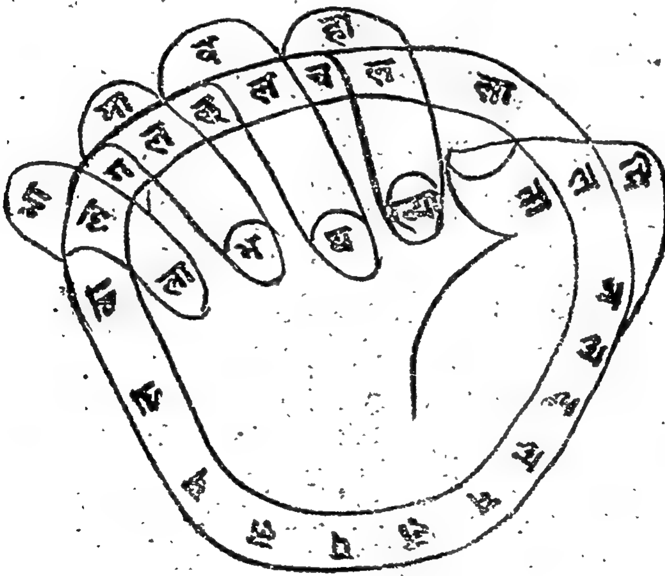
टी० ॥ यह हलके कूंड बन्ध चित्रको अर्थ कमल बन्ध चित्र में प्रथम कहि आये हैं सो जानिये ७ ॥

मुष्टिकाकारबन्धलक्षणम् ॥ दो० ॥ कन अँगुली

जड़ि मध्य नख मध्यरु घाई बाँच । शेष हथेली में पढ़ो मुष्टि बन्ध सो साँच ८ ॥

टी० ॥ छुंगुली अंगुलीके जड़िके पोरुवा को अक्षर पढ़िये पुनि वाके मध्य पोरुवा को अक्षर पढ़िये पुनि वाके नखको अक्षर पढ़ि पुनि वाहीके मध्यको अक्षर पढ़िये अरु घाई का अक्षर पढ़िये पुनि दूसरी अँगुलीका मध्यका अक्षर पढ़िये पुनि जड़ पुनि मध्य पुनि नख पुनि मध्य पुनि घाई या रीति ते पांचों अंगुली पढ़िये बाकी के अक्षर हथेली में पढ़िये अन्तको अक्षर कनिष्ठाके मध्यमें पढ़िये सो करमुष्टि बन्ध चित्र जानिये ८ ॥

कर मुष्टिकाकारबंध चित्रम् ॥



यथा॥भाललालगलमालभल छलबलथलचलहाल । ख्याल लालमिल तालजल दलमल पलपलबाल ९ ॥

टी० ॥ या दोहाको अर्थ कमला कार बंध चित्रमें कहि आये हैं सो जानिये ९ ॥

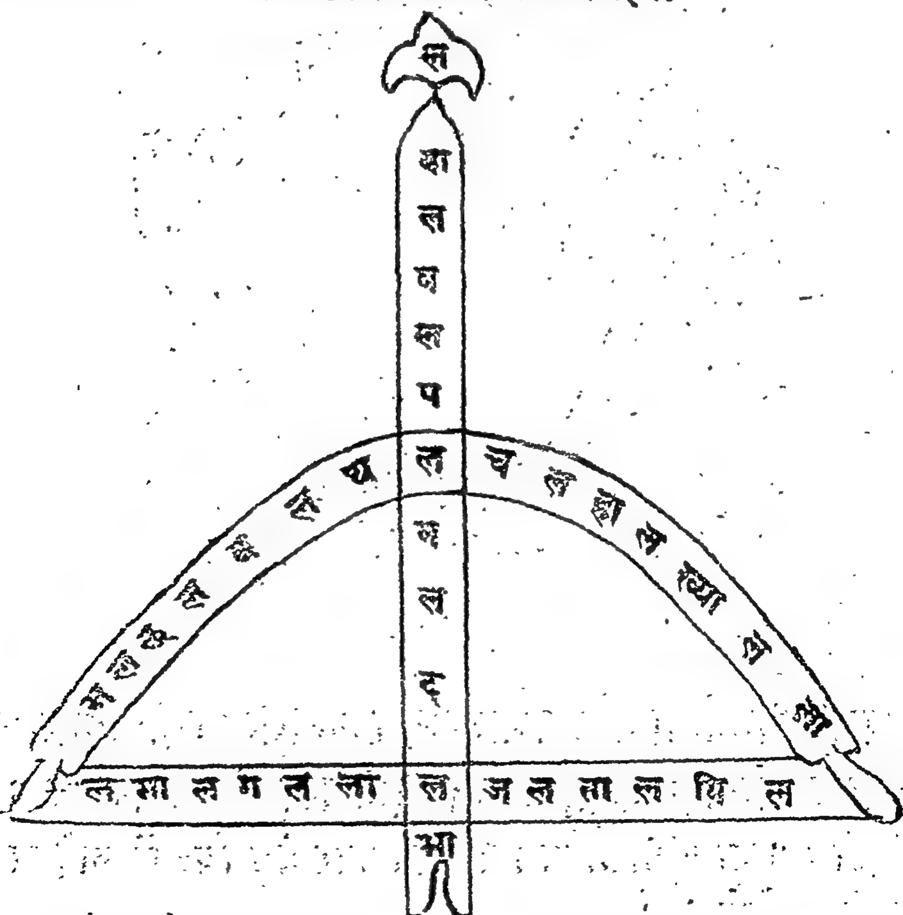
कमठाकारबंधचित्रलक्षणम् ॥ दो० ॥ पुंख अर्द्ध

रोदा पढ़ो पुनिकमठा पढु मित्र । अरध पनच पुनितीर पढु कमठाबंध सुचित्र १० ॥

टी० ॥ प्रथम शरके फोंकके दो अक्षर पढ़िये पुनि दक्षिणका आधा रोदा पढ़िये पुनि कमठा के अक्षर पढ़िये पुनि बाम रोदा पढ़िये पुनि फोंकका एक लकार पढ़िये पुनि तीरके अक्षर पढ़िये सो कमठा बंध चित्र जानिये १० ॥

यथा ॥ दो० ॥ भाललालगलमालभल छलबलथल चल हाल । ख्याललाल मिलतालजल दलमलपल पलबाल ११ ॥

कमठाकारबंध चित्रम् ॥



टी० ॥ यह कमठा बंध चित्रको अर्थ कमल बंध में कह्योहै सो जानिये ११ ॥

त्रिपदीबंध लक्षणम् ॥ दो० ॥ आदि पंक्तिके बरण मधि पंक्ति बरण मिलि बाँच । ऐसे अंत्यरु मध्य मिलि त्रिपदीबंध सुसाँच १२ ॥

टी० ॥ जहाँ आदि पंक्तिके एक एक अक्षरको मध्य पंक्ति के एक एक ओर सों क्रमसों मिलाइके बाँचिय वैसेही अंत्य पंक्तिके अक्षरन को मध्य पंक्ति सों मिलाइये सो त्रिपदी बंध चित्र जानिये यह तीस कोष्टमें लिखोजातहै याही चित्रको जब पंद्रह कोष्ट मेंदो दो अक्षर मिलाइके लिखिये दो दो अक्षरनको वाहीरीतिसों दो दो अक्षर मिलायके बाँचिये सोउ त्रिपदी बंधचित्रजानिये १२॥

यथा ॥ दो० ॥ लला चारु चित चारु तिय परमन रम अनुराग । कला चारु हित चारु हिय पर मन रम तनु राग १३ ॥

एकाक्षर त्रिपदीबंधचित्रम् ॥

ल	चा	चि	चा	ति	प	म	र	अ	रा
ला	रु	त	रु	य	र	न	म	नु	ग
क	चा	हि	चा	हि	प	म	र	त	रा

द्व्यक्षरत्रिपदीबंध चित्रम् ॥

लला	चित	तिय	मन	अनु
चारु	चारु	पर	रम	राग
कला	हित	हिय	मन	तनु

टी० ॥ यहाँ सखीका वचन सखीसों नायका प्रौढाका संयोग वर्णन में लला चारु चित्त नाम सुंदर है चित्त जिनको ऐसे तो

श्रीकृष्ण हैं अरु चारु तिय नाम सुंदर ही राधिकाजी हैं अरु परम नरम अनुराग नाम इनकी प्रीति हू उत्कृष्ट क्रीड़ा मयहै अरु कला चारु हित नाम हितकी जो कला है अर्थात्-मृदु बोलन हसना-दिक ते हूँ सुंदरहैं अरु चारु हिय नाम सुंदर है हृदय अर्थात् निष्कपट है अरु परम नरम नाम हेसखी मनको उत्कृष्ट प्रकारसों रमावने वारो है तनुराग नाम शरीर को रंगजिनको १३ ॥

द्वितीयत्रिपदी ॥ यथा ॥ दो० ॥ भलै भाग मेरे पिया आये सुखहित भोर । बलैदागधारेहियालायेनखक्षतकोर १४ ॥

द्वितीय त्रिपदी बंधचित्रम् ॥

भ	भा	मे	पि	आ	सु	हि	भो
लै	ग	रे	या	ये	ख	त	र
ब	दा	धा	हि	ला	न	क्ष	को

टी० ॥ यहाँ मध्या खंडिता नायकाको वचन नायकसों भले हैं भाग्यमेरे हे पिया तुम मेरेसुखके लिये बड़े प्रातःकालही आये अरु कंकण के दाग धारणकिये हो अरु हृदयमें नख क्षत की कोर लगाये भयेहो या रूपते तुमआये याते मेरेबड़े भाग्यहैं १४ ॥

गोमूत्रिकाकारबंध लक्षणम् ॥ दो० ॥ सूधीपंक्ति युगल लिखो तिर्यक बाँचिसुजान । सूधे तिर्यक शब्दइक गो मूत्रिका प्रमान १५ ॥

टी० ॥ दो पंक्ति सूधी लिखिये ताको सूधी रीतिसों बांचिये अरु दोनों पंक्तिके कोष्टके एकएक अक्षर अन्तरदेके बांचिये टेढ़ी रीतिसों दुहू रीतिके पढ़िबे में जहां एकही शब्द निकसै ताको गोमूत्रिका बन्ध चित्र जानिये १५ ॥

यथा ॥ दो० ॥ भलै भाग मेरे पिया आये सुख हित भोर । बलै दाग धारे हिया लाये नखक्षतकोर १६ ॥

गोमूत्रिकाकार बंध चित्रम् ॥

भ	लै	भा	ग	मे	रे	पि	या	आ	ये	सु	ख	हि	त	भो	र
ब	लै	दा	ग	धा	रे	हि	या	ला	ये	न	ख	क्ष	त	को	र

टी० ॥ या गोमूत्रिका बन्धको अर्थद्वितीय त्रिपदी बन्ध चित्र में कह्यो है सो जानिये १६ ॥

कपाटबंध लक्षणम् ॥ दो०॥ सूधे दक्षिणपट पढ़ो उलटे पढ़ि पट बाम । ताहि कपाट सुबंधकहि जे कबि गुण के धाम ॥ १७ ॥

कपाट बंध चित्रम् ॥

भ	लै	{ }	लै	ब
भा	ग		ग	दा
मे	रे		रे	धा
पि	या	{ }	या	हि
आ	ये		ये	ला
सु	ख		ख	न
हि	त		त	क्ष
भो	र	{ }	र	को

टी० ॥ दक्षिण किवाड़के पल्लाको सूधी रीतिसों पढ़िये अरु वाम किवाड़ के पल्ला के अक्षर को उलटी रीतिसों पढ़िये ताको कपाट बन्ध चित्र कहत हैं जे कवि गुणके गेह हैं ते १७ ॥

यथा ॥ दो० ॥ भलै भाग मेरे पिया आये सुख हित भोर। बलै दाग धारे हिया लाये नखक्षत कोर १८ ॥

टी० ॥ या कपाटबंध चित्रको अर्थ द्वितीय त्रिपदी बंध चित्र में कहि आयेहैं सो जानिये १८ ॥

शरपत्रबंध लक्षणम् ॥ दो०॥ चारि पंक्तिलिख बाँचिये हय गति सों प्रति चर्ण। शर पत्र बंध सो चित्र है कहत सु कवि करि पर्ण १९ ॥

टी० ॥ चारि पंक्ति करिके लिखिये शतरंज के घोड़ेकी गतिसों पंक्तिके प्रथम प्रथम अक्षरन सों ढाई ढाई घरन सों पढ़िये ताको शरपत्र बंध चित्र कहत हैं १९ ॥

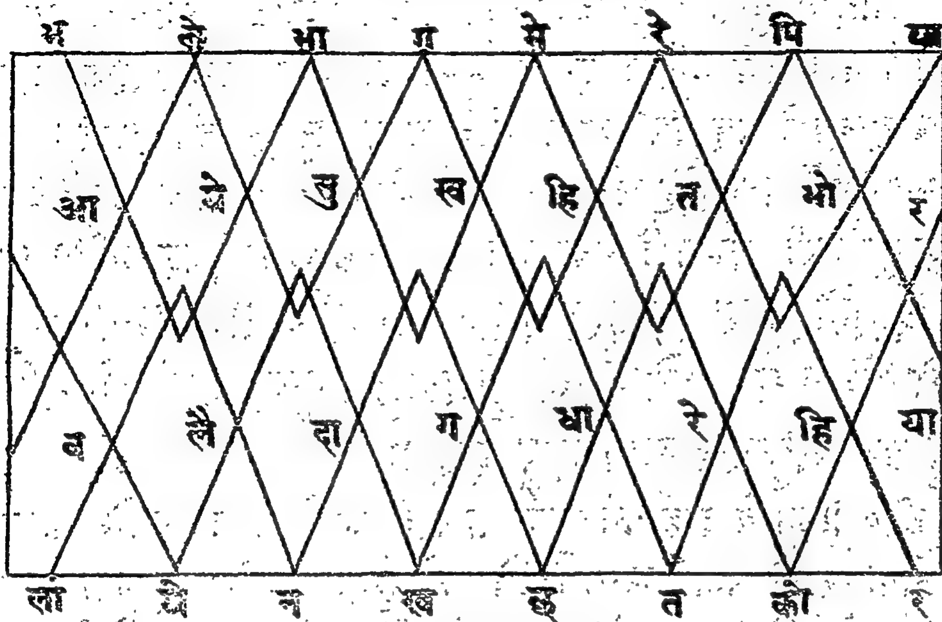
यथा ॥ दो० ॥ भलै भाग मेरेपिया आये सुख हित भोर । बलै दाग धारे हिया लाये नखक्षत कोर २० ॥

अश्वगतिबंध चित्रम् ॥

भ	लै	भा	ग	मे	रे	पि	या
आ	ये	सु	ख	हि	त	भो	र
ब	लै	दा	ग	धा	रे	हि	या
ला	ये	न	ख	क्ष	त	को	र

टी० ॥ यह शर पत्र बंध चित्रको अरु अश्व गति बंधचित्रको अर्थ द्वितीय त्रिपदी बंध चित्रमें कहि आयेहैं सो जानिये २० ॥

चटाईबंध चित्रम् ॥



मध्यादिमध्यांत्य त्रिपदीबंध लक्षणम् ॥ दो० ॥

मध्य पंक्तिके वरण को आदि पंक्ति करुलीन । त्योंहीं मध्यरु अंत्य पढ़ि त्रिपदी बंध प्रवीन २१ ॥

टी० ॥ मध्य पंक्तिके एक एक अक्षर को आदि पंक्तिके एक एक अक्षरन सों मिलाइ के पढ़िये अरु तैसेही मध्य पंक्तिको अंत्यकी पंक्तिसों मिलाइके पढ़िये सो मध्य आदि मध्य अंत्य त्रिपदीबंध चित्र जानिये २१ ॥

यथा ॥ दो० ॥ हार भार सोहै हिये रसत रसीलो बैस । हास भास सोतो हिते रगत जसीलो बैस २२ ॥

मध्यादि मध्यांत्यत्रिपदीबंध चित्रम् ॥

र	र	है	ये	स	र	लो	स
हा	भा	सो	हि	र	त	सी	बै
स	स	तो	ते	ग	ज	लो	स

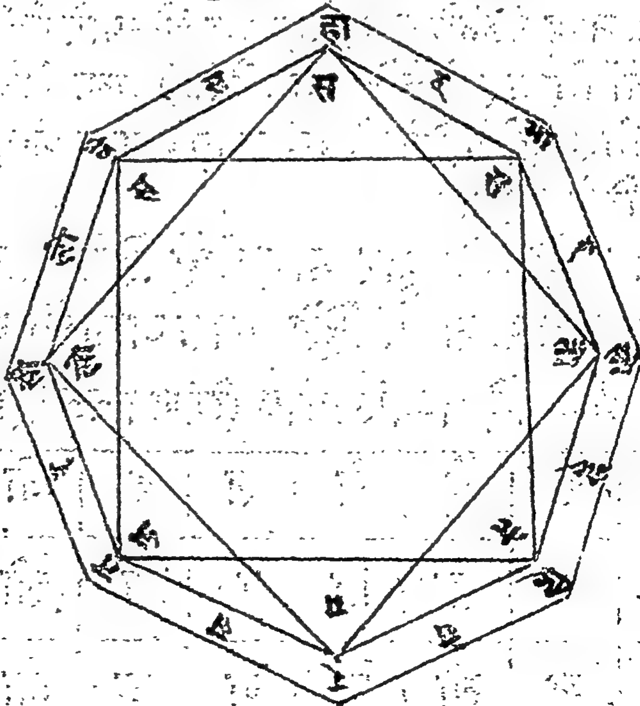
टी० ॥ यह नायका मध्या धीरा ताकी उक्ति नायकसों हारको भार सोहै है तुम्हारे हृदयमें याको व्यंग्य यहहै कि हारको बोझ उतारो या कहने ते बिन गुन माल सूचित भई रसत रसीलो बैस नाम तुम्हारो यह वेष रस भरयो है याते रस चुवतहै अरु तुम्हारे हास्यको जो प्रकाशहै सो तो हमारो हितहीहै रगत जसीलो बैस नाम तुम्हारी यश भरी अवस्था हमें रँगतुहै अर्थात् बशकरैहै २२॥

अग्निकुण्डबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ प्रथम अर्द्ध पढ़ि गोल क्रम कोणवर्ण पुनिलेहु । कुण्डवर्ण सों मेलि पढु अग्निकुण्ड रचि देहु २३ ॥

टी० ॥ आधे दोहाको गोल क्रमसों लिखिये अरु अग्नि कुण्ड के कोणपर जे अक्षर आये हैं तिनको कुण्डके भीतरके अक्षरनसों मिलाइके पढ़िये यह अग्निकुण्ड बंध चित्रकी रचनाजानिये २३॥

यथा ॥ दो० ॥ हार भारसोहै हिये रसतरसीलोबैस । हास भाससो तोंहिते रगत जसीलो बैस २४ ॥

अग्निकुण्ड बंध चित्रम् ॥



टी० ॥ या अग्निकुण्ड बंध चित्रको अर्थ मध्यादि मध्यांत्य त्रिपदी बंध चित्रमें कहि आये हैं सो जानिये २४ ॥

पर्वताकारबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ मध्य पंक्ति पढु शिखर सों सुलटी उलटी मित्र ॥ सूधे पढु पुनि शिखर ते पर्वतबन्ध विचित्र २५ ॥

टी० ॥ मध्य पंक्ति जो शिखरकी है ताकोखड़ी रीतिसों गतागत बाँचिये फेरि शिखरके तीन अक्षर मिलायके पंक्तिकी रीतिसों बाँचिये ताको पर्वत बंध चित्र जानिये २५ ॥

यथा ॥ स० ॥ मा समसो यह मैन तियासी सीया तिनमैं हय सोम समा । मा समता सो तुलै तिय और महा मह कारी फुली बनमा ॥ मैं बलिजाउं हहा मेरी मानलला लखिये मुख की सुखमा । तिष्ठित मान बिहाइये श्यामविलोकि याकीसीनहीं ब्रजमा २६ ॥

							मा स म							
						वा	सो	तु						
					लै	ति	य	औ	र					
				म	हा	म	ह	का	री	फु				
			ली	व	न	मा	मै	ब	लि	जा	ऊं			
		ह	हा	मे	री	मा	न	ल	ला	ल	खि	ये		
	मु	ख	की	सु	ख	मा	ति	ष्ठि	त	मा	न	बि	हा	
इ	ये	श्य	म	वि	लो	कि	या	की	सी	न	हीं	ब्र	न	मा
							सो							

टी० ॥ यहाँ दूतीको वचन मान मोचन करावे में नायकसों मासमसो यह नाम यह नायका लक्ष्मीके समान है सो नायका

कहा कामदेवकी स्त्री सी कहिये यह काकुहै कामदेवकी स्त्री कौन पदार्थहै अरु स्वकीया तियन में है चन्द्रमाके समान मा समता सो तुलै तिय और नाम और जो नायका परकीया सामान्यहैं ते याकी समतासों नहीं तुलै हैं यहाँ माशब्द निषेध अर्थमें जानिये अरु महा महकारी नाम बड़ी सुगंधसी फूलिरही है बनके मध्य में यातेमैं बलिजाऊँहूँ अरु हाहा मेरी मानिये हेलला देखिये वा नायकाकी मुखकी शोभा ॥ अरु तिष्ठित मान बिहाइ ये श्याम नाम स्थिरमानको दूरी कीजिये हे श्यामविलोकनि या नायका कीसी नहीं है ब्रजकी और नायकानिमें यह नायका परकीया वासक शय्या २६ ॥

चक्राकारबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ नाह वर्ण को जोड़िये अरा चारिहूमित्र ॥ अर्द्ध नेमिमें बांचिये चक्रबन्ध सो चित्र २७ ॥

टी० ॥ पहियाको जो मूढ़ाहै ताको जो वर्ण ताको नाम अरासों मिलायके पढ़िये पुनि मूढ़ाको अक्षर नीचेके अरासों मिलाइये पुनि मूढ़ाको अक्षर दक्षिण अरासों मिलाइके पढ़िये पुनि मूढ़ाको अक्षर शिखरसों मिलाइके पढ़िये आधो दोहा नाह अरु अरा मेंपढ़िये अरु आधो दोहा पूढ़िमें पढ़िये सो चक्रबंध चित्र जानिये २७ ॥

यथा दो० ॥ सुनत हिये सुख लहत शुभ कही न सुधासुबैन॥मन पाये मैं कहतिहूं सोवन लाला चैन२८॥

टी० ॥ यहाँ सखीको वचन नायकसों यह है कि सुनतही हृदयमें सुखको प्राप्त होत है भलेप्रकारसों अरु कही नहीं है वा नायकाने अमृतरूपी वचन अर्थात् मुखते तो कछु नहीं कह्यो है परन्तु तुम्हारे गुण सुनिके सुख पावति है अरु मनकी बात यह पाई मैंने चेष्टासूँ यहबात मैं तुमसे कहतिहूं हेलाला अब चैनसूंवा नायकाकेसंग शयनकरो क्योंनहीं यहनायका विश्रब्ध नवोढ़ा २८

चक्रबन्धचित्रम् ॥



द्विचतुष्कचक्रबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ सन्धि अरानि से अर्द्ध पढ़ि अर्द्ध नेमि में बाँचि ॥ चक्रबन्ध द्विचतुष्क को कहत सुकबिजन जाँचि २९ ॥

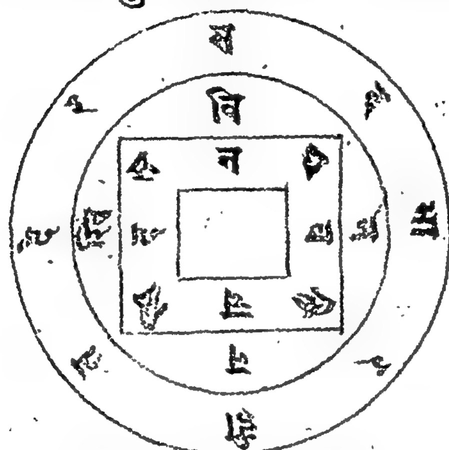
टी० ॥ द्वि चतुष्क चक्र बंधमें दोय मण्डल चारकोनेके कीजिये ताके ऊपर दोय गोल मण्डल कीजिये तहाँ नेमि तो गोल मण्डलहै अरु आ चतुष्कोण मण्डल है इनके मध्यके वर्णको अराके वर्णते मिलाइये पुनि नेमिमें अरा के चूलिका वर्ण अरा के वर्णसों मिलाइये या रीति ते आधोछन्द अरानिमें पढ़िये अरु उत्तरार्द्धमें संधिके अक्षरको नेमिके अक्षरसों मिलाइये पुनि नेमि पुनि नेमि पुनि संधि पुनि नेमि पुनि संधि पुनि नेमि पुनि नेमि पुनि नेमि पुनि संधि पुनि नेमि पुनि नेमि यह चक्र सुकविजननने विचारिके कह्यो है २९ ॥

यथा ॥ चौ० ॥ विनद घन बरसि नचत शिखि दरस ॥ विशद भा नरन होत देखि रस ३० ॥

टी० ॥ यह उद्दीपन विभावहै विनद घन बरसि नाम विशेष

नाद करिके घन बरसतभये ताको देखिके मयूर नाचतभये अरु विशद भान रन नाम मनुष्यनकी कांति निर्म्मलहोत भई रस नाम जलको होत नाम बरसतो देखिके ३० ॥

द्विचतुष्कचक्रबन्ध चित्रम् ॥



विविडितचक्रबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ शिखर ग्रंथि पुनि ग्रंथि भनि शिखरग्रंथि पढ़ वक्र ॥ उत्तरार्द्ध लिखि नेमि में विविडितबन्ध सुचक्र ३१ ॥

टी० ॥ शिखरके वर्णको ग्रंथिते मिलाइये पुनि ग्रंथि पढ़िये वक्रनाम टेढ़ीरीतिसे पढ़िये या रीतिते शिखर ग्रंथिमें अर्द्धछन्द पढ़िये अरु उत्तरार्द्धनेमि में पढ़िये सो विविडित चक्र जानिये विविडिता नामकी एक देवीहै ताके आयुध को विविडित चक्र कहते हैं ३१ ॥

यथा ॥ दो० ॥ समार पीति यत्योंभा मानोरति मय भास ॥ सरसानो वर प्रीतिमें मन रात्यो योंहास ३२ ॥

टी० ॥ यहांसखिका वचन सखीसों नायका नायकके संयोग वर्णनमें समारपी नामकाम करिके सहित पीतमहै अरु तियत्यों भा नाम तैसेही तियकी कांतिहै मानो रतिसंयुक्त कामदेवराजत है अरु सरसानो नाम सरसाय रह्योहै श्रेष्ठ प्रीतिमें मन जाको

ग्ररु मनपदयहां देहली दीपक न्याय रीति करिके मन अनुरक्त होय रह्यो है हास्यमें या प्रकार ते यह नायका प्रौढा ३२ ॥

विविडितचक्रबन्धचित्रम् ॥



बीड़ीबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ कोण मध्य पुनि कोणमें अर्द्ध धारिये छन्द ॥ उत्तरार्द्ध धरि नेमिमें बीड़ी बन्ध अमन्द ३३ ॥

टी० ॥ कोणकेवर्णको मध्यकी पंक्तिसों मिलाइये पुनिकोण के वर्णको मध्यकी पंक्तिसों मिलाइये पुनिकोण पुनिमध्य पुनि प्रथम कोण ऐसे अर्द्धछन्द जानिये अरुउत्तरार्ध नेमिमें पढ़ियेयह बीटिकाबंधचित्र जानिये ३३ ॥

यथा ॥ दो० ॥ लसै कंजते चारुमुख कोमल सुखमा लाल ॥ लगै चन्द फीको रुचिर सम श्री भासत बाल ३४ ॥

टी० ॥ यहांसखीका बचन सखीसों नायका नायकके संयोग वर्णनमें शोभित है कमलते चारु मुख जाको अरु कोमलशोभा है लालकी अरुचन्द्रमाकी रुचिरता फीकीलगैहै ऐसीबाललक्ष्मी के समान भासतहै यह नायका प्रौढा ३४ ॥

विडिकाबन्ध चित्रम् ॥

द्विशृंगाटकबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ द्वादश अक्षर धारिये शृंगग्रन्थि में मित्र ॥ शेष नेमि में पूरियो द्वि शृंगाटक चित्र ३५ ॥

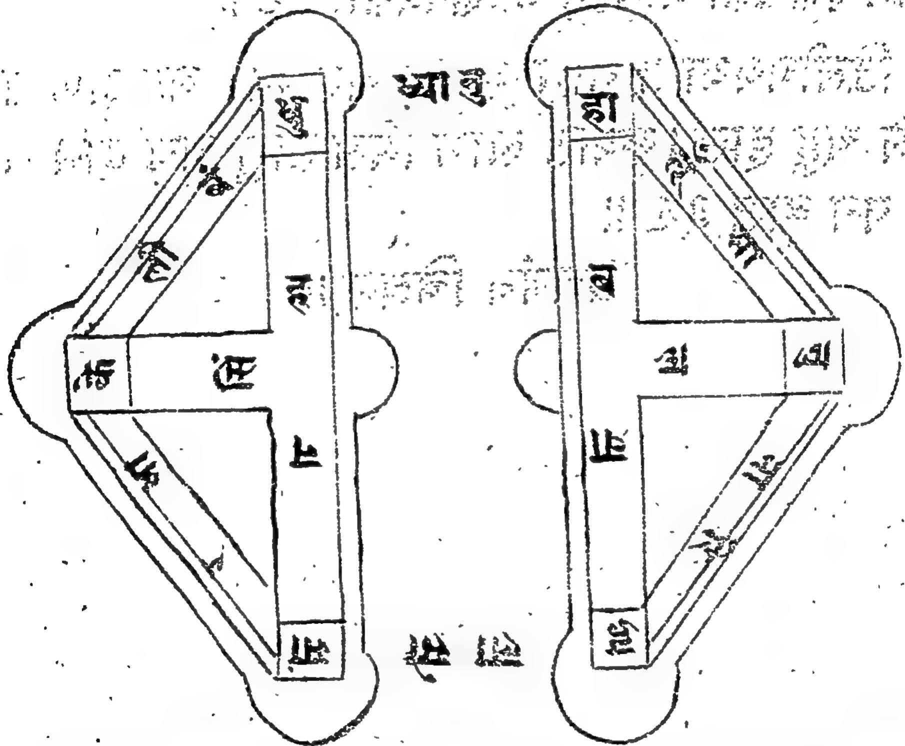
टी० ॥ शृंगके वर्णको ग्रंथिके वर्णसों मिलाइये पुनि शृंग पुनि ग्रंथि या क्रमसों बारह अक्षर पढ़िये बाकीके अक्षर नेमिमें पढ़िये सो दो सिंघाड़ा बंध चित्र जानिये ३५ ॥

यथा ॥ दो० ॥ हावनुलहुवा मानकेसिंधुहहातूमानु । नारि हुलासो मारभा केली बंधू ध्यान ३६ ॥

टी० ॥ यहाँ सखीकी उक्ति मानी नायक सों हावनु लहुवा नाम वा नायकाके अनेक प्रकारके जे हावहैं तिन्हें तुम लहो हे मानके समुद्र हाहा मेरा मानिके वा नायकाको हुलास देहु अर्थात् आनन्दयुक्तकरो अरु मारभा नाम हे कामदेव समानकांति तुम्हारो ध्यान केलिको बंधुहै नाम क्रीड़ाको मित्रहै या द्विशृंगा-

टकबंध चित्र में ग्रंथि ग्रंथिके षवर्ण में कविको नाम कढ़त है ॥ यथा बलवान् सिंह ३६ ॥

द्विशृंगाटकबन्धचित्रम् ॥



अथछत्रबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ छत्र वर्ण मिलि मध्य पुनि छत्र झालरिन जोरि । छत्र बंध सो चित्र कहि ग्रंथन मत टकटोरि ३७॥

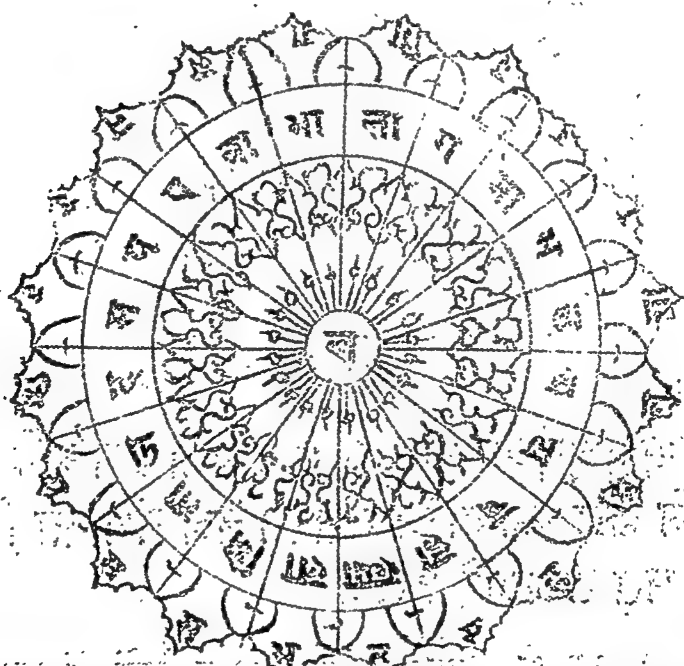
टी० ॥ छत्रके वर्णनको मध्यके वर्णसों मिलायके पढ़िये फेरि छत्र वर्णनको झालरिके वर्णनसों एक एक मिलाइ के पढ़िये सो छत्रबंध चित्र जानिये ३७॥

यथा ॥ दो० ॥ भाल लाल गल माल मल छल बल थल चल हाल । ख्याल लाल मिल ताल जल दल मल पल पल बाल ३८ ॥

टी० ॥ यहनायक मानी है तासों सखीकी उक्ति मानमोचन में वा नायकाके भालमें लालमणि है अरु गलेमें भली माला है याते छलबल नामकपटकी अमेठन छोड़िके संकेतस्थलमें चलो शीघ्र हेलालतालके जलमें मिलिके ख्यालकरो वा बालकोक्षण क्षणमें दलमलो नामदृढ आलिंगनकरो ३८ ॥

द्वितीययथा ॥ भाग लागि गर मार भर क्षण बन थमि चहु हास । ख्यात लाभ मिस तासु जय दमि मद पर पन बास ३९ ॥

छत्रबंध चित्रम् ॥



टी० ॥ अरु भाग्यसों गरमें लागिके मारभरनाम हे कामभार युक्तक्षण मात्रवनमें थमिके हास्यको चाहो अरु ख्यातनाम प्रसिद्ध वा नायकाके जयको लाभमिससों होयगो अर्थात् जलक्रीड़ाके मिसकरिके अरु दमिमदनाम अहंकारको दमनकरिके पर पननाम उत्कृष्टप्रतिज्ञामें बासकरो अर्थात् प्रतिज्ञा भंगमतकरो यहां नायका परकीया जानिये ३९ ॥

द्वितीयछत्रबंधलं० ॥ दो० ॥ छत्रपंक्ति कोमेलियेदण्डग्रं थिसोंमित्र । ग्रन्थिदण्डपुनिबाँचियेछत्रबंधयहचित्र ४०

टी० ॥ छत्रकी पंक्ति दण्डकी ग्रंथि सों मिलाइये पुनि ग्रंथि के वर्णको दंड सों मिलाइये सो छत्रबंध जानिये यह एकदंडको छत्रहै यामें एक चौपाईको न्यासहै अरु याही क्रमसों दोय दण्ड को छत्र बनाइये तामें द्वै चौपाई भरिये अरु वाही द्वैदंड छत्रको अर्द्ध लिखिये सो पताकाबंध चित्र जानिये ४० ॥

यथा चौ० ॥ सीता सोभा रमा सयासी । सीया सभा रमा सो तासी ४१ ॥

एक दण्ड छत्रबंधचित्रं

							सी							
						सी	ता	सी						
					सी	ता	सी	ता	सी					
				सी	ता	सो	भा	सो	ता	सी				
			सी	ता	सो	भा	र	भा	सो	ता	सी			
		सी	ता	सो	भा	र	मा	र	भा	सो	ता	सी		
	सी	ता	सो	भा	र	मा	स	मा	र	भा	सो	ता	सी	
सी	ता	सो	भा	र	मा	स	या	स	मा	र	भा	सो	ता	सी
							सो							
							या							
							स							
							मा							
							र							
							भा							
							सो							
							ता							
							सी							

द्वितीययथा ॥ चौपाई ॥ सीता सोभारमा सयासी । सीया समा रमा सो तासी ४२ ॥ सीभासता रया सो मासी । सीमासोया रतासभासी ४३ ॥

द्विदंडछत्रबंधचित्रम् ॥

							सी								
						सी	ता	भा	सी						
					सी	ता	सो	स	भा	सी					
				सी	ता	सो	भा	ता	स	भा	सी				
			सी	ता	सो	भा	र	र	ता	स	भा	सी			
		सी	ता	सो	भा	र	मा	या	र	ता	स	भा	सी		
	सी	ता	सो	भा	र	मा	स	सो	य	र	ता	स	भा	सी	
सी	ता	सी	भा	र	मा	स	या	मा	सो	या	र	ता	स	भा	सी
							सी								
							या	मा							
							स	सो							
							या	या							
							र	र							
							मा	ता							
							सो	स							
							ता	भा							
							सी								

पताकाबंधोयथा ॥ चौपाई ॥ सीभा सतार यासो मासी । सीमा सोया रता सभासी ४४ ॥

पताकाबंधचित्रम् ॥

							सी
						सी	भा
					सी	भा	स
				सी	भा	स	ता
			सी	भा	स	ता	र
		सी	भा	स	ता	र	या
	सी	भा	स	ता	र	या	सो
सी	भा	स	ता	र	या	सो	मा
							सी
							मा
							सो
							या
							र
							ता
							स
							भा
							सी

टी० ॥ दोऊ छत्रबंध अरु पताकाबंध इनतीनन को अर्थ प्रथमही गति प्रकरणमें नवकोष्ठ गति चित्र में कहिआये हैं सोजानिये ४४ ॥

ध्वजाबंधलक्षणं ॥ दोहा ॥ डेढ़ चरण धरि दंडमें डेढ़ ध्वजा में होइ। एक चरण पटुका रचो ध्वजाबंध यह जोइ ४५ ॥

टी० ॥ दंडमें प्रथम चरण ऋजुपढ़िये पुनि अर्ध चरण दंडमें उलटो पढ़िये या भाँति डेढ़ चरण दंडमें जानिये पुनि ध्वजा में डेढ़ चरण पढ़िये फोंदाके वर्णको दोवार पढ़िये अन्तके वर्णको कलशमेंपढ़िये पुनिकलशकोवर्ण एकवर्ण दंडको मिलायके पटुकामें एक चरण गतागत रचिये सो ध्वजा बंध चित्र देखिये ४५॥

यथा ॥ सवैया ॥ मोहन जू लखिये चलिबालसुवे सु रची नत सीलसभा। भासलसी तनचीरसुवेसु लजी छवि जोन्हि लहो सुलभा। गावत तानन संगसखीनर मै बनबीच मनो कलभा। भासवही सरसा रस नैनन ने सर सारसही बसभा ४६ ॥

टी० ॥ यहां सखीकोवचन नायकसों नायका परकीया को रूपाधिक्य वर्णन करिके नायकको लेजायो चाहति है हे मोहनजू वा बालको चलिके देखिये कैसी है वह बाल कि सुवेस नाम भली है अवस्था जाकी अरु रचि रहीहै नम्रताकी सुशीलताकी सभामें अर्थात् नम्रता सुशीलता या नायका कीसी और नायका में नाहीं है अरु भास नामदीप्त लसितह्वै रही है तनमें सुन्दर चीर करिके जा चीर करिके जोन्हि लज्जित होति है ता नायकाको सहजही प्राप्तहो ताननको गाइ रही है अरु संग में सखी कोऊ नहीं है अरु रमि रही वनमें मानों कलभा नाम छौना हथिनीसी अरु भास वही नाम सम्पूर्ण कांति सरसा नाम सरस है अरु रसहै नेत्रमें जाके अरु नै नाम नीतिरूपी सर जो है सरोवर ताके सारस नाम कमलहैं नेत्र जाके ऐसी नायकाको देखि करिके मेरोही वसभा नाम हृदय वसभयो है याते तुमचलो ४६॥

ननै सर सार सहीं व

भा स ला डी ता ला ली ल ल म ता ला वा ली म थ रि ला भू न ला सो

तात वग ाल हो ल नि जो बि जी ल

ध्वजाबंधचित्र ॥

चौपड़बंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ कोण गता गत बांचियेनाहपंक्ति ऋजु होइ । मध्य वर्ण आद्यांतमें चौपड़ बंध सुजोइ ४७ ॥

टी० ॥ कोणकी जो पंक्तिहै तिन्हैं गतागत पढ़िये अरु नाह

नाम ऊपरको मण्डलहै ताको सूधीरीति सों पढ़िये अरु मध्यके वर्णको चरण के आदि अन्त में पढ़िये ताको चौपड़ बंध चित्र जानिये ४७ ॥

यथा सवैया ॥ सरस नव जो ताल सुखपिय लहि नियम सानि दरस। सरद निसमय निरखि शशि तिय रही ह्वांरस वरस । सरवसर ह्वांही रसम दुति नरमवस चलत रस। सरतलचसव मयन विल सानि लता जोवन सरस ४८ ॥

चौपड़बंधचित्रम् ॥

ल सु ख पि य ल हि नि

ता जो वन स र अ

टी० ॥ यह नायका मानिनी है ताकोसखी उद्दीपन विभाव श्रवण कराय के मानमोचन करायो चाहति है सरस नामजल

करिके सहित ऐसो जो नूतन ताल है तामें सुखसों पियको लहु अरु नियम सनिनाम अपनी प्रतिज्ञा में पगिकै दरशनाम दर्शन करु सरद ऋतुकी रात्रिको जो चन्द्रमा है ताको हेतिय तू देख अरु वहां रसकीबर्षा होरही है अरु सरवसर नामसम्पूर्ण सरोवर में वहां हीराके समानदुति है अर्थात् अति स्वच्छ है याते नरम नामक्रीड़ाके बशह्वैके चलु तरसनाम शीघ्र अरु सर तलचनाम सिद्धहोत है तेरे नम्र भये ते सम्पूर्ण काम के बिलास हे सरस योबनकी लता याते तू चल ४८ ॥

चरणगुप्तगुप्तोत्तर निरोष्ट्यलक्षणम् ॥ दो० ॥

नवकोष्ठन ते काढ़िये चरण आदि अरु अन्त । सरण कियेउत्तरकढ़े अरु निरोष्ठ्य कहिसंत ४९ ॥

टी० ॥ नवघरमेंते चरण निकालिये यहचरण गुप्तका क्रम है अरु काढ़े चरणके अक्षरनको प्रथम द्वितीय तृतीय या क्रमतेअंत के मिलायकै दोयअक्षरको उत्तर दीजिये सो व्यस्त उत्तर अरु समस्त चरणको एक उत्तर दीजिये सो समस्तउत्तर यहगुप्तोत्तर जानिये अरु या छन्दमें उकार वकारपवर्ग नाहीं हैं यातेंनिरोष्ठ्य जानिये हेसंत नामहेपंडित ४९ ॥

यथा ॥ दो० ॥ तारतहर कहिअधर जसन रहित हित रणरंग । नितत सरसरस कहत कहँ हरित लहन जसअंग ५० ॥

कृषिहि करत किहिं तजि सजनसासि दिनदिन जिय दीन । लस तारसाहि गण छीजिकहि जग धरता रिस छीन ५१ ॥

टी० ॥ येदोऊ दोहानमें प्रश्न अरु उत्तरजानिये अंतके चरण में उत्तर अरु सर्व चरणमें प्रश्न तारतहर कहिनाम महादेवकौ नकोतारेहैं तहां उत्तर जन अर्थात् भक्तजन को अधर जस नाम

ओष्ठ को जस कहा उत्तरगन अर्थात् अगन न बोलनो नर हित नाम मनुष्यको हितकहा उत्तर धनहितरणरंग नामरणमें रँगे हैं जे शूरतिनको हितकहा उत्तररण अर्थात् संग्राम नितत सरसरस कहत कहँनाम निरंतन करिके बीणादिक जो वाद्य है सो सरस रस को कहा कहे है उत्तर तान अर्थात् तानादिक कर्ममें हरित लहन जसअंगनाम कौन्ह पदार्थ के हरिलेबे में जसको अंग पावत है उत्तर ऋण अर्थात् कर्जदूर करिबे में कृषिहि करत कि-हितजिसजन नामसज्जन प्राणीकहा वस्तु छोड़िके खेती करत है उत्तर सन अर्थात् सन नहींबोयें शशि दिनदिन जियदीननाम चन्द्रमा दिनदिन प्रति क्यौंदनिहै उत्तर छीन अर्थात् क्षयी व्याधि करिके लसतरि सहि गण छीजि कहिनाम क्रोधके समुद्र दायते छीन अर्थात् नहीं है क्रोध जामें ऐसो कौन पुरुष सो तू कहु उत्तर जग धरता रिस छीन अर्थात् संसारके धारण करने वारे ऐसे जो ईश्वर हैं तिनमें क्रोध नहीं है ५० । ५१ ॥

चरणगुप्तनिरोष्ठकगुप्तोत्तर॥

ता	र	त	ह	र	क	हि	अ	ध
र	ज	स	न	र	हि	त	हि	त
र	ण	रं	ग	नि	त	त	स	र
स	र	स	क	ह	त	क	ह	ह
रि	त	ल	ह	न	ज	स	धं	ग
ऋ	घि	हि	क	र	त	कि	हिं	त
जि	स	ज	न	स	सि	दि	न	दि
न	जि	य	दी	न	ल	स	त	रि
स	हि	ग	ण	छी	जि	क	हि	ज

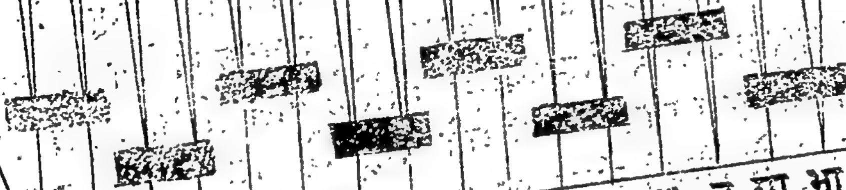
मुरजबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ आदि अन्त्यमें इक वरण युग युग वरण जु एक। ढ्वाली क्रमते बाँचिये मुरजबंध कहि टेक ५२ ॥

टी० ॥ जो वर्ण आदिमें है सोई अक्षर अंत्य में आवै अरु सम्पूर्ण छन्दमें एक अक्षरको दोदोबार धरिये ढ्वाली नाम मृदंग की सिकंजाकी जो रस्सी है जैसे वह खिंचै है ताही क्रमसों अक्षर पढ़िये ताको कविजन मुरजबंध कहत हैं टेक करिके ५२ ॥

यथा ॥ दो० ॥ शशी शीत तन नहिं हिये एरी रीता ताप । परै रैन नग गनन शी सीमा मापा पाप ५३ ॥ परारागगर रमिमिली लीपी पीरारास । सदादार रन नति तिया यासो शोभा भास ५४ ॥

टी० ॥ यहां नायकाको वचन सखीसों प्रलाप अवस्था में शशी शीत तन नहिं हिये एरी नाम एरी सखी चन्द्रमाको तन हृदयते शीतल नहीं है अरु यामें रीता ताप नाम गुणते केवल संताप रूप है परै रैन नग गननशी नाम याके संयोग की रात्रि पर्वत समुदायसी कठोर व्यतीत होतिहै याते सीमा मापा पाप नामयहचन्द्रमा पापकी नपीभई मर्यादाहै अरु परानाम उत्कृष्ट राग गर रमि मिली नाम याको उत्कृष्ट श्वेत रंग देखिबे में है परंतु यामें विष रमि करिके मिलि रह्यो है मानों लीपी पीरा रास नाम जैसे दुःखको समूह लिप्यो भयो नाम छिप्यो भयोहै तैसेही श्वेतरंग चन्द्रमा को देखिबे में है परन्तु भरयो बिषही है अरु सदादाररन नतितिया नाम सदैवदारनाम आरा है नम्र तिया नामबिरहिनी स्त्रिनके संग्रामको याकोभावार्थ यहहै कि जैसे आरा के मारने में साँसाति होतिहै और शस्त्रके मारनेसे इतनो कष्ट नहीं होतहै तैसेहीचन्द्रमा बिरहिनिन कूं मारत है कदर्थना सों याते शोभाभास नाम या वर्णनसे चन्द्रमाकी शोभाआभास मात्र है नामशोभा नहीं है मृग तृष्णा सी दीखैहै ५३ ।५४ ॥

मुरजबन्धचित्रम् ॥

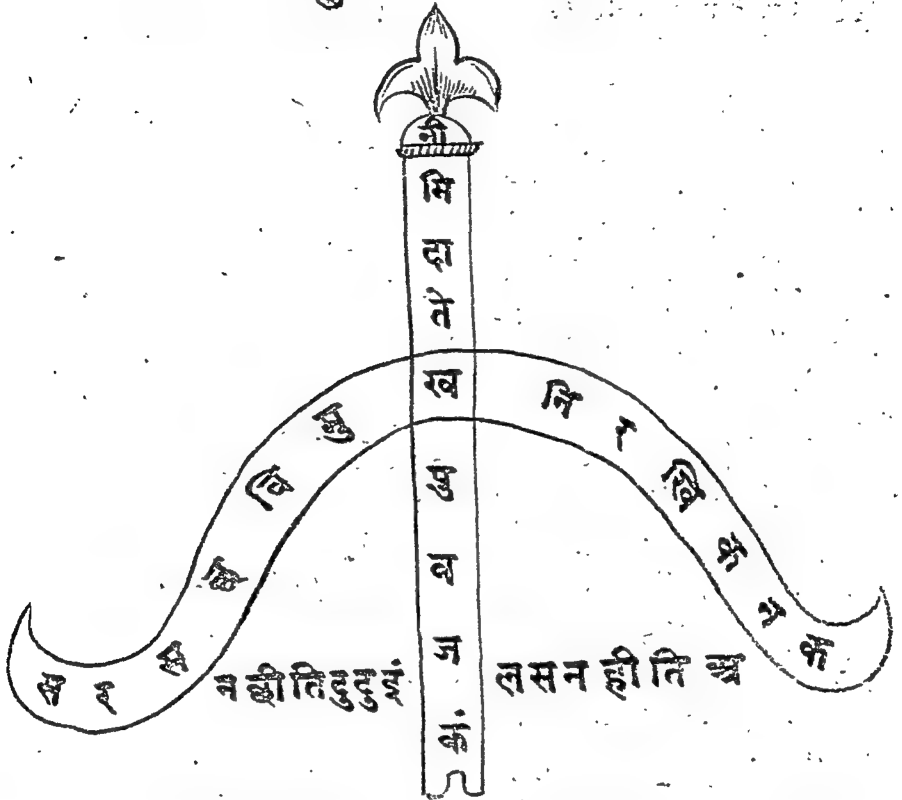


धनुषबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ पुंख अर्द्ध रोदा पढ़ो गोसा ऋजु बिपरीत। पृष्ठ सु गोसा पनचशर धनुषबंध यह मीत ५५ ॥

टी० ॥ पुंखनाम शरकी फोंक ताकोअक्षर प्रथम पढ़िये पुनि आधोरोदा पढ़िये अरु कमानके गोसाके तीनों बर्णोंको गतागत पढ़िये पुनिपृष्ठि पढ़िये प्रथम क्रमसों द्वितीय गोसाअर्द्ध रोदा सम्पूर्णतीरपढ़िये सो धनुष बंधचित्र जानिये हेमित्र ५५ ॥

यथा॥ सो० ॥ कञ्ज इन्दु द्युति छीन सरस सरस छबि मुख निरखि। कनक कनक अति हीन सलज बपुष ते दामिनी ५६ ॥

धनुषबंध चित्रम् ॥

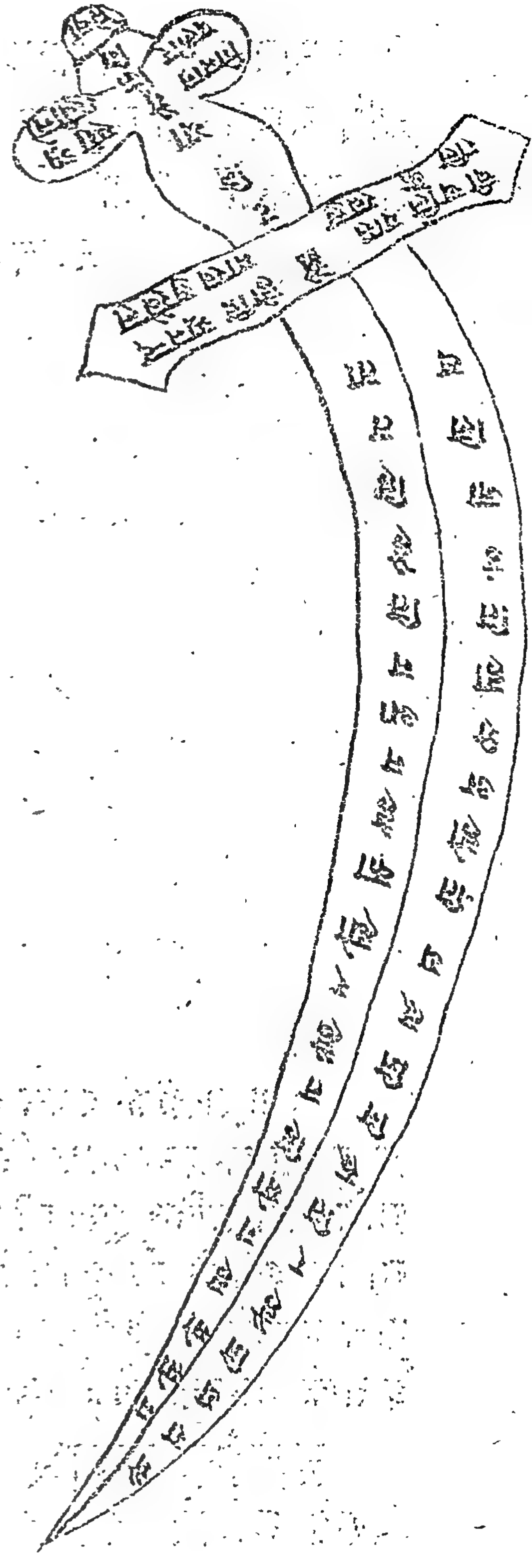


टी० ॥ सखीको वचन सखीसो नायका के रूपाधिक्य वर्णन में कमल चन्द्रमा की कांति छीन है नाम लघुहै सरस सरसनाम अधिकरस सहित मुख की छबि है सखी तूदेख अरु कनक कनक नाम सुवर्ण के जो टूक हैं तेतौ अतिही दीन हैं नाम तुच्छ हैं सलज वपुषते दामिनी नाम जाके शरीरते बिजुली लज्जित होति है ताके आगे सुवर्णको टूक कहा पदार्थ है ५६ ॥

खड्गबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ आदि अन्त्य चारं चरण तृतिय चरणके बीच । बारह पांच उनीसव अन्त्य चरण में सीच ५७ ॥

एकवर्णएतेरचो चित्ररीति पहचानि । कीलडार कब्जा पढ़ो खड्गबन्धसोजानि ५८ ॥

खड्गबंधचित्रम् ॥



टी० ॥ चारों चरणके आदि अन्त्यमें अरु तृतीय चरणके मध्य में अरु चतुर्थ चरणको पाँचवां अक्षर बारहवां अक्षर उन्नीसवाँ अक्षर इतने स्थानन में एकही अक्षर धरिये यह खड्गबन्ध की रीति है अरु बाँचिबे की यह रीति है कि प्रथम कील पढ़िये पुनि डार पढ़िये पुनि कब्जा पढ़िये अरु कीलमें तरवार की नोक में अरु कटोरी में अरु घुण्डीमें एकही बर्ण धरिये इन चारि अक्षरन में बारह अक्षरजानिये ५७। ५८॥

यथा॥ स०॥ मैं बलिजाउँ तिहारी अहो तियतू जिनि रूसि रहै जियरामें। मैनसों मोहन मोहितह्वै रह्यो काहे न आनतिहै हित तामें। मैं सुख केलि रची चलि या समै होहिं अनन्द लखे सुखमामें। मेट तियामें रली पगिमानमें एरी अनोखी रमै किन वामें ५९॥

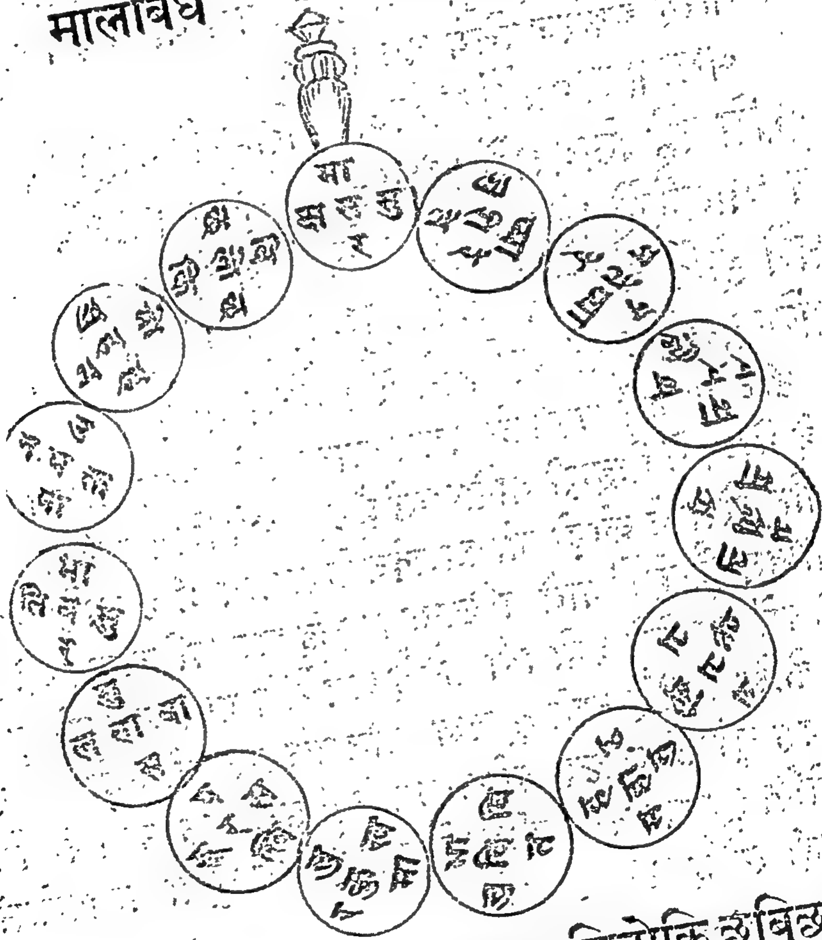
टी० ॥ यहाँ सखीको बचन नायकासों मान मोचन करायबे में हे तिया मैं तिहारी बलिजाउँ हूँ तू अपने जियमें मतिरूसि रहै अर्थात् रिसको छोड़ो जो कामदेव के समान श्रीकृष्ण हैं सोउसी मैं मोहितह्वैरहे हैं याते अधिकरूप तुहूहै अरु अधिकरूप श्रीकृष्ण हैं तिनमें तू प्रीति क्योंनहीं करै है अब मैंने या समय तेरे सुखके लिये केलि रची है ताते तू चल प्रीतमकेपास तो बड़ो आनन्द होय अरु तुमको उत्कृष्ट शोभामय देखैं हम अरु मानमें पगिके हे अनोखि तू रली नाम क्रीड़ा मेटति है याते तू वा नायककेसंग क्यों नहीं रमै है ५९॥

मालाबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ डोरा क्रमसों तीनि पढ़ि गोलक्रमसों चारि। पांच वर्ण मनियाँ धरो सात पढ़ो निरधारि ६०॥ सूधे प्रथमसुमेरसों मनियांबाँचो मित्र। पुनि सुमेर उलटो पढ़ोमाला बंध सुचित्र ६१॥

टी० ॥ डोराकी रीतिसों तीन अक्षर ठाढ़े पढ़िये पुनि मध्यका

अक्षर छोड़िके दक्षिणावर्त्तकरिके चारि अक्षर पढ़िये याही क्रमते सुमेरु सों एक एक मनियां पढ़िये पुनि अन्त्यमें सुमेरको डोरा उलटो पढ़िये पुनि दक्षिणावर्त्त सुमेरु के चारअक्षर पढ़िये सो मालावन्ध चित्र जानिये ६० । ६१ ॥

मालाबंध चित्रम् ॥



यथादण्डकम् ॥ मासर क्षमासुर विलोकि छबिछाकि मोहनसुमोहन उपमानउत्तमा । भावरतिभासुर सुवासलसु वासपराखि रूपसाखिसुकुमार सुखमा ॥ भावितसुभाषित हहा तुमहठतु चितवै न चितवै तासूं मानतासमा । मारहि रमावहिन तेरेप्यारे प्यारीते जुप्यारेतरसमासुरक्षमा ६२॥

टी० ॥ यहाँ सखीको बचन नायकासों मानमोचन करावे में मासरनाम तू लक्ष्मीके समान है क्षमासुर नाम शान्ति के देवता हैं अर्थात् सतोगुण विष्णुमें हैं सो विष्णु श्रीकृष्ण हैं या कहनेते यह फल सिद्धभयो कि शान्ति प्रकृतिसों क्रोध नहीं चाहिये तिनकी छबि बिलोकि के तू छकि कैसे है मोहन की सुमोहन नाम भले प्रकारसों मोहनवारे हैं अरु याहीते उपमा उनकी कहिबेमें नहीं आवै है अरु कैसे हैं भाव रतिभासुर नाम इच्छाके अनुसार प्रीतिमें देदीप्यमान हैं अरु सुगन्धकरिके लसिरह्यो है बस्त्र जिनको या रूपको हे सखी तू परखिनाम पहिचान अन्तरंग सखी नायकाहूको सखीकरिके बोले हैं अरु सुकुमार सुखमा नाम कोमल है उत्कृष्ट शोभा जिनकी या कहनेते नायक की किशोरावस्था व्यंगभई अरु भावित सुभाषितनाम तेरे हितकरिके युक्तहै मेरो कथन अर्थात् मानबे योग्यहै याते मैं हाहाकरतिहौं तुम हठ वृथा करतिहौ चितवै न चितवै नाम वेतो चितवत हैं परन्तु तू नहीं चितवै है तासों मानता समा नाम तासमयमें तासूंमान चाहिये यह काकु अर्थात् न चाहिये वे कैसेहैं माराहि रमावहि नाम कामदेवके रमावनेवारे हैं न तेरे मन प्यारेनाम ऐसे जो प्यारे हैं सो तेरे मनमें नहीं यह प्रश्नमें काकु अरु प्यारीते जुप्यारेतेनाम नायकाते अरु नायकते जो रस है ताके बीचमें सुरक्षमा नाम देवताकीसी क्षमा चाहिये अर्थात् नायका अरु नायक दुहूनको क्षमा चाहिये याते रस बन्यो रहत है यह दृष्टान्त सर्व नायका नायकन को सखीने वा नायकाको दरशायो ६२ ॥

मयूरबंधलक्षणम् ॥ कुंडलिका ॥ नाभी जंघा अंगुली जंघ नाभि बिपरीत। याही क्रम दूजो चरण हृदय कण्ठ पढु मीत ॥ हृदयकण्ठ पढु मीत शीश पुनि चोंच चोंच शिर। शिखा शीश पुनि कण्ठ पक्ष ऋजु उलटो पढ़ि फिर ॥ पीठ पुच्छकी ग्रन्थि पुच्छकेवर्ण बिनाभी। पुच्छ

ग्रन्थिते जोड़ि नाभि तल पुनि पढ़ि नाभी ६३ ॥

टी०॥ प्रथम नाभिको वर्ण पढ़िये पुनि जंघा पुनि अंगुली पुनि जंघाके वर्ण उलटे पढ़िये पुनि नाभि याही क्रमते द्वितीय चरण पढ़िये पुनि नाभि हृदय पढ़िये अरु कण्ठके वर्ण पढ़िये पुनि शीश का अक्षर पढ़िये पुनि चोंच पुनि चोंच पुनि शीश पुनि शिखाके अक्षर पढ़िये पुनि शीश पुनि कण्ठके वर्णको उलटो पढ़िये पक्ष के वर्ण गतागत पढ़िये पुनि पृष्ठकेवर्ण अरु पुच्छकी ग्रन्थिकोवर्ण पढ़िये पुनि पुच्छके एकएक पंखके वर्णनको पुच्छकी ग्रन्थिसों मिलाइ के पढ़िये पुनि नाभिके नीचेकेवर्ण पढ़िये पुनि नाभिमें समाप्ति कीजिये सो मयूरवन्ध चित्र जानिये ६३ ॥

यथा ॥ स० ॥ मासम सोहित सोम समा रस सो लखिये सरमा परमा। सारस नैन ननै सुवनै सरसा सब पासु सुपाव समा ॥ मैं बलि मोहनके तन सोहन सैनन वैनन ल्योवनगा। मानहु गानहि मैन सु आनन गौन करो नव प्रानरमा ६४ ॥

टी० ॥ नायक मानीसों सखीका वचन मानमोचन करायबेमें कैसी है नायका की मासम सोहित नाम लक्ष्मीके समान शोभित ह्वैरही है अरु सोमसमारस नाम चन्द्रमा के समान है रसजामें अर्थात् अमृतमय है सो नायका को लखिये सरमा नाम सरोवर के बीचमें ताकी परमानाम उत्कृष्ट शोभा सारस नैनन नाम नेत्रनकरिके तुम कमलहौ अरु नैसुवनै नाम यह नीति सुन्दर बनै है याको व्यंग्यार्थ यह है कि वह नायका यासमय सरोवर में है अरु तुमहूं कमल नेत्रहो याते तुम्हारो अरु वाको संयोग बनै है अरु सरसा सब पासुनाम रसकरिके सहित सम्पूर्ण पदार्थ पास ह्वैरह्यो है अरु यासमयमें उद्दीपन बिभावहू है कि सुपावस मा नाम सुन्दर पावस ऋतुकी मानाम शोभा ह्वैरही है मैं बलि मोहनके तन सोहननाम मोहनकेतन सुहावनेपर मैं बलिजाऊंहूं

अब लीजिये चलिके वनमा नाम जलके बीचमें कटाक्षनकरिके बचनकरिके वा नायकाको मेरे गान नाम कथनको मानो हे मैन सुआनन नाम कामदेव सों सुन्दर मुख तिहारो गौनकरो नाम चलो नव प्रान रमा नाम हे नूतन प्राणके रमावनेवारे ६४ ॥

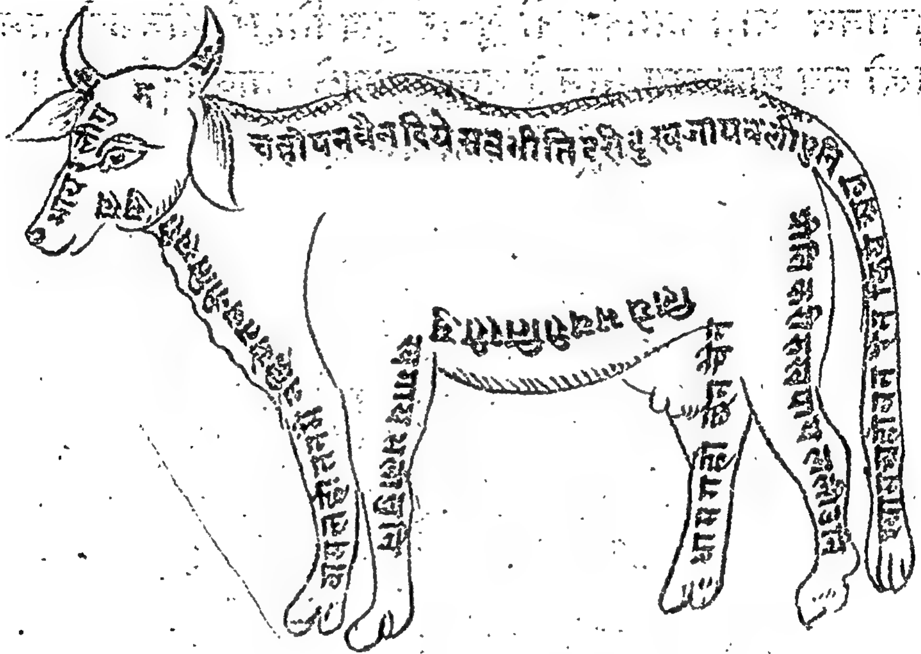
मयूरकाबंधचित्रम् ॥



कामधेन्वाकारलक्षणम् ॥ दो० ॥ युगयुग अक्षर पुच्छते छोड़ि पढ़ो जहँ मित्र । एक छन्द बहुरूपधरि कामधेनु सो चित्र ६५ ॥

टी० ॥ दोदो अक्षर पुच्छते छोडिके बाँचिये छोड़े अक्षर अन्त्य में जोड़ि दीजिये तहाँ छन्द तो एकहि अनेक प्रकारकेरूप धारण करिके प्रगटै है सो कामधेनु चित्र जानिये ६५ ॥

कामधेन्वाकारबंध चित्रम् ॥



यथा ॥ स० ॥ श्याम अहो बनरैन किये अब प्रीति करी रुख पाय लली उनि। धाम गहो छन चैन लिये भव रीति ररी मुख गाय भली सुनि ॥ बाम लहो तन मैन हिये तव नीति खरी सुख भाय रली गुनि। नाम चहो पनबैनदिये सबभीति टरी दुखजाय बली पुनि६६॥

टी० ॥ याकामधेनुकोअर्थआगेसतधेनुमेंकहैंगे सोजानिये६६ ॥

इति श्रीमत्काशिराज विरचित चित्रचन्द्रिकायां आकार चित्रवर्णनोनाम षष्ठः प्रकाशः ६ ॥

अथगुणबंधचित्रम् ॥ दो० ॥ काहू गुणको बांधिये जहँ आकृतिको छोड़ि ॥ सो गुणबन्ध विचित्रयह चित्र कहत कबि जोड़ि १ ॥

टी० ॥ जहां आकार तो काहूको लिखिये नहीं परन्तु कोऊ एक गुणको बँधाय छन्दमें बांधिये ताको कबिजन जोड़िके नाम बनायके गुणबन्धचित्रकहतहैं यह परमविचित्रचित्र जानिये १ ॥

नामैकगुणबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ एक देशके नाम सों छन्दबन्धकरुमित्र ॥ ताहि सुकबिजन कहतहैं नाम बन्ध सो चित्र २ ॥

टी० ॥ एक देशके नामसों नाम एक जातिके नाम न करिके अर्थात् पशु जाति पक्षी जाति अरु वृक्ष जाति इत्यादिक जाति जानिये तिनके नामन करिके जहां छन्द रचिये ताको नामबन्ध चित्र जानिये अरु नामगुणबन्धको यहअर्थहै कि पढ़िबेमें पशुन को नाम आवै अथवा पक्षिन को नाम आवै अरु वृक्षनको नाम आवै इनको अर्थ और होय सो नामबन्ध जानिये २ ॥

यथावृक्षनामगुणबंध ॥ स० ॥ नीम दई इतनी तिय मानकी चूक न लालाकि तू ने बिचारी । काशीके राज अनारपने ते रही बरसों अमिलीह्वैपियारी ॥ बेर इतेक पै और तियाकी पिया पकरी कर भूलिकै नारी । जा मुनि सेवै सदा फल पावै सो तासूं न रूसिये चम्प लतारी ३ ॥

टी० ॥ यहनायका मानिनी है ताको सखी मान मोचन करावैहै हे तिय तू अनै लालानाम श्रीकृष्णकी चूक नामतकसीर न बिचारी येती बड़ी मानकी नीम दीनी नाम तूने काशीके राज कविको नामहै अनारपने ते नाम अपने अनाड़ी पनेते हेप्यारी तू अपने वरसों नाम पति सों अमिली नाम अन मिली ह्वै रही है बेर येतेकपै नाम बिरोध इतनी बात पर और तियाकी पियाने भूलिके कर पकरी नामगही हे नारी जामुनिसेवै नाम जाकृष्णको मुनिसेवाकरै हैं सदैव फलपावै हैं तासों न रूठिये हे

चंपलतारी या सवैयामें एतेक वृक्षनकेनाम कढ़तहैं नीम चूक लाला अनारवर आमिली बैर पकरी नारी जामुनि सेव सदाफल रूस चंपलता ये चौदहनाम जानिये ३॥

द्वितीयग्रामनामबंधो । यथा ॥ दण्डक ॥ राखिये वनारस न पानीपति ऐसो आली वे तो लखनौर यह मेरट सुमानिये । बाल तू जो मैनपूरी गुन आगरो सुनीही कालपी सों लड़िआई कानौज बुद्धि जानिये ॥ काश्मीर ऐसो रंग मानिकपुर दीजे अंग कानपूर दिये काहू चित्तौरन ठानिये। हांसीकरैं सखियां विनतीकरूं काशीराज मानतज प्यारी चलि पिय कोयल आनिये४॥

टी० ॥ यहमानवती नायकाहै ताको सखीमान मोचन करावति है राखिये बनारसनाम रसको बना राखिये न पानीपति ऐसोआली नाम हे आली ऐसो पतिफेर न पावैगी वेतो लखनौरनाम वे नायक तो और तियाको नहीं देख्यो है यह मेरट सुमानिये नाम यह मेरो भलो कहनोमान बाल तू जो मैनपूरी नाम हे बाल तू तो कामदेवकरिकै पूरितहै अर्थात् प्रौढ़ाहै अरु गुन आगरो सुनीहीनाम मैंने तोको गुनीमें आगर सुनीही काल पीसो लड़िआई नामकालके दिवस तू पीतमसों लड़िआई कानौज बुद्धिजानिये नामकहा तिहारी नौज बुद्धिजानिये अर्थात् पीतम सों लड़िआई तिहारी बुद्धिकी अग्रता कहा जानिये अरु काश्मीर ऐसोरंग नाम काश्मीर जोकेशर तद्वतुहै रंगतिहारो तामें मानिक पुर दीजै अंग नामता अंगमें माणिक मणिके पूरैनाम जड़ेभये जो आभरणहैं दीजिये अर्थात् पहिरिये कानपूरादिये काहू नाम काहूके कान भरिदियेते चित्तौरन ठानिये नाम चित्तमें और बात न विचारिये हाँसीकरैं सखियां नाम इन बातनमें सखी हास्य करै हैं याते मैं विनती करूंहूं कि मानछोड़िके पीतमकोगरे सूं लगाइये या कवित्तमें इतने ग्रामकेनाम कढ़तहैं बनारसपानी-

पति लखनौ रमेरठ मैनपुरी आगरा कालपी कन्नौज काश्मीरदेश मानिकपुर कानपुर चित्तौरगढ़ हाँसी येतेरह नामजानिये ४ ॥

भाषाछलगुणबन्धलक्षणम् ॥ दो० ॥ पढ़िबेमें भाषा अवर अर्थ सुनाया और। भाषा छल गुण बन्धसों चित्र कहत कबि मौर ५ ॥

टी० ॥ जहाँ पढ़िबेमें भाषा और होय अरुअर्थमेंभाषा और होय ताको भाषाछलगुणबन्ध चित्रकहत हैं जे कबिनके मुकुटहैंते५ ॥

यथा ॥ दो० ॥ आसमान लालाबुरो सुलह सुभावन बाल। बादरूवायन बीसमा जायजाय बकमाल ६ ॥

टी० ॥ सखीका वचन शिक्षारूपी नायकसों आसमाननाम सनमान की जो आसाहै सो तौ बुरोनाम बुरी है सुलहनाम भले प्रकार सों लहो अरु सुभा नव बाल नाम सुन्दर है भानाम कांति जाकी ऐसी जो नूतन बाल है अर्थात् नवोढ़ाके मनायबेकी आसा करनी तो बात बुरी है याते तुमही बांकुलहो अरु उद्दीपन विभाव हूँ यासमय ह्वैरह्योहै कि बादरूवाय नाम बादर अरु बायु इनकरिके नवी समानाम बर्षाको समयो झुकिरह्यो है तामें जाय जाय बकमाल नाम जाँय हैं जाँय है बगलान की माला नाम पंक्ति अर्थ तो याको भाषामेंभयो परन्तु पढ़िबेमें फ़ारसीसी दीखैहै ६ ॥

अनेकभाषागुणबन्धलक्षणम् ॥ दो० ॥ एकछन्द रचिये जहाँ बहुभाषाते मित्र। कबि कोबिद सबकहतहैं भाषा बन्ध बिचित्र ७ ॥

टी० ॥ एकछन्दमें जहाँ अनेकदेश की भाषाधरिये सो अनेक भाषा गुण बन्ध चित्र जानिये ७ ॥

द्विभाषागुणबंधयथा ॥ धृतिछन्दभेद ॥ कंजसो मुखनैनखंजन अबरूयेचूंकजकमां। कीरकेसम नासिका द्युति गेसुये दामेज्जमां ॥ दन्तदाड़िमहास्यविद्युत लाल

लब् अमनोअमां । आजुसोतियतोहि जोवत गहनदी दैआसमां ८ ॥

टी० ॥ दूतीका वचन नायकसों नायकाको रूपाधिक्य वर्णन करिके नायकको लैजायो चाहति है कि कमलके समान है मुख जाको अरु नेत्रहैं खंजनसे अरु अबरूये चूं कजकमां नामभौ हैं जाकीटेढ़ी कमानके समानहैं अरु शुकके समानहै नासिका की द्युति अरु गे सुये दामेज्ज़मां नाम बाल जाके जाल संसारकोहै अर्थात् जिनवालनमें मनुष्य फँसिजातहैं अरु दंतहैं अनारसे अरु हँसी जाकी विजुलीसी अरु लाललब अम्नो अमांनाम अरुण ओष्ठ जाके वे आफतहीनहैं नाम दुखनहीं है जामें अर्थात् सुख रूपीहैं सो तिया आज तुमको जोवतनाम देखतहै गहनदीदै आ-समांनाम ऐसी नायका कबहूं आकाशहूने नहीं देखीहै अर्द्धअर्द्ध चरणमें भाषा अरु आर्द्ध अर्द्ध चरणनमें फ़ारसी जानिये ८ ॥

द्वितीयचतुर्भाषागुणबंधयथा ॥ वृत्तिछन्दभेदा ॥

प्रेम पालत प्रीतितोरे अपुनते वहनारिको । अह्मएभणि अंपुणे सहिसोसवतिवसाणुओ ॥ किं करोषिमुधाश्रमं दयितोमयीहर तोपिनो । गर्बआवे आपसे रफ़तन् न ख्वाहम् होसुहो ६ ॥

टी० ॥ यहां नायकाको वचन सखीसों आपुही ते प्रीतितोरे प्रीतमके प्रतिपालत भयेहूं ऐसी संसारमें नारि कौनहै यहकाक अर्थात् कोऊ नहीं है याते अह्मए भणि अंनाम अस्माभिर्भणितं अरु पुणोनाम पुनः सहि नाम सखि सो नाम सहनायकः स-वति वसाणुओ नाम सपत्नी वसानुगः याते हेसखी मैं बारबार तोसों कहतिहौं कि नायक मेरो सौतिनके बसह्वै रह्योहै किं-करोषि मुधाश्रमंनाम हे सखी तू वृथाश्रम क्योंकरै है दयितोम-यीहर तोपिनोनाम दयित जो नायकहै मेरो सो मोमें अनुरक्तहू नहीं है गर्व आवै आपसेनाम जो कदाचित् आपुहीते आवै तो

आत्रोरफतन् न ख्वाहम् हो सुहोनाम जायवो मैं नहीं चाहतिहूं यामें होनीहोय सुहाय अर्थात् पतिकेपास मैं न जाऊंगीयामेंतेरी उपाय वृथाहै वह आवेतो आवो प्रथम चरण भाषा द्वितीयचरण प्राकृत तृतीय चरण संस्कृत चतुर्थचरण उर्दू ज़बानजानिये ९॥

तृतीयअष्टभाषागुणबंधयथा॥ धृतिछंदभेदोयम्॥

चन्दते मुखचारु सोहै एअण तो हरणी जिया। केडजे बूँन बजलाधूँ कलश जित्स्वकुचाश्रिया॥ चम्पकाहुनि फाररङ्गी आखि तुसि असि चुक्किया। बारकांइ हरिकरो छौरो बुबीं हज्ज कुल्लिया १०॥

टी०॥ यहांदूतीकाबचन नायकसों नायकाको रूपाधिक्य वर्णन करिके नायकको लैजायो चाहति है चन्दते मुख चारु सोहै नाम चन्द्रमाते सुन्दर मुख जाको सोहै तूहै अरुण अण तो हरणीजिया नाम नयनतः हरिणीजिता अर्थात् जिननेत्रकरिके हरिणीजीति लई है अरु कैड जेबूँन बजलाधूँ नाम कैड जो है कटि ताकी जेबूँ कहिये ताके समान बस्तु नव जलाधूँ नाम नहीं देखी मैंने अरु कलश जित्स्वकुचश्रिया नाम अपने कुच की शोभाकरिके जीती है कलश की शोभा जाने अरु चम्पकाहुं निफारंगी नाम चम्पका जो चम्पकपुष्प ताहूंते फार नाम अधिक है रंगी नाम रंग जाको आखितुसि असि चुक्किआ नाम यह बात तुसि नाम तोसों असि नाम मैं आखि चुक्किआ नाम कहिचुकी बारकाँ इहरि करौछौ नाम अब हे हरि बारनाम बिलम्बकाइं नाम काहेकूं करौछौ नाम करोहो रौबुंबी हज्जकुल्लिया नाम यातेरो नाम तावो बुंबी नाम देखो हज्ज् नाम आनन्द कुल्लिया नाम परिपूर्ण याको भावार्थ यह है कि नायका अतिसुन्दर है याते जायके वाको सुख देखिये प्रथम अर्द्ध चरण भाषा द्वितीय प्राकृत तृतीय गुजराती चतुर्थ संस्कृत पंचम महाराष्ट्री षष्ठ पंजाबी सप्तम मारवाड़ी अष्टम फ़ारसी अष्टभाषा जानिये १०॥

कल्पवृक्षगुणबंधलक्षणम् ॥ दो० ॥ सूधेक्रमते बांचि पुनि काहूकाहू रीति । भाषा छन्दअनेक जहँ कल्पवृक्ष की नीति ११ ॥

टी० ॥ प्रथम सूधे क्रमते पढ़िजाइये पुनि काहूकाहू रीतिके पढ़िवेमें अनेक भाषा अनेक छन्दकढ़ै जहाँ सो कल्पवृक्ष गुणबंध चित्र जानिये ११ ॥

अंतर्गतपाठलक्षणम् ॥ दो० ॥ अरुणाक्षर निलगावते निकसत छन्द नवीन । त्योहीं पीताक्षरनि पढ़ि यह क्रम जानि प्रवीन १२ ॥

टी० ॥ कल्पवृक्ष चित्रमें अंतर्गत छन्द भाषा पढ़िवेकी यह रीतिहै कि अरुण अरुण अक्षर जे मिलापी पंक्तिके हैं तिनकेपढ़िवेमें एक छन्द कढ़ै अरु तैसेही पीतअक्षरनके पंक्ति मिलापी अक्षर पढ़िये दूसरो छन्द कढ़तहै याही क्रमते अरुण पीतरंगकी मिलापी पंक्तिनके पढ़िवे ते अनेक भाषा छन्द कढ़त हैं सो जानिये १२ ॥

अथकल्पवृक्षबन्धचित्रम् ॥

कल्पवृक्षस्यप्रथम ॥ दो० ॥ काशिराज लहि शम्भुते कलपवृक्ष सो भाखि । मत कबि जगै प्रभाव शिव नर रस बर लहु चाखि १ ॥

टी० ॥ या दोहामें कल्पवृक्ष वर्णनको कैसो है कल्पवृक्ष कि काशिराज कविने लहि शम्भुते नाम शिवकृपाते पायके भाषत है सो कैसो है कि कविनके बुद्धिको प्रकाश करनवारो है अरु याको प्रभाव शिवनाम कल्याणरूपी है अरु याको श्रेष्ठ रस जो नरचाखेंगे सोपावेंगे अर्थात् याको जोपढेंगे सोयाको रसजानेंगे१॥

द्वितीय ॥ सो० ॥ सृगहरि मनी नवंध गलगतलर भासतपरं । सेजं नराम तंधरची सुरनवसु पालिनव २॥

टी० ॥ यहां श्रीकृष्णकी मालाको कवि वर्णन करत है कि सृगहरि मनीनबंध नाम सृग जो माला श्रीकृष्णकी रत्न मणिन करकेबंधीभई गलेमें ताकीलड़ीप्राप्तभई भासतहै परंनामउत्कृष्ट सेजं नाम साइयं माला न रामतंध नाम नरनके बुद्धिकी अंध करन वारी है अर्थात् मनुष्यकी बुद्धि यामें प्रवेश नहींकरैहै काहे ते कि रची सुरन व सुपालिनव नाम देवतानिने बनाई है नूतन द्रव्यको संचित करिके २ ॥

तृतीय दो० ॥ जलज सुवास वर देव नुप रम सु अद्भुतमंत्राभुवन सँभारन बसिहृदयद्यावाभूमीतंत्र ३ ॥

टी० ॥ यहां कवि ब्रह्माजू को बर्णन करतहैं जलज सुवास वरदेवनु नाम कमलमें सुन्दर है स्थिति जाकी ऐसे देवतानि में श्रेष्ठ जो हैं ब्रह्मा तिनको परम सु अद्भुतमंत्र नाम उत्कृष्ट सुंदर अद्भुत मंत्र यहहै कि भुवन सँभारन बसि हृदयनाम लोक को बनावनों जाके हृदयमें बसि रह्यो है द्यावा नाम स्वर्ग भूमीनाम पृथ्वी तामें तंत्र नाम अछंद अर्थात् निरन्तर करिके ३ ॥

चतुर्थबिग्गाहा ॥ छं० ॥ प्यार चुभइ तोरे कह लाला को वापरा अमित्रि । मनोसाधि कास शर लायो तूं जो लायक नीरस तत्रि ४ ॥

टी० ॥ यहां दूतीका वचन मानी नायकसों नायका परकीया हे लाला प्यारचुभै नाम प्रीति लगायकै तोरै नाम तोरिडारै कहौ ऐसो कोवा नाम कौन परा अमित्रि नाम उत्कृष्ट पात्रहै यहां बक्रोक्तिहै अर्थात् ऐसे पात्र तुमहींहौ मनो साधि काम शरलायो नाम ऐसी तुम्हारीप्रीत लगी कि जैसे कामदेवको सध्योभयो शर लगैहै अर्थात् कामोदीपन करिके हे लायक तूं जो तहां नीरसता करै है या कहनेते संयोग-करायबो व्यंगभई ४ ॥

पंचमबिग्गाहा ॥ छं० ॥ वारिद बूंदं हटक भला

जसे भला कुहुबेली ह्वै । सा सुल आरद्र लीन सालगा केलि गलाला तनेच्चै ५ ॥

टी० ॥ यहां स्वयं दूती नायकाको वचन नायकसों वारिदवृंदं हट नाम मेघ समुदाय हठ करिके भ जो नक्षत्र तिनकूं लाज से नाम लज्जितसों कर्‍यो अर्थात् आच्छादित कियो कुहुबेली ह्वै नाम अन्धकाररूपी लताहूवैके साघटा सूलरूपी आरद्रतामें लीन भई पुनि सा नाम सोई लगातनेच्चै नाम तनके चुवन लगीं केलि गलाला नाम हे केलिचतुर या मेघके वर्नन ते अंधकार संकेत द्योतन भयो ५ ॥

षष्ठउग्गाहा ॥ छं० ॥ राम वरं नर जक्त धरं जय जब वंद्यं सद्यै तारे । स्फुटंते मुख चन्द्रोपकाम को दिनास्मात्छत्रं प्यारे ६ ॥

टी० ॥ यहां कवि रामचन्द्रकी स्तुतिकरै है कैसे हैं राम वरं नर नाम पुरुषोत्तमहैं पुनि जक्तधरं नाम जगत्के पालन कर्त्ताहैं जय नाम तिनको मैं नमस्कार करूं हूं जब वंद्यं सद्यै तारे नाम जवहीं बन्दना कीजिये तबहीं तत्काल मोक्षकूं देतहैं पुनि स्फुटं ते मुख चन्द्रोपकाम नाम प्रसिद्ध मुखचन्द्र है जिनको उपकाम नाम समीपहै कामजाके अर्थात् जाके मुख देखेते सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होत है को दिनास्मात्छत्रं प्यारे नाम अस्मात् नाम या रामचन्द्र ते दीनको छत्र अरु प्रीति करनहारो कौनहै ६ ॥

सप्तम दो० ॥ वरसव गीतव नत अहत सुलभ गंग के द्राव । धी अंकुर प्रगटं इहाँ रँगत छापु भव भाव ७ ॥

टी० ॥ यहां कवि गंगाजीकी स्तुति करतहै कैसीहैं गंगा जिन के द्राव कहे करुणाते श्रेष्ठ सम्पूर्ण गीतकहे मंगल सहजहीं बनतहै अहत नाम विघ्न करिके रहित पुनि इहां नाम या लोकमें धी नाम बुद्धिके अंकुर प्रगट होतहैं अरु परलोक में रँगत छाप भव भाव नाम भव जो हैं महादेव तिनके भावनाम रूपकेछाप

में नाम मुद्रामें रँगि देति है अर्थात् शिवरूप करिदेत है ७ ॥

अष्टम दो० ॥ मनुओ पल्लव अरुणसे जावकभरी कितार । तरणि सु अव पद अड़िवसो किरण तुंड साकार ८ ॥

टी० ॥ यहां राधिका के चरणके महावरको वर्णन जानिये मनुओ नाम मानो अरुण पल्लवसे जो चरणहैं तिनमें जावक जो महावर तिनकी कितार नाम पंक्ति भरीभई या भांति सोहतिहै कि जैसे तरणि सु अवपद अडिव सो नाम सूर्य्य अवस्थिर ह्वै कै चरणमें बास कियो है किरण तुंडसाकार नाम किरणको मुख आकार सहित ह्वैरहे हैं अर्थात् किरण महावरी सादृश्यते चरण सूर्य्य सादृश्यकी दृढता भई सो जानिये ८ ॥

नवम दो० ॥ गणिकागति असे इभ सरसु यों पुल की भइ लाभ।मदमतागी पिक सुवहु डुबये चख एणाभ ९ ॥

टी०॥ यहां सखीको वचन सखीसों सामान्यानायकाको रूप वर्णनमें गणिकाकी जो चालहै सो असनाम याभांति इभ नाम हाथी ताहू ते अधिक गति मन्द है सो गणिका लाभ पायके या भांति पुलकित ह्वैके मदमतागी नाम मदमें उन्मत्त ह्वैके ऐसी गी नाम बाणी ताकरिके पिक जो है कोकिला तिन्हें डुबोयदिये अर्थात् निरादरकिये अरु देहरी दीपक न्यायकरिके नेत्रते एणाभ नाम हरिणकी जो आभा कान्तिहै ताहूको डुबोयदई ९ ॥

दशम दो०॥ भरि क्रोधन तबतनि बनिय समकरितत्व अजानु।अब मुरारिजी ठानि रिस निरो रह्योहै मानु १० ॥

टी० ॥ यहां कलहन्तरिता नायका सों सखीको वचन हे बनिय नाम हे बनड़ी तब तो तुम क्रोधमें भरिके तनी नाम खिचिके तत्त्व जो नायकहै तासों समकरि नाम बराबरीकरीहै अजान अब मुरारिजीहू ने रिस ठानिके बल तुम्हारो मानु जो अहंकार सोई मात्र रह्यो १० ॥

एकादश सो० ॥ अरुण बसन पियल्याउ सुघनी देवन झरभई । सावन मध्य झुलाउ चलि बन कुंजन पुंजसें ११ ॥

टी० ॥ यहां सामान्या को वचन नायक सों हे पिय अरुण वस्त्रको ल्याउ काहेते कि भलीभांति सों घनी मेघकी झरभईहै सावनकेबीचमें झूलाझुलाइये चलिकेबनकेकुंजकेपुंजनमें ११॥

द्वादश दो० ॥ वरन वरन घन भयाहै जीडा लाग डरानु । दारुण दुख अब गरपर्‌यो तिय बिनु जुला समानु १२ ॥

टी० ॥ यहां नायक को विरहरूपी वचन सखा सों नानाप्रकारके रंग को बादरभयो है याते जीव मेरो डरपनलग्यो अरु दारुण नाम कठिन दुःख अब गरे पर्‌यो तिय बिना नाम तियके बिरह ते जला समान अर्थात् मेघ अग्निकेसमानदाहकहै १२ ॥

त्रयोदश दो० ॥ तिय बानिक लखिजरतिहै सालसगर्‌यो गुमान । बल्लभ गललागी तुही परम सरस भरि तान १३ ॥

टी० ॥ यहां सखीको वचन सामान्या नायकासों यह है कि बानिक जो तेरो बनावहै ताको देखिके और जो तियाहैं सो जरै हैं अर्थात् कुढ़ै हैं अरु सालस नाम आलसयुक्त ह्वै रही हैं अरु गर्‌योगुमान नाम गर्व उनको गरिगयो बल्लभ जो पीतम ताके कण्ठ सों तुहीं लगी उत्कृष्टरस भरी तान गायके १३ ॥

चतुर्दश दो० ॥ करहु हौंद चलि सुखसदा गुललालासी यत्र । सुसदन प्रसून वरसभा समा ललन अब तत्र १४ ॥

टी० ॥ यहां दूती नायकको संकेतस्थानमें लैजायो चाहतिहै हे नायक जल भरे हौदे के तटमें चलिके सदैव सुख करौ गुल-

लालासीयत्र नाम गुललालापुष्पकी शोभाहै जा ठौरमें अरु सुसदन नाम सुन्दर भवनहै जहां अरु प्रसून नाम औरहु पुष्पन की श्रेष्ठ सभाहै अर्थात् फुलवारी है हे ललन अब ता स्थान के देखिबेको समय है १४ ॥

पंचदश सो० ॥ लूटत सुबास दीस गत जल लरजै युवा सब । करै नादि नय सीस सोइव कस हुसी नाथ नट १५ ॥

टी० ॥ यहां चीरहरण समयमें गोपिनको वचन श्रीकृष्णजी सों लूटत सुबास दीस नाम लूटतेभये सुन्दर बसननकूं देखिके गतजल नाम जलमें प्राप्तभई युवा जो तरुणीनायका ते लरजी नाम लचिके शीश नवाइके नाद जो पुकार ताको करतभई कि हे श्रीनाथ हे नट सो बस्त्र बकसहु अर्थात् देव १५ ॥

षोड़शाविग्गाहा छं० ॥ तो लूं इंदुन मुखसाजि आगे रति अति दीसिरतीअ । सो ल्या मिलाउ राता सोभा रमा सयानी नारि प्रीअ १६ ॥

टी० ॥ यहां नायकको वचन दूतीसों तोलूं इन्दु न मुख सजि आगे नाम वा नायकाके मुखके बनाउके आगे चन्द्रमा को वराबर नकरौं अरु रति अति दीसि रतीअ नाम कामपत्नी अत्यन्त रतीमात्र देखिपरै है सो नायकाको ल्यायके मिलाउ राता सोभा नाम अनुरक्त होय रही है शोभा जामें यह सुन्दरता की पराकाष्ठा जानिये रमा सयानी नारि प्रीअ नाम रमा जो लक्ष्मी ताहूते चतुर ऐसी जो नारि है सो मेरी प्यारी है १६ ॥

सप्तदश दो० ॥ ह्वैतस्कर तुमहनू मग जबगोरसलैबाल । काह कुटिलदासी निरत हसत नचतकरिताल १७॥

टी० ॥ यहां गोपिनका वचन श्रीकृष्णसोंहवै तस्कर तुमहनू मगनाम तुमचोरह्वैके रस्तामाऐहो जबबालगोरसलेतहै अर्थात्

जब गोरसलैकै कढ़ैहै तबहीं तुम रस्तालूटोहो हे काहू कुटिल हे दासी निरतनाम हे कुब्जा मैं निरत या उपरांत हँसतहौ अरु नचतहौ ताली बजाय करिके १७ ॥

अष्टादश दो० ॥ परकर गहल तिया निरखि जिय तर्फी यो जाय । ईहा नचिबो मोलबसि बन तन गति लघु गाय १८ ॥

टी० ॥ यहां नायका गणिका सखीको बचन सखीसों तिया जो सामान्याहै सो परकर गहल नाम और नायकाको हाथ गहे भये नायककूं देखिकै या भांति जियमें तर्फिजाय है नाम व्याकुल होति है ईहा कहै हाव भावादि चेष्टा अरु नचिबो कहै नृत्य करिबो यह सब मोलके बशहैं धन पराधीन तासों करतिहै परन्तु मनकी उमंगसों लघुगति नाम शीघ्रगति सों गान नहीं बनि सकतु है १८ ॥

एकोनबिंशति सो० ॥ तूं शशि बदना कीन लैसलिलज मृग बनेसर । अक्षय सुरकन्या हीन कोकिलकरि मृगराजवर १९ ॥

टी० ॥ यहां सखीको बचन नायकासे है शशिबदना तूं कहै तैंने सलिलज नाम कमल अरु हरिण अरु बनेसर नाम बने भये तालाव अरु अक्षयसुर कन्या नाम क्षयकरिके रहित ऐसी देव कन्या अरु कोकिला करि नाम हाथी अरु मृगराजवर नाम श्रेष्ठ सिंह लै नाम लैकै हीन किये अर्थात् तैंने अपने अंग की शोभा करिके जीतिलीन्हे हैं १९ ॥

बिंशतितम दो० ॥ सरस बड़े अम्बुज नहीं नहिं तुव दृग दीनी हार । सदा जु कोकिल सुमतुसों रटत तुलतन पुकार २० ॥

टी० ॥ यहां सखीकी उक्ति नायका सों सरस बड़े अम्बुज

नहीं नाम रसयुक्त बड़े कमलनहींको तेरे दृगने हारदीनी अर्थात् हरायदिये अरु सदैव जो कोकिला सुमतुसों नाम भलेमत सों रटतुहै परन्तु तुलै नहीं है पुकार अर्थात् तेरी बाणीकी मधुरता को नहीं पावै है २० ॥

एकविंशतितम दो० ॥ बन लतानिमें तुम पढ़े दीसि चलन अब इस्क। तजह्नु गैल लघु चिसिक तुव आया नहिंदे निस्क २१ ॥

टी० ॥ यहां सामान्या नायका को वचन नायक सों बनकी लतानि में तुमने मोहिं भेज्यो अब तुम्हारो चलन अरु इश्क दीसि पड़्यो अर्थात् तुम्हारी प्रीति अरु रहनि देखिपड़ी हमारी गैल छोड़ो लघु चिसिक तुव नाम तुम्हारी चिस्का जो चाह सो लघु कहे ओछी है काहे ते कि तू आया नहीं वहां संकेत में दे निस्क नाम देडालो मोहर हमारे मोलकी २१ ॥

द्वाविंशतितम ॥ दो० ॥ कर दीजिय मृगनैनि सब कहत वचन रसखान । वृक्ष लतन गुथे दासने होतो ह्यां दधि दान २२ ॥

टी० ॥ यहां श्रीकृष्णको वचन गोपिन सों कर दीजिय नाम हमारी भेट दीजिये हे सम्पूर्ण मृगनैनी यह वचन रस भर्‌यो तुमसों मैं कहतहूं वृक्ष लतानिते गुथिरहे हैं अत्यन्त करिके अरु यहां दधिको दान होतरह्यो है अर्थात् सो तुम न देवगी तो हम जोरावरीलेंगे या बनमेंसहाय तुम्हारो करनहारो कोईनहींहै २२ ॥

त्रयोविंशतितम ॥ सो० ॥ फलत लतनि वर दाख सारित सर वर रस नया । आछे मथे सुभाख ये बेरा चलि ललन मिलु २३ ॥

टी० ॥ परकीया नायकाकूं दूती उद्दीपन विभाव श्रवण करायके अभिसार करायो चाहति है फलिरही हैलतानिमें दाख

श्रेष्ठ अरु सारित नाम नदीन का समूह अरु सरोवर में रस जो जल सो नूतन है आछेमथे सुभाव नाम अच्छीतरहसूं बिचारो भयो मेरो वह वचन है कि या समय में चालिके ललन जो श्री कृष्णहैं तिनसों मिलो २३ ॥

चतुर्विंशतितम ॥ दो० ॥ चलुतहँ लखि मुरकंद पिय हौं जारनि दुखपाय। वहैं खुभी ऊँचीअटा सुबसत जहँ यदुराय २४ ॥

टी० ॥ यहां नायकाको बचन अंतरंग सखीसों तहां चलो हे सखी लखि मुरकंद पियनाम मुर दैत्यके नाशकर्त्ता ऐसेजो पिय श्रीकृष्ण तिन्हैं देख्यो हौ हौं जारानि दुखपायनाम मैं बिरहरूपी अग्निकी ज्वारिजो झर ताकरिके दुःखपायरहीहूं काहेते कि वही जो अटा खुभि रही है अर्थात् चुभिरहीहै जहां भलीतरह सों यदुराय वासकरतहैं २४ ॥

अंतर्गतपंचविंशतितम ॥संस्कृतशिखरिणी छं०॥ भवानीशंवन्दे गल गरल शोभाद्भुत तरं भुजंगैराभां तं शिरसि सुरनद्या सु ललितं ॥ त्रिनेत्रं भस्मांगं दिग म्लपटं चंद्र मुकुटं । सुरेन्द्राद्यैर्वंद्यं भवभयहरं भक्त वरदं २५ ॥

टी० ॥ यहां कबि महादेवजीकी स्तुति करतु है भवानी शं वंदे नाम पार्वतीके पति जो महादेव तिनको मैं नमस्कार करूं हूं कैसेहैं महादेव कि गलगरल शोभाद्भुततरं नाम गल जो कंठ तामें गरलजोविष ताकी शोभाकारिके अद्भुततरहैं नाम अत्यन्त आश्चर्य रूपहैं पुनिकैसे हैं कि भुजंगैराभांतं नामभुजंग जे सर्प तिन करिके आभांतं नामचारों ओरते प्रकाशमान हैं पुनि कैसे हैं कि शिरसि सुरनद्या सुललितं नाम शिरसिकहे मस्तकके विषे सुरनदी जो गंगाजी ता करिके सुललितं नाम अतिशय करिके शोभायमान हैं पुनित्रिनेत्रं नामतीनहैं नेत्रजिनके पुनिभस्मांगं

नाम भस्मलग्योहै अंगमेंजिनके पुनि दिगमलपटंनाम दिशाहीहैं निर्मलवस्त्रजिनके अर्थात् दिगंबरहैं पुनिचन्द्रमुकुटं नाम चंद्रमा इहै मुकुटजिनके पुनि सुरेन्द्राद्यैर्वंद्यं नाम देवेंद्रआदिक देवतानि करिके नमस्करणीय हैं पुनि भवभयहरं नाम संसारके भयकेदूर करनहारहैं पुनिभक्तवरदं नाम भक्तजनके मनोरथदाताहैं कल्प-वृक्षमें याके पढ़िबेकी यह रीति है कि अरुण अक्षरनते युग सर्प गतिते बांचिये २५ ॥

अंतर्गतषट्विंशतितमअनुलोमअनुष्टुप् ॥ श्लोक

इहरे वह लालासे वाला राहु मलीमसा । सालका रस लीला सा तुंगालालिकलारत २६ ॥

टी० ॥ यहाँ नायकापक्ष की सखी को बचन रासक्रीड़ा में श्रीकृष्णसों हेअलिकलारत हेहरे हेदक्षिणनायक श्रीकृष्णइ आ-श्चर्य लालासे नाम दीप्तिबिशिष्टे नृत्येसालका नाम अलकेन सहिता सालकापुनः रसलीलानाम रसःशृंगारस्तन्मयी लीला यस्याः सा रसलीला पुनः तुंगालानाम अत्युत्कृष्टा उत्तमा इत्य-र्थः एवंभूताबालानायिका इदानींराहुस्तमः मानरूपक्रोधावेश-स्तेन मलीमसा नाममलिना वर्त्तते अतः कारणात् तांबालांवह नाम आवाहय अलिकलारत नामभ्रमरके कलामेंप्रवीण अर्थात् दाक्षिण अरुहरेनाम हेश्रीकृष्ण इनाम अचरजहै यह कि लानाम शोभालासे नामनृत्य में अर्थात् रासमंडलकी शोभामें वहनाय-का मानिनीहै यह आश्चर्य है कैसी है वह नायका कीसालका नाम अलककरिके सहितहै पुनि रसलीला नामरसरूपहैलीला जाकीपुनि तुंगाला नामसब नायकानसों अधिक सानाम ऐसी जोप्रसिद्धनायका सोअब राहुमलीमसा नामराहु जोतम अर्थात् मानरूपी जोक्रोधतासों मलीमसा नाममलिनमनह्वैरही हैयाते तुम वा नायका कूं वहनामबोलावो कल्पवृक्षमें पीताक्षरन सें ॥ गोमूत्रिकागति सों सरस्वती कण्ठाभरणको श्लोककहतहै २६॥

अंतर्गतसप्तविंशातितम ॥ प्रतिलोमप्राकृतअनुष्टुप् ॥ तरला कलिला गातुं सालालीसरकालसा । सामली म हुरालावा सेलालाहवरेहइ २७ ॥

टी० ॥ यहाँ दूतीका बचन श्रीकृष्ण सों तरला नाम चंचला कलिला नाम रसार्द्रा गातुंनाम गानं कर्तुं सालाली नाम सा प्रिया सरकालसा नाम सरके नाम नृत्यगति विषे आसमंताल्ल सतीति आलसा सामली नाम सामोपाय लीना महुरा लावा नाम मधुरालापा से लाला हव नाम सेल नाम सैलः तस्य आलाह नाम आलभनं तत्र वाति गच्छतीति तत्संबोधनं हे से लाला हव नाम गोवर्द्धनोद्धरण रेहइ नाम सा नायका राजते अर्थात् चंचल है अरु रस सों भीजी भई है गान करिबे को सो लाडिली नृत्यगति विशेष में चारोंओरतें शोभायमान ह्वै रही है सामोपायमें लीन ह्वै रही है अर्थात् तुमसों मिलाप चाहति है अरु मधुर बोलिबेमें है हे गोवर्द्धनधारी सो नायका शोभायमान ह्वै रही है याको आशय यह है कि ऐसी गुणवती रूपवती नायका सों तुम मिलो २७ ॥

अंतर्गतअष्टाविंशातितम ॥ प्राकृतआर्या ॥ भणि ओवल्ल अव इणा अज्जा सुतपुरी गंता इअ । भणि अं अतारा पियइ वहू सवण पुडए सा २८ ॥

टी० ॥ यहां काहू एक गोपराजको बचन अरु ताकी पत्नीहू को वचन काहू एक गोपसों ता बचनको ता गोपराज पुत्रकी वधू आदरपूर्वक श्रवण करति है सो लखिकै सखी सखीसों कहतिहै भणिओ नाम भणित अर्थात् कह्यो है वल्ल अव इणनाम वल्लव पतिना अर्थात् काहू गोपिराजने काहू गोपसों अज्जानाम अद्य अर्थात् आजके दिवस सुत नाम सुतः अर्थात् पुत्र मेरोपुरी नाम मधुपुरीको गंतानाम गमिष्यति अर्थात् जायगो अरु इअ नाम इत्थं अर्थात् याही रीतिसों भणि अं नाम भणितं अर्थात्

कह्यो अताराना‌म आर्यया वृद्धया अर्थात् वृद्ध सासुहुने पियइ नाम पिवति अर्थात् आदरपूर्वक श्रवण करै है वहूनाम पुत्रबधू सवण पुडएनाम श्रवण पुटने अर्थात् कानरूपीदोना करिकेसा नाम सो पुत्रबधूसास श्वशुरके बचन औरसों कहतभये पतिके विदेश जायबे की बात आपहू आदरपूर्वक सुनतिहै याते मुदि ताजानिये कल्पवृक्षमें याकेपढ़िबेकी यहरीतिहै कि पीताक्षरनते एकनागगतिकरिके अलंकारकौस्तुभकी प्राकृतआर्याकढ़तिहै २८॥

एकोनात्रिंशतितमअंतर्गतउर्दूबैत ॥ जरद रंगी बसंत ल्याया है। गुल असर्फी ने रस्क खाया है २९ ॥

टी० ॥ यहाँ कविकी उक्ति बसंतऋतुमें नायकाके पीतबस्त्र के वर्णन में जरदरंग बसंत पंचमी त्योहारलाग्यो है अर्थात् पीत वसनसबने धारणकरेताको देखिके गुलअसर्फीनाम जरददाउदी पुष्पने रस्कखाया है नामडाह खायो है कि ऐसो रंगहमारोनहीं भयो कल्पवृक्ष में अरुणाक्षरनते तिर्यक् गतिसों बांचिये २९ ॥

अंतर्गतात्रिंशततमज़बानइबरानीनसर ॥ अरबा हौवा मुहति लै हिंदी कतजा ३० ॥

टी० ॥ यहमूसा पैगंबर ते पहिले शीशपैगंबर भयेहैं तिन्होंने सर्पके बिषकेदूरकरिबेके लिये खुदासों दुवामांगी है यहकिअरबा हौवा ऐसफादिहंद अर्थात् हे व्याधिके दूरकरनवारे मुहत्ति लै ज़हरमार अर्थात् सर्पको विषहिन्दी मुहत्तलिक अर्थात् मृत्युकरन हारो कतजादफ़ैकुन् अर्थात् ता बिषको दूरकरो या मंत्रको जो कोउ तीनबार पढ़ैगो ताकोसर्पबिष न चढ़ैगो कल्पवृक्षमेंअरुणा- क्षरनमें तिर्य्यक् गति सों इबरानी ज़बानकढ़ति है ३० ॥

अंतर्गतएकत्रिंशत्तमफ़ारसीमिसा ॥ दंदानेतु अं दरस्क लूलू ३१ ॥

टी० ॥ यहाँ कवि दंतनको वर्णन करै है दंदानेतु अन्द नाम दांततेरे हैं रस्कलूलू नामडाहहै मोतीनको अर्थात् तेरे दन्तनकी

समता को मोती नहींपावैहैं याते होइकरै है कल्पवृक्षमें अरुणा-क्षरन ते उलटी तिर्य्यक्गतिबांचिये ३१ ॥

अंतर्गतद्वात्रिंशत्तमपंजाबीभाषामें ॥ दो० ॥ चलदी ताडे नालनू जितदा साडादेश। कीकर दा वद-नासिदा मोही तुसिदावेश ३२ ॥

टी० ॥ यहां परकीया नायकाको बचन उपपतिसों चलदी ताडे नालनू नाम चलोंगी तिहारे संगमें जितदा साडादेश नाम जहाँ है तुम्हारो देश कीकरदा वदनामिदा नाम कहाकरैगी बद-नामी मेरो काहेते कि मोही तुसिदावेश नाम मोहित भईहूं तेरे स्वरूपपै कल्पवृक्षमें पीताक्षरनते शिखरगतिसों पढ़िये ३२ ॥

अंतर्गतत्रयत्रिंशत्तमजयनागरकीभाषामें॥सो० घणी लागसी बार काँई छेको गैल थे। ऊभी छें ब्रजदार जावा दीजे लालजी ३३ ॥

टी० ॥ यहाँ गोपीको बचन श्रीकृष्ण सों घणी लागसी बार नाम बडो बिलंब लगैगो काँई छेको गैलथे नाम काहेको रोकतहो रस्ता तुम ऊभी छें ब्रजदार नाम औरहू ब्रजकी स्त्री ठाढ़िहैं याते जावा दीजे लालजी नाम या समयमें जीने दीजिये हे लालजी कल्पवृक्षमें अरुणाक्षरनते नौकागति सों पढ़िये ३३ ॥

अंतर्गतचतुस्त्रिंशत्तममहाराष्ट्रीभाषामें ॥दो०॥ सो डुनि कुंज भवन अता घरात याहो राव। एथे चि-मन्या बोलल्यादिसूं लागला ठाव ३४ ॥

टी० ॥ यहाँ प्रौढ़ा नायका को बचन नायकसों केलि बिषय में सो डुनि नाम छोडिके कुंज भवनको अता नाम अब घरात याहो नाम घरके भीतर आवो राव नाम हे प्यारे एथे चिमन्या बोलल्या नाम इस स्थानमें चिरियां बोल चुकी अरु दिसूं लाग-ला ठाव नाम देखि परन लग्यो रस्ता याको भावार्थ यह है कि

यहाँ केलिको समय नहीं रह्यो याते भवनके भीतर चलिये केलि कीजिये कल्पवृक्षमें अरुणाक्षरनते चतुष्कोण मंडलमें पढ़िये ३४

अंतर्गतपंचाशित्तम ॥ चौ० ॥ सीता सोभा रमा सयासी । सीया समा रभा सो तासी ३५ ॥

टी० ॥ या चौपाई को अर्थगति चित्र प्रकाशमें प्रथमही नव कोष्ठमें कहिआयेहैं सो जानिये कल्पवृक्षमें अरुणाक्षरनते गुलेल की रीतिसों बांचिये ३५ ॥

अथशतधेनुगुणबंधलक्षण ॥ तोमर छं० ॥ शत छन्द प्रगटत यत्र । शत धेनु कहियत तत्र ॥ बहु अर्थ दायक चित्र । कहि काशिराज पवित्र ३६ ॥

अथप्रथमधेनु ॥

श्या	म	अ	हो	व	न	रै	न	कि	ये
धा	म	ग	हो	छ	न	चै	न	लि	ये
बा	म	ल	हो	त	न	मै	न	हि	ये
ना	म	च	हो	प	न	वै	न	दि	ये

अथद्वितीयधेनु ॥

अ	ब	प्री	ति	क	री	रु	ख	पा	य	ल	ली	उ	नि
भ	व	री	ति	र	री	मु	ख	गा	य	भ	ली	सु	नि
त	ब	नी	ति	ख	री	सु	ख	भा	य	र	ली	गु	नि
स	ब	भी	ति	ट	री	दु	ख	जा	य	ब	ली	पु	नि

टी० ॥ सौछन्द जहां प्रगटै एक कबित्तते तहांशतधेनु कहिये अरु नानाप्रकारके अर्थहूदे ऐसो जो चित्रहै ताकोशतधेनु चित्र जानिये अरु पवित्रहै यह काशिराज कबि कहैहै ३६ ॥

शतधेनुप्रथम ॥ यथा स० ॥ श्याम अहो बन रैन किये अब प्रीति करी रुख पाय लली उनि । धाम गहो छन चैन लिये भव रीति ररी मुख गाय भली सुनि ॥ बाम लहो तन मैन हिये तब नीति खरी सुख भायरली गुनि । नाम चहो पन वैन दिये सब भीतिटरी दुखजाय बली पुनि १ ॥

शतधेनुगुणबंधचित्रम् ॥

श्याम	अहो	वन	रैन	किये	अब	प्रीति	करी	रुख	पाय	लली	उनि
धाम	गहो	छन	चैन	लिये	भव	रीति	ररी	मुख	गाय	भली	सुनि
बाम	लहो	तन	मैन	हिये	तब	नीति	खरी	सुख	भाय	रली	गुनि
नाम	चहो	पन	वैन	दिये	सब	भीति	टरी	दुख	जाय	बली	पुनि

टी० ॥ यह बासक शय्या मुग्धा नायका है यहां उत्तम दूती का बचन नायक सों श्याम अहो वन रैन किये अहो श्याम तुमने बनमें रात्रि कियो अब प्रीति करी रुख पाय लली उनि उन ललीने अब प्रीति करीहै तिहारो रुख पायकै यासों धाम गहो छनचैन लिये गृहको चलो छन नाम उत्सव ताके सुखके लिये भव रीति ररी मुखगायभली सुनि संसार की रीति मैंने अपने मुखसों गाय के कही सो भलीतरह सों सुनो बाम लहो तन मैन हिये हे तनमैन बामको हृदय में लहो तब नीति खरी सुखभायरली गुनि तब तुम्हारी नीति खरी है अरु सुख भायकी क्रीड़ा बिचारो नाम चहौ नाम अपने नामको चाहौ अर्थात् मुग्धाके वश करनेमें नायककी चातुरी दीखै है पनवैनदिये सब भीतिटरी दुखजायबली पुनिवानायकाने प्रतिज्ञाके बचन दियेहैं अबहमारी सबभीति टरी अरु बलीनाम बड़ी अर्थात् बड़ोईदुःख दूर होतु है याकोआशययह है कि मुग्धानायकासे तिहारोसंयोग

होने से हमारीभीति टरैहै अरु पुनि तिहारोदुःख दूरिहोतु है दो दो अक्षर छोड़िकै पढ़िये अरुअन्तमें वेहीअक्षर योग करिके पढ़िबेते द्वितीय सवैया कढ़ै है यही क्रमसों षष्टिसवैया कढ़ै हैं ६० उत्पन्न होतु हैं अरु गोमूत्रिका क्रमसों द्वादश सवैया कढ़ै हैं अरु अश्वगति करिके द्वादश सवैया कढ़ै है अरु दोदोअक्षर वृद्धिकरके एकादश छन्दकढ़तुहै अरु चरणको आद्यंत कियेसों तीन सवैया कढ़तुहै अरु दशाक्षर करिके एक एक चरणको एकछन्द है अरु चतुर्दशाक्षर चारिचरण करि दूसरो छन्दहै इनदोऊ छन्दके संगम कियेते शतधेनु को स्वरूप कढ़ै है याक्रमसों सौ छन्द कढ़ै हैं सो ग्रंथबाहुल्यात् भीति करिके पृथक्पृथक्रूप नाहीं लिख्यो सुकबि जो हैं सो बिचारि लेउ शुभं भवतु १ ॥

इतिश्रीमत्काशिराजविरचितचित्रचन्द्रिकायांगुणबंधचित्रवर्णनोनामसप्तमःप्रकाशः ७ ॥

अथअर्थचित्रलिख्यते ॥

दो० ॥ गणपति पदपङ्कज सुमिरि बाणी चरण मनाय । अर्थ चित्र वर्णनकरौं सुनहु सुकबि सुखपाय १ ॥

टी० ॥ गणेशके चरण कमल को स्मरणकरिके अरु शारदा के चरण मनाय करिके अर्थ चित्र बर्णन करौंहौं हे सुकबि सुख पायकै सुनो १ ॥

एकाक्षरादिअर्थचित्रलक्षणम् ॥ दो० ॥ एक आदि दै चारिलगि वर्ण अर्थ यह चित्र । पृथक् पृथक् वर्णन करौं समझि लीजियो मित्र २ ॥

टी० ॥ एकाक्षर नाम एक अक्षर अर्थदाता द्व्यक्षर नाम दो अक्षर अर्थदाता त्र्यक्षर नामतीनअक्षर अर्थदाता चतुरक्षर नाम चारअक्षर अर्थदाता यह अर्थ चित्रहै पृथक्पृथक्बर्णन करौं हौं हे मित्र समझ लीजियो २ ॥

एकाक्षरअर्थचित्र ॥ चौ० । खगणराय रैपुरोदानिवा । यलछथ टह शंच ओभानिवा ३ ॥

टी० ॥ खनाम ज्ञान गनाम गणेश णनाम स्तुति रानाम सुवर्ण यनाम पशु रै नामस्वामी अर्थात् इनके पति हैं पुनाम दंपति रोनाम शिव यहां दंपति सहित शिव कहनेको यहआशय है कि अर्द्धनारीश्वर वर्णन है दानामदाता निनाम मोक्ष वानाम पवित्र अर्थात् पवित्र मोक्षके दाताहैं यनाम यश लनाम अमृत छनाम निर्मलता थ नाम रक्षा टनाम डमरू हनाम निवासस्थान अर्थात् इनके घरहैं शंनाम कल्याण-अथवा सुख च नाम चन्द्रमा ओनाम शेष भानामकांति अर्थात् इन करिके शोभित हैं निनाम आश्रय वा नाम वरुण अर्थात् बरुणजाके शरण हैं ऐसे हैं महादेव एकएक अक्षरनते अर्थ कह्यो याते एकाक्षरचित्र जानिये ३ ॥

अथ द्व्यक्षर अर्थचित्र ॥ दो० ॥ पदकरमुख दृगकंजबर राधाऐसीबाम । कलछलबल करिलहोतुम मानोमेरीश्याम ४ ॥

टी० ॥ यहाँ दूतीका बचन नायकसों पदकर मुख दृग कंजबर नायकाके चारोंअंग कमल ते श्रेष्ठहैं राधा ऐसी बाम ऐसी राधा स्त्री है कल छल बल करिलहो तुम मानो मेरी श्याम हे श्रीकृष्ण मेरी बात मानो काहू कल छल बल करिकै वा नायकाको प्राप्त होहु अर्थात् मिलो दो दो अक्षरन ते अर्थ कह्यो यातेद्व्यक्षर चित्र जानिये ४ ॥

अथ त्र्यक्षर अर्थचित्र ॥ दो० ॥ मोहन सोहन रावरो गोहन गहत प्रवीन । फेरन घेरन दाहनो हेरन बिपिन नवीन ५ ॥

टी० ॥ यह स्वयं दूतिका नायका मोहन सोहन रावरो गोहन

गहत प्रवीन सोहनसों भाय मान तुमारो संग गहत हौं हे चतुर या कारणके लिये फेरन घेरन दोहनो हेरन बिपिन नवीन गोधन को फेर ल्यावनो घेर ल्यावनो दुहवाय लन्यो खोजनो नये बनमें तीन तीन अक्षर अर्थदाताहैं याते त्र्यक्षर अर्थ चित्र जानिये ५ ॥

अथचतुरक्षरअर्थचित्र ॥ दो० ॥ सुरपति जगपति दयापति सीतापति रघुनाथ । सुखपति रसपति गोपपतिराधापति ब्रजनाथ ६ ॥

टी० ॥ सुरपति जगपति दयापति सीतापति रघुनाथ देवता के पति विश्वके पति दयाके पति ऐसे सीताके पति रामचन्द्र हैं सुख पति रसपति गोपपति राधापति ब्रजनाथ सुखके पति नव रसके पति ग्वालनके पति ऐसे राधाके पति ब्रजनाथ श्रीकृष्ण हैं चार चार अक्षरनते अर्थ कढ्यो याते चतुरक्षर चित्रजानिये ६ ॥

अथप्रहेलिकाअर्थचित्रलक्षणम् ॥ दो० ॥ कोऊ बात दुराय के जहाँ बरणिये मित्र । अर्थ चित्रके भेदसे जानु पहेली चित्र ७ ॥

टी० ॥ जहाँ काहू बातको छिपायके बर्णन कीजिये हे मित्र सो अर्थ चित्रके भेदमें प्रहेलिका चित्र जानिये ७ ॥

दृष्टि कूट शास्त्रोक्त पुनि सहित नाम पुनि जानु । अक्षरसें ते काढ़िये चारि जात उर मानु ८ ॥

टी० ॥ पहेलीचित्रके चारि जातिहैं एक दृष्ट कूट । द्वितीय शास्त्रोक्त । तृतीय सनाम । चतुर्थ वर्ण प्रहेलिका । दृष्ट कूट नाम देखीभई पहेलीशास्त्रोक्त नाम शास्त्ररीतिकी पहेली सनामनाम वाही पहेलीमें वाको नाम कह देना अक्षरसें ते काढियेनामएक एक वर्ण निकासके नाम निकसै ये चारिजाति उरमेंजानिये८ ॥

दृष्टकूटप्र० सो० ॥ बिनपरसे वहनारिरहतपरस आनन्द मय । परसे दे मनमारि नारि नहींबूझो सुकवि ९॥

टी० ॥ बिना छुये वह नारि उत्कृष्ट आनन्द मय रहतहै अरु छुये ते मनको मारि लेइहै स्त्री नहीं है हे सु कवि बूझौ यह लज्जावंती जडी है स्त्री बाचक है ९ ॥

अथशास्त्रोक्तपहेलिका ॥ दो० ॥ चरण चारि सत्रह नयन मुख भुज षट पहिचानु । काशि राज वर्णन करै रूपसो अद्भुत मानु १० ॥

टी० ॥ चारि तो चरण दो विष्णुके दो शिवके सत्रह नेत्र दो विष्णुके नेत्र पन्द्रह नेत्र पंच मुखी महादेवके छः मुख एक तो विष्णुका पाँच शिवके अरु छः भुजा चारि भुजा विष्णुके द्विभुज शिव पहिचानिये कविकाशीराज कहै है अद्भुतरूप यहमानिये यहहरि हरात्मक स्वरूप जानिये १० ॥

अन्यच्च ॥ दो० ॥ एक न्यून मुख बीसहैं पद जानो अड़तीस । भुजबासठ बूझो सु कवि नैनकहैंसैंतीस ११ ॥

टी० ॥ उन्निस मुखहैं बारह सूर्यके आठग्रहों के सप्त मुख अड़तीस चरणहैं चौबीस सूर्यके अष्ट ग्रहोंके चतुर्दश बासठि भुजाहैं अड़तालीस सूर्य्य नारायण के चतुर्भुजी मूर्त्तिहै आठग्रह की चौदह भुजा बूझो सुकबि हे सुकबि बूझो सैंतीसनेत्र हैं चौबीस सूर्य्य के अरु एकशुक्र के सातग्रह के बारह नेत्र यह नवग्रह पिंड जानिये ११ ॥

अथ सनामप्रहेलिका ॥ दो० ॥ करण नहीं गुन करण को पद बिनु चलनो बेश । सुमनसको आहारकरि कहि कबि नाम विशेष १२ ॥

टी० ॥ करणनहीं गुनकरन को नामकान नहीं है करण का गुन जो सुननो सो है चक्षुश्रवा बिनाचरण भलीतरहसों चलै हैं सुमनसको आहार करिनाम देवताको आहार करै है यहाँबा देवताको आहार करै है ऐसो पवना शन कहि कबिनाम बिशे

या पहेलीमें कबिनेनाम विनामविशेषकरिके शेषनागकह्यो १२॥

अथबर्णप्रहेलिका ॥ दो० ॥ सागरके वह बीचमें श्री के ऊपर लेहु । रामा के नीचे बसै श्याम रास सुख देहु १३ ॥

टी०॥सागर नाम समुद्र २ के बीचका अक्षर कौन मुश्री के ऊपरलेहु श्रीनामरमारमाके ऊपरका अक्षरकौन र रामाके नीचे बसै रामानामअली ताके नीचेको अक्षरकौन ली श्यामरासमुख देहु हे श्रीकृष्णतासों रास में सुखदेहु यहमुरली जानिये १३ ॥

अथगूढकाव्यचित्रलक्षणं ॥ दो० ॥ सूधी बातजु वरणिये जहां फेर सों मित्र । काशिराज वरणन करै गूढ़ काव्य सोचित्र १४ ॥

टी ॥ जहांसूधी बातको फेरसों वर्णनकीजिये कबिकाशीराज कहै है सो गूढकाव्य चित्रजानिये १४ ॥

यथा ॥ क० ॥ कपि हित नाममें जोबैनसुनि होहुसुखी मैन पितु आज मोहिं तूतीपे पठायोहै । कोक अरि अरि गुरु बाहनको अरि अरि ताको पति पिता रिपु अधिक सतायोहै ॥ मूक क्यों भईहै निशा मुखते तिहारे गृह भूज रव अवबनचाहत सुहायोहै । भनिकबि काशीराजआ- वैकी बुलावै वहराजा बैराटकी सुकन्याको मँगायोहै १५॥

टी० ॥ यहां दूतीका बचन मानिनी नायका सों मानमोचन में कपिनाम बांदर ताको हित बनताको नामकानन तामें वचन सुनिके होहु सुखी अर्थात् कर्णनाम कानों में वचनसुनि सुखी होहु मैनपितु आज मोहिं तूती पै पठायोहै मैननाम प्रद्युम्नतिन- के पिता श्रीकृष्ण तिन्हों ने मुझे तू जो तियहै तापै भेजोहैकोक नाम चक्रवाक ताको अरि चन्द्रमा ताको अरिराहु तिनके गुरु शुक्राचार्य तिनको बाहन मेडुक ताकोअरि सर्प ताकोअरि मयूर

ताकोपति स्वामिकार्त्तिक तिनकेपिता महादेव तिनका रिपु कामदेव अधिक सतायोहै नाम या समय कामोद्दीपन है रह्यो है श्रीकृष्णको मूक क्यों भईहै चुपक्योंभई है निशामुखते तिहारे गृहनाम प्रदोषसमय से तेरेही घरमें हू भूजनाम थलज अर्थात् गुलाब ताको रवनाम शब्दबनमें सुहायो चाहत है नामगुलाब चटकाचाहै है अर्थात् प्रातःकालहुयो चाहतहै कहैहै कबिकाशीराज आवै की बुलावै वह यह श्रीकृष्णपूछ मांग्यो है तोसोंराजा वैराटकी सुकन्याको मँगायो है नाम बैराटराजाकी सुंदर कन्या उत्तरा अर्थात् उत्तर मँगायो है १५॥

अथसूक्ष्मालंकारलक्षणम् ॥ दो० ॥ इंगितते आकार ते जहँ लखिये जिय भाव । सो सूक्ष्मालंकार है बरणत कबिमें राव १६ ॥

टी० ॥ इंगितते नामचेष्टाते अथवा आकारते जहां जिय के भावनाम आशयको जानि लीजिये ताको सूक्ष्मालंकार कविन में जो राव हैं कहै हैं यहव्यंग प्रधान बहिर्लापिका है याते अर्थ चित्रमें जानिये १६ ॥

यथा ॥ दो० ॥ भानु सामुन्हें कुमुदिनी लिख भेजी वहनारि । हरिमुसकाय जु भानुपैदियो सबिंदु बिचारि १७॥

टी० ॥ भानुनाम सूर्य्य तिनके सन्मुख कुमुदिनी नामकमलिनी लिखभेजी वहनारि नामभानु और कुमुदिनी वा नायका ने पतिके पास लिखभेजो ताको कारण यहकि सूर्य्यसमान तुम्हारो जोबिरह है तामें कुमुदिनीसी मूर्च्छितहों हरि मुसुकाय जुनाम श्रीकृष्ण वा कारणको पायके मुसकाय करिके भानुपैदियो सुबिंदु बिचारिनाम सूर्य्यके ऊपर सुन्दर एक बिंदु बिचारिके दियो याको यह कारणकि सूर्य्य पै अंधकार होयगो अर्थात् रात्रि होयगी जब मिलेंगे यह व्यंग करिके जानीगई याते व्यंग बहिर्लापिका जानिये १७॥

अथबहिर्लापिकांतरलापिकालक्षणं ॥ दो० ॥ उत्तर बाहरते जहाँ बहिर्लापिका जानु । अंतर अंतरलापिका काशीराज बखानु १८ ॥

टी० ॥ जहां उत्तर बाहर ते आवै पद मेंते न कढै सो बहिर्लापिका चित्र जानिये अरु जहां पदमें ते उत्तर निकसे सो अंतर लापिका जानिये कवि काशीराज बखानो है १८ ॥

अथबहिर्लापिका ॥ यथा दो० ॥ सब योनिज में श्रेष्ठ को बनको राजाकौन । हिरणकशिपु प्रह्लाद हित उदर बिदारो जौन १९ ॥

टी० ॥ सब यो निज में श्रेष्ठ को सम्पूर्ण जो चौरासी लक्ष योनि ते जो उत्पन्न भये हैं तिनमें श्रेष्ठ कौनहै नर बनको राजा कौन बनमें राजा कौन है सिंह हिरणकशिपु प्रहलादहित उदर बिदारो जौन हिरणकशिपु दैत्यको प्रहलादके हितके लिये उदर फारो जौन पुरुषने सो कौन है नरसिंह यह उत्तर बाहरते आयो नरसिंह तीनों प्रश्नके उत्तर याही में ते कढै याते बहिर्लापिका जानिये १९ ॥

अथअंतरलापिका ॥ दो० यथा ॥ भानुज ऋषि ते का चह्यो रण बिचले क्याहोइ । भव भय तारण ग्रंथको कहि भागवत सुजोइ २० ॥

टी० ॥ भानुज ऋषिते का चह्यो भानु नाम सूर्य्य तासों उत्पन्न भयो ताको कहिये भानुज ऐसे जो हैं अश्विनीकुमार सो च्यवनऋषि ते का चह्यो भाग अर्थात् इन्द्रसे यज्ञ भाग हमैं दिलाइ देउ रण बिचले क्या होइ लडाई बिगडे पै क्या होइ है भागव अर्थात् भागनो भागनो होइ है भव भय तारण ग्रन्थ को संसारके भयदूर करबे को कौन ग्रंथ है कहि भागवत सुजोइ कह्यो है सुंदर तरहसे देखि के भागवत यह उत्तर भागवत याही

में ते तीनों प्रश्न के उत्तर कढ़े याही दोहामें उत्तर कढ़यो याते अंतरलापिका जानिये २० ॥

अथअंतरलापिकागूढ़ोत्तरलक्षणं ॥ दो० ॥ उत्तर जाको अति दुरो गूढ़ोत्तर सो जानु । बरणत काशीराज कबि ग्रन्थन को मत मानु २१ ॥

टी० ॥ उत्तर जाको अति दुरो जहां उत्तर अत्यन्त छिपाय के दीजियेसो गूढ़ोत्तर अन्तरलापिका चित्र जानिये कबि काशीराज बर्णन करै है ग्रन्थन को मत मानिकै २१ ॥

यथा ॥ स० ॥ शोभित रूप सुभाव सुहावन जाके भँडार कुबेर नहीं सर । देवर देवसमान लसै शुभ नेहनयो अनुकूल नयोवर ॥ सासुभली सुत सोदरभूषण अंबर साज शृंगार भलो घर । रोदन क्योंकहि कामिनि यामिनि मोहनते ऋतु राज रमे पर २२ ॥

टी० ॥ शोभित रूप नाम शोभायमान तो रूप है जाको सुभाव सुहावन नाम सुभाव जाको भलो है जाके भंडार कुबेर नहीं सरनाम जाकी सम्पत्ति की कुबेरहू बराबरी नहीं करै है देवर देव समान लसै नाम जाको देवर देवताके समान शोभै है शुभ नेह नयो नाम भलीप्रीति नित्य नई है जाके अनुकूलनयो वर नाम परनारी रत नहीं है पति अरु तरुणहै पति सासुभली नाम भली है सासु जाकी सुत नाम पुत्रयुक्तहै सोदरनामभाई करिकैयुक्त है भूषण नाम आभूषण करिके युक्त है अम्बर नाम वसनकरिके युक्त है साज शृंगार नाम शृंगार सोरहोकी भली है सजजाके भलो घर नाम भलो है मंदिर जाको अथवा भलो है कुलजाको मोहन ते ऋतुराज रमे पर नाम मोहन गुण करिके ऋतुराज नाम बसंत ऋतु ताहूते रम नाम क्रीड़ा में उत्कृष्ट है रोदन क्यों कहि कामिनि यामिनि नाम ऐसी जो नायका सो

यामिनी नाम रात्रिमें रोदन क्यों करै है कहुयह प्रश्न तहां उत्तर ऋतुराज रमे पर नाम रजोदर्शनानंतर रमण करै है पति अर्थ राज शब्दका अर्थात् स्त्रीन को राजा पति है २२ ॥

अथशासनोत्तरलक्षणम् ॥ दो० ॥ उत्तरप्रश्न अनेकको दीजै एकबनाय । शासन उत्तर कहत हैं ताहि सुकबि समुदाय २३ ॥

टी० ॥ अनेक प्रश्नके उत्तरमें जहाँ एक उत्तर दीजिये ताको कबि समुदाय शासनोत्तर कहै हैं २३ ॥

यथा ॥ सो० ॥ गाव पीठपरलेहु अंगराग अरुहार करु । गृहप्रकाशकरिदेहु कान्हकह्योसारँगनहीं २४ ॥

टी० ॥ गाउनाम गानकरो पीठपरलेहु नामपीठ ऊपरचढाय लेहु अंगरागनाम उबटनोकर अरुहार करुनाम माला बनाउ गृहप्रकाश करिदेहु नामघरमें उजालो करिदेहु कान्हकह्यो सारंग नहीं गावने में सारँग नाम बीनानहीं है पीठपर लेने में सारँगनाम घोड़ानहीं है हमअंगरागमें सारँगनाम चंदन यहांनहीं है हारबनावनेमें सारँगनाम पुष्पयहां नहीं है यहांगृहप्रकाश करिदेनेमें सारँगनाम दीपकयासमयनहीं है बहुतप्रश्न में एक उत्तर दियोयाते शासनोत्तर जानिये २४ ॥

अथप्रश्नोत्तरलक्षणम् ॥ दो० ॥ जोई अक्षर प्रश्नके सोई उत्तर होय । प्रश्नोत्तर यह चित्रहै बरणत कबि रस जोय २५ ॥

टी० ॥ जो अक्षरप्रश्नके हैं तेहीअक्षरनते उत्तरकढै सो प्रश्नोत्तर चित्रजानिये बर्णतहैं कबिरसको देखिके २५ ॥

यथा ॥ दो० ॥ कोकहिये जलते सुखी का कहिये परश्याम । काकहियेजेरसबिना कोकहियेसुखवाम २६॥

टी० ॥ को कहिये जलते सुखनिाम जलते सुखीकौन है उ-

त्तर कोक नामचक्रवाक को हृदय जलते सुखी है का कहियेपर श्याम प्रश्ननामका कहिये उत्कृष्ट श्यामउत्तर काकनाम कौआ ताके हृदयके परकाले हैं का कहिये जेरस बिनाप्रश्न नामरसते जो हीनहैं तिन्हैं क्याकहै उत्तरका कहिये नाम श्याम हृदय जे रस बिना हैं को कहिये सुखबाम प्रश्ननायका को सुखको है सोकहो उत्तर कोकशास्त्र जिनके हृदय में है सो नायक बामके सुखदाताहैं २६ ॥

अथएकानेकउत्तरलक्षणम् ॥ दो० ॥ एकहिउत्तर में जहाँ उत्तर बहुत बखान । उत्तर एकानेकजो ग्रंथनको मत मान २७ ॥

टी० ॥ जहांएक उत्तर में अनेक उत्तरकढ़ै सो उत्तरएकानेक ग्रन्थनके मतते मानिये २७ ॥

अथएकानेकउत्तरआद्यंतक्षरणलक्षणम् ॥ दो० ॥ उत्तर व्यस्त अनेक हैं एकसमस्त हि मानु । आदि अंत ते क्षरन करि उत्तर कढ़ै सुजानु २८ ॥

टी० ॥ व्यस्तनाम टूक टूक करिके अनेकउत्तर कढ़ैं अरु समस्तते एकउत्तर कढ़ै आदि अंतते क्षरणकरि उत्तरकढ़ै सुजानु सुजानआदि के अक्षरनको क्रमसों अंतके अक्षरते मिलाइये दो दो अक्षरकाउत्तर कढ़ै है सो जानिये २८ ॥

यथा ॥ दो० ॥ तारतहर कहि अधर जसनर हित हित रण रंग । नितत सरस रस कहतकहँ हरितलहन जस अंग २९ ॥

कृषिहिकरत किहिंतजि सजन शशि दिनदिनजियदीन । लसत रसिहिं गुणछीज कहि जगधरतारिसछीन ३० ॥

टी० ॥ षष्ठ प्रकाश में चरण गुप्त बंध चित्रमें प्रथम अर्थ कहिआये हैं सोजानिये २९।३० ॥

अथ एकानेकसाँकरी गतिव्यस्तसमस्तउत्तर लक्षणम् ॥ दो० ॥ जुगजुग अक्षर जोड़िये साँकरिकी अनुसार । एक तजि व्यस्त समस्त सों उत्तर कढ़ै बिचारि ३१ ॥

टी० ॥ दोदो अक्षरजोड़िये जंजीरकी रीतिसे एकएक अक्षर छोंड़ि तहां व्यस्त उत्तर कढ़ैहै बहुत अरु समस्तसे एकउत्तरकढ़ै है बिचार जानिये ३१ ॥

यथा ॥ छ० ॥ कहां बसति है नारि कहा योगी को कीजै । कहा विश्वको बन्ध कहा दुर्जनको दीजै ॥ पत्रन में कहु कहा होत सो सुकबि बिचारो । कहां लसतहैं कंज कहां सुख शूरनिहारो ॥ कहु इंद्र त्रासते ब्रज बधूकाको धाय गह्यो चरण । कवि काशिराज उत्तर दियो जगमें मनमोहन शरण ३२ ॥

टी० ॥ मनमोहन शरण इनअक्षरन तें व्यस्त समस्त सांकरि की गति करिके उत्तर कढ़ै है कहां बसति हैं नारि नाम स्त्री का बसने का स्थान कौनहै यह प्रश्न उत्तर मन नाम मनमें बसैहैं कहा योगीको कीजै नाम जोगीको कहा करै है यह प्रश्न उत्तर नमो नाम नमस्कार करै हैं कहा विश्वको बन्धनाम संसार को बंध कहाहै यह प्रश्न उत्तर मोह नाम मोहादिक कहा दुर्जनको दीजै नाम दुष्टजनको कहा दीजिये यह प्रश्न उत्तर हन नाममारि दीजिये पत्रनमें कहुकहाहोत सो सुकबि विचारोनाम पत्तोंआनमें कहा होत है हे सुकवि सो विचारो यह प्रश्न उत्तर नस नामपत्ते में नस होहि हैं कहां लसत हैं कंज नाम कमल कहां शोभित हैं यह प्रश्न उत्तर सर नाम सरोवर में कहां सुख शूरनिहारो नाम शूरपुरुषको सुख कहां देखिये यह प्रश्न उत्तर रण नाम संग्राममें कहु इन्द्र त्रासते ब्रजबधू काको धायगह्यो चरण नाम इन्द्र के

भयकरिके व्रजवधू जोगोपिकाहैं तिन्होंने काको नाम कौन पुरुष को पदगह्यो यहप्रश्नउत्तर कविकाशीराजने यहदियो जगमें नाम संसारमें मनमोहन शरण नाम मनमोहन जो श्रीकृष्ण तिनके शरण भई यह उत्तर समस्त ते भयो और सबउत्तर व्यस्त से भये सो जानिये ३२ ॥

अथएकानेकसांकरिगतिव्यस्तसमस्तगतागत लक्षणम् ॥ दोहा ॥ सांकरिगति उत्तरकढ़ै व्यस्तसमस्त निबीच । दोऊगतागतजानियेकहतसुकबिरससींच ३३ ॥

टी० ॥ जंजीर की रीति करिके दोदो अक्षरनते व्यस्त उत्तर गतागत कढ़ै है अरु समस्त गतागत उत्तर जानिये जे रसके बूड़े हुये जो कबि हैं ते कहै हैं ३३ ॥

यथाछप्पै ॥ गोपिनमेंको अधिक पत्रदे कहियतका पुन । शंभुवृक्षहै कौन कहापिकको कहियतगुन ॥ केशी कोहरिकियो कहासो सुमति बताओ । नदीवेगको कहा कहत ग्रंथनमत पाओ ॥ कहारासमें बहत है ब्रजपति पदवीको लह्यो । कबि काशिराज बहुप्रश्नमें राधावर उत्तर कह्यो ३४ ॥

टी० ॥ राधाबर इनअक्षरनते उत्तरकढ़ै है गोपिनमेंको अधिक नाम गोपिन में कौनसी श्रेष्ठहै यह प्रश्नउत्तर राधानामराधिका पत्रदे कहियतका पुन नाम चिट्ठीदेके हरकारे से कहा कहै हैं यह प्रश्नउत्तर धावनाम जाउ शंभु वृक्षहै कौन नामशिवका वृक्षकौन है यह प्रश्नउत्तर वरनाम वटवृक्ष कहापिकको कहियत गुननाम कोकिला को गुणकहा है यह प्रश्नउत्तर रव नाम शब्दकेशी को हरिकियो कहासो सुमतिबताओ नाम केशीदैत्यको श्रीकृष्णने कहाकियो हे सुमति सो बताओ यह प्रश्नउत्तर वधानाममारयो नदीवेगको कहाकहत ग्रन्थनमतपाओ नामनदीके प्रवाहकोकहा

कहै हैं सो ग्रन्थों मतपायकेकहौ यह प्रश्नउत्तर धारानामनदी का प्रबाहकहा रासमें बहतहै नामजासमय श्रीकृष्णने रासकियो ता समयमें कहाप्रबाहबह्यो यहप्रश्न यह समस्त उत्तर रवधारा नामसुरावर्त्तकीधाराबही ब्रजपति पदवीको लह्योनामब्रजपतिकी पदवी किन्हैं पाई यहप्रश्न कविकाशीराज ने बहुत प्रश्नमें यह उत्तरदियो राधावरनाम राधाके पतिजो श्रीकृष्ण हैं सो ब्रजके स्वामी हैं यहउत्तर समस्त रवधारा राधावर यह उत्तर गतागत समस्तजानिये और उत्तरगतागत सांकरिगतिव्यस्त जानिये ३४

अथअपह्नुतिलक्षणम् ॥ दो० ॥ चित्तकीबातदुराय के औरकैहे मित्र । रसिकनको अतिसुखद यह जानु अपह्नुति चित्र ३५ ॥

टी० ॥ जहांमनकीबात छिपायके फेरसे दूसरीबातका आरोपण करदीजिये हे मित्र रसिकन को परम सुखदाता यह अपह्नुति चित्रजानिये याहीको मुकरी कहैहैं ३५ ॥

यथा कबित्त ॥ मूठीमें समात मध्य उरकी नरम अति परम सुखद सोहै सगुन प्रमानकी । गोसेगोसे तेजो भुकि भपटि मिलत जब राखिलेत प्रानपन बरनी जहानकी । सरमें सुभालवरपरसे अनन्द होत देखे बने काशीराज रंग रुचिखानकी । काहू गोपबधू संग रमे कहौनंदलाल नाहींतियखैंचीहीकमान मुलतानकी ३६ ॥

टी० ॥ मूठीमें समात मध्य नायका कैसीहै जाकीकम्मर मूठी में समातहै कमानकैसी है जाकोमध्यजोहै मूठीसोमूठीमें समाय है उरकी नरम अति नायका कैसी है हृदयकी कोमलहै कमान कैसीहै पेटकी नरम है परम सुखद सो है नायका कैसी है परम सुखकी देनवारी सोहै है कमान कैसी है बांधने वारोंको परमसुखकी दाताहै सगुन प्रमानकी नायका कैसी है गुणनकरके युक्त

है अरु प्रमानकी नाम अप्रमाण नहींहै कमान कैसी है गुण जो चिल्ला ता करिके सहित सोहै है अरु प्रमानकी है अर्थात् तोलकी है नाम टांक करके तुलीहै गोसे गोसे ते जो झुकि झपटि मिलत जबराखिलेत प्रानपन बरनी जहान की नायका कैसी है गोसे गोसे ते नाम एकांत स्थलमें झुकि करिके झपटि करिके जब मिलै है तब नायकके प्रानको राखि लेतिहै अरु अपनी प्रतिज्ञा को राखिलेतिहै ऐसी जहानमें बननी है कमान कैसीहै कमान का गोसा गोसा जब झुकि करिके झपटि करिके मिलैहै तबधारण करनहारे पुरुषके प्राण अरु प्रतिज्ञाको राखिलेतहै ऐसी जगतमें प्रसिद्धहै सरमें सुभाल बर परसे अनंदहोत नायकाकैसी है सरनाम सरोवरमें सुभालवर नाम सुन्दर है माथो जाको ता नायकाके परसे ते आनन्द होतहै कमान कैसीहै सरनाम तीर तामें सुन्दरलगिरहीहै भालनामअनीअरु परनामपंखइसकरिके आनन्द होहिहै देखेबनै काशिराज रंगरुचिखानकी नायका कैसी है देखे ईसे बनैहै कबि काशीराजकहै है रंगकी जोरुचिकहे शोभा ताकी खानि है कमान कैसी है देखनेही से बनै है जाके रंगकी शोभा अरुखानकी नाम ठिकानेकी है काहू गोपबधू संगरमेकहो नन्दलाल यहप्रश्न नायकाका श्रीकृष्णसे है श्रीकृष्ण काहू गोप की वधूके संगमें बिहार कियो तुमने नाहीं तिय खैंचीहीं कमान मुलतानकी यह उत्तर श्री कृष्णको नायकासों है तिय काहू गोप की स्त्री के संग नाहीं हम रमै हैं ऐसी मुलतानकी कमान खैंचीहीं हमने नायका का वर्णन करिके मुकरके श्रीकृष्णने कमान में सम्पूर्ण अर्थ आरोपण कियो याते मुकरी जानिये ३६ ॥

अथश्लेषसभंगअभंगलक्षणम् ॥ दो० ॥ पदप्रति पृथक् श्लेष जहाँ सोसभंग पहिचानु । आदि अंत अश्लेषइक ताहि अभंग बखानु ३७ ॥

टी० ॥ श्लेष दो भाँतिके जानिये एक सभंग अरु एक अभंग

जहाँ पद प्रति में नाम चरण चरण में अथवा अर्द्ध अथवा चतुर्थ चरणमें भिन्न भिन्न श्लेष कीजै तहाँ सभंग श्लेष जानिये जहाँ आदिसे अंत ताईं एकही श्लेष होय तहाँ अभंग श्लेष बखानिये ३७ ॥

अथसभंगश्लेष ॥ यथाह्यर्थ क० ॥ सारस बलित माल कमलाकरसों छबि रस कलमीन नैन चंचल एस रहै। वासुकि लसत जहां हरित वसन धारै प्रिय वृषपर भृत ध्वनि सुख हरहै। भूषण अमृतकर कोकनदगति मृग काशीराज द्विजराज राजै तारा वर है। मोहनको अंग यह शुद्ध सुर ताल सुहै भले बंशकी है किधौं बिंब ओष्ठधर है ३८ ॥

टी० ॥ (सरवरपक्षअर्थ) सारस बलितमाल नाम सारस पक्षीकी माल नाम अवली बेष्टित है जहाँ कमलाकर सों छबि नाम कमल की आकर कह्यो खानि तासों छबिहै जाकी रसकल नाम जल है गंभीर जामें मीन नैन चञ्चल नाम नैन जातिके मीन चंचल हैं जामें एसरहै नाम ऐसा सरोवर है १ ॥

(महादेवपक्षअर्थ) वासुकि लसतु जहाँ नाम वासुकि शेष लसै नाम शोभै है जहाँ हरित बसन धारै हरित नाम दिशा दिशा रूपी वसन धारण किये हैं अर्थात् दिगम्बरहैं प्रिय वृष नाम प्रियहै नन्दीश्वर जिनके परिभृत ध्वनि सुख परिभृत नाम स्वामिकार्तिक तिनका शब्द सुखहै जिनकोहरहै नाम ऐसे हैं महादेव २॥

(चन्द्रमापक्षअर्थ) भूषण अमृत कर नाम आभूषण जाको अमृत अरु किरण है कोकनद नाम रक्तोत्पलगति नाम क्रिया मृगनामासिकार अर्थात् कमलके गतिकी सिकारकरै है काशीराज कबिनाम द्विजराजनाम ब्राह्मणनका राजाहै राजैतारावर है ऐसातारागणका पति सोहै है चन्द्रमा ३ ॥

(बांसुरी पक्षअर्थ) मोहनको अंगयहनाम श्रीकृष्णका अंगहै

मुरली शुद्धसुरताल सुहैनामशुद्ध रागिनीके सुरावलैअथवापवित्र सुरहैं अरुताल सुंदरहै जामेंभले वंशकी हैनामभले बांसकीहै किधौं बिंब ओष्ठधरहै कियौं यहबिंबकह्यो कुंदरूतद्वतुहै ओष्ठ तापर धरी है ऐसी है मुरली ४ ॥

(नायकापक्षअर्थ) सारसवलितमालसारसकहे कमलताकी वेष्टित है मालानाम हारजाके कमलाकरसों कमलाकहे लक्ष्मी आकरसों खानिसौं अर्थात् लक्ष्मीकी खानिसी है अत्र सवर्णेदीर्घःसः करिके आकर शब्दनिकसै है छबिरसकत शृंगाररसकोमलकी छबि है जामेंमीननैन चंचल एसरहैं सरनाम बराबर हैं मीनके चंचलनैन जाकेबासुकि लसत जहांनाम नागहारसोहै है जहां अथवा सुगंधकी सोहै है जहां अर्थात् पद्मिनी हरित बसन धारै हरित नामहरे अथवा डहडहे बस्त्रधारणकियेहैं प्रियवृषनाम प्रियहै धर्मजामें अर्थात् अप्रिय धर्मनहीं है जामेंपरभृत ध्वानिसुख हरहै परिभृतनाम कोइलताके शब्दकेसुखकोहरनवारी है अर्थात् मधुर स्वरहै भूषण अमृत करनाम भूषणहै अमृत नामसुंदरहाथ में जाकेकोक नदगति नामकोक शास्त्रका जो नदहै तामेंहै गति जाकी अर्थात् कोकशास्त्र पढ़ीहै देहरी दीपकन्यायेनगति मृगमृग कहे हाथी ताकी है चालजामें काशीराज कविनाम द्विजराजेराजे द्विजनाम दंतताकी राजनाम पंक्ति सोहै हैं जाकेतारावरहै नाम बालिकी जो स्त्री है तारातातूते श्रेष्ठहै मोहनको अंगयह नायका मोहनमंत्रके षडंग मेंएक अंगहै अर्थात् मोहनै वारी है शुद्धसुर नामपवित्र देवता अर्थात् ऐसेश्रीकृष्ण तानामतासों लसुहैनाम लसरही है भलेवंशकी है नाम श्रेष्ठकुलकी है किधौं बिंबओष्ठधर है ऐसी बिंब समानओष्ठधारणकिये है ऐसी है नायका ३८ ॥

अथअभंगश्लेष ॥ यथा स० ॥ केसर रंग लिहारो भटू लखि लालची नाह अबीर लिये पर । कोस गुलाल लसै यहि औसर छाई सुवास गुलाबनके भर । हाथ

गहे पिचिकाचकि तोहि सो काशी के राज गहो तुमहूं वर । गावत ताल सुराग सखी सब तान तरंगन सों रस को भर ३९ ॥

टी० ॥ होलीपक्षअर्थ ॥ यहां नायका सों सखीकी शिक्षाफागुखेलनेसें केसरके रंग तिहारो भटू हे भटू तिहारे यहां केसरके रंगबनरहे हैं लखि लालची नाह अबीरलिये परदेखु लालची जो नायकपर अबीरलिये है कोस गुलाल लसै यहि औसर या समयमें कोशनामभंडार गुलालके भरे सोहैं है अथवा कोस पर्य्यन्त या समयमें गुलाल शोभितहोरहौहै छाई सुवास गुलाबनके भर सुगंधिछायरही है गुलाबनकी वृष्टिकरके हाथगहे पिचकाचचकी तोहि हाथमें लियेहुये पिचकानाम पिचकारी चकिनाम देखै है तोको सो काशीके राजगहो तुमहूं वर काशीराजकबिनाम सो तुमहूं श्रेष्ठ ग्रहणकरो अर्थात् पिचकारी तुमहूं गहो गावत ताल सुराग सखी सब तानतरंगनसों रसको भर गावतहैं सुन्दरताल अनुराग सम्पूर्ण सखी तानकी जो है तरंग नामलहर ताकरिके रस अतिशयहो रह्योहै ऐसी होलीमचरही है सो जानिये १ ॥

(अथ मानिनी नायका पक्ष अर्थ) यहां मानिनी नायका के मान मोचन करावने में उत्तम दूती का बचन केसर रंगतिहारोभटू नाम हे भटू केसर रंगनाम कौनहै तुम्हारे संगकी बराबरी को लखि लालची नाह अबीरलिये पर नाम लालची जो नाह है सो देखु अबीरनाम नबीर अबीर तालियेहुये हैं अर्थात् अधीरता उत्कृष्ट धारण किये हैं आशक्तता व्यंगभई कोस गुलाललसै यह औसरनाम को या समयमें लालके संगमें सोहै है यहकाकु अर्थात् तूही सोहै है और गोपी नहीं छाई सुवास गुलाबन के भर काहे ते कि तेरी सुवास गुलाब रूपी भर छाइरही है या पद ते पद्मिनी व्यंगभई हाथ गहे पिचका चकि तोहि नाम हाथ गहे हुये है पी नाम पीतम चकाचकि

तो नाम चकृत होय के तेरो सो काशी के राज गहो तुमहूँ वरकाशी राज कविनाम सो तुमहूं ग्रहणकरो वर नाम पतिको अर्थात् अंगीकार करो गावत नामकहतहूं ताल सु नामता नायक सों शोभितहोहु रागनाम अनुराग करिके सखी नाम हे सखी सवतान तरंगन सों नाम सव तरै सै तानते हुये रंगन सो अर्थात् अपने तईं खैंचतेहुये नाम मानपूर्वक मिलके रसको भर नामरसकी अतिशयताकर ३९ ॥

अन्यच्चद्व्यर्थ ॥ क० ॥ सीकर ललित सोहै सुमन समाल पर राजै द्विजराज दुति हंस कलरत जात । कबि काशीराज भनि मृदु सुखदानि वानी मैन सेन रसन रसालहि भरत जात ॥ सोभै उरबसी रति सुंदर सुकेशी वेस रसन वलय मंजु घोष उचरत जात । रति विपरीति किधौं जयकरि इन्द्र आज वारनते मुक्ता हज़ारन झरत जात ४० ॥

टी० ॥ (इन्द्रकायुद्धजयपक्षअर्थ) सीकर ललित सोहै सुमन समालपर सीकर नाम अंबु कण सुंदर शोभायमान होरह्यो है नाम प्रस्वेदविंदु सुमनसनाम देवतानके माल नाम अवलीपर जहाँ राजै द्विजराज पद नाम सोभै है द्विजराज नाम चन्द्रमाको पद जहाँ नाम प्रतिष्ठा जहाँ हंस कल रत जात हंस नाम सूर्य कल नाम उच्चरत नाम प्रीति करिके युक्त जातहै जहाँ काशीराज कविभनि नामकहै है मृदु सुखदान वानी कोमल सुखदातावानी जहांहै मैननाम कामदेव सेननाम सैन्या कामदेवकी जो सेनाहै वसंत ऋतुसो रस करिके रसाल जो आम्रताको तृप्तकरतजात है जहांसोभै उरवसी शोभायमान है उरबसी अप्सरा जहां रति सुंदर नामसुंदर कामपत्नी जहां सुकेसी वेस नामभली सुकेसी अप्सरा जहाँ रस नवलय मंजु घोष उचरत जात रस नव नाम नौरसकी लय नाम साम्यता करिके मंजु घोष नाम मधुर शब्द

करिके उच्चार करत जात हैं जहाँ बारनते मुक्ताहजारन झरत जात बारन नामहाथी तापरतेमोती हजारन वृष्टि करत जात है अर्थात् दानकरत जात है जयकरि इन्द्र आज आज नामसंग्राम ताकोजीतिके इन्द्र या रीतिकरिकेशोभायमानहै सो जानिये१ ॥

(अथनायिका बिपरीति रतिपक्षअर्थ) सीकर ललितसोहै सी नाम सीतकार करिके ललित सोहिरहीहै सुमन समालपरनाम सुमनसनाम पुष्पताकी है उत्कृष्ट मालाजहांराजै द्विजराजद्युति द्विजनामदंत राजनामपंक्ति ताकीद्युति शोभायमानहै जहांहंस कलरतजात हंसकनाम पाजेब लरतजातनाम लड़तजायहैं जहां अर्थात् शब्दकरै हैं काशीराज कबिनाम भनि मृदुसुख दानिबानी तासमयमें कोमल सुखदाता जो ऐसी बानी है ताको कहिरहीहै मैन सैन रसनरसालहि भरतजात नाम कामरूपी जो सैन हैं कटाक्ष तारससों रसालजो नायकताकों तृप्तकरत जाय है शोभै उरबसी उरनाम वक्षस्थल तापरबसीहुई सोहै है नामबैठी हुई सोहैहै रतिसुंदरनाम सुंदर रति समयमें सुकेशी वेशनाम सुन्दर हैंकेश अरु अवस्थाजाकी रसनबलयमंजुघोष उचरतजात रसन नामकटि किंकिणी बलयनाम चूड़ीतासमयमें कोमलशब्दकरत जात हैं आजबारनते मुक्ता हजारन झरतजात आजनाम आज के दिन बारनते नामकेशनते मोतीहजारन झरतजात हैं यहां यहव्यंग सूचित भई कि मगडनकिये जो केश हैं ताकी जो ग्रंथ विपरीति समयमें छूटिपड़ीहै तामेंते मोती झरतहैं रतिविपरीति किधोंकिधोंऐसी रतिविपरीति है ४० ॥

अथअभंगश्लेषत्र्यर्थ ॥ क० ॥ सुबरण गरभ हैं गुणगण नरम हैं हंसकल सुपदहैंदाति सुबसतुहै । उक्ति मध्यद्विजराज राजैबररीतिसजउत्तम सुबानी कलभूषण लसतुहैं ॥ धुनिशिव युक्तछाजै परअर्थ धामछबि लोकमें बिदित यहरसको रसतुहै। ऐसे लोकनाथ किधोंस्वीया

तियजानुकिधों भनि काशीराजकबिकाव्य दरसतुहै४१॥

टी० ॥ (ब्रह्मापक्षअर्थ) सुवरणगर्भ हैं नाम हिरण्यगर्भ हैं गुणरजोगुण गणननाम पार्षदन करिके रम हैं नाम गुण पार्षदन करिके रमिरहे हैं हंसकलसुपद हैं नामहंसराज जाको चरण है अर्थात् वाहन है वृत्ति सुबसतु है नामभली जो ब्रह्म वृत्ति सो जिनमें बसति है उक्ति मध्यनाम लोकोक्ति में द्विज राजनाम ब्राह्मणनके राजाहैं राजैवर रीतिनाम श्रेष्ठरीतिरचना कीराजैहै जिनमें सजउत्तम सुबानी नामपवित्र अरु सुन्दरऐसी जोहैं शारदा तिन करिके सजिरहे हैं करुभूषणनाम जिनकेकरमें कांक्षान लसतुहै नामनिरपेक्षहैं धुनिशिवयुक्त छाजै शिव कहिये वेद ताकी जो धुनि ताकरिके शोभित हैं परअर्थ धामछबि नाम परायाअर्थ अरु तेजताकरिके शोभित हैं लोकमें बिदित हैं यह रस कों रसतुहैं नामब्रह्मरस कों बरसतु हैं ऐसे लोकनाथ नाम ऐसे हैं ब्रह्मा १ ॥

(सीता पक्षअर्थ) सुबरणगरभहै नामसुंदर रंग का गर्भ है गुणगण नरमहै नाम क्रीड़ारूपी गुणनकी समुदायहै हंसकनाम पाजेव लसुपद है चरण में लसि रह्यो है वृत्ति सुबसतुहै भली चलन जामेंवसतु है उक्तिमध्य द्विजराज राजैनाम जाके वचन कहनेमें द्विज जो हैं दांततिनकीराज जो है पंक्ति सो शोभित है बररीति सजनाम पतिरीतिकीहै सजजामें अर्थात् पतिब्रताउत्तम सुबानिक नामश्रेष्ठहै सुन्दर वनाव जाकोरुनामअरु भूषणलसतु हैंगहना शोभितहै धुनिशिवयुक्त छाजैनाम सुखयुक्त शब्दकरिके सोहैहै अर्थात् मधुर स्वर है पर अर्थधाम छविनाम उत्कृष्ट द्रव्य अरु उत्कृष्ट घर इन करिके शोभितहै लोकमें यहबात विदित है रसको रसतु है शृंगार रसको बरसतु है किधौं स्वीया तियजानि ऐसी सीतातियहै २ ॥

(अथकवि काव्यपक्षअर्थ) सुबरणगरभहैं नामसुन्दर अक्षर

जाके मध्यमें हैं गुणनाम प्रसादओज माधुर्य्यादि गुणकरिकेयुक्त है नरम है नामकोमल है हंसनाम सूर्य्य है अर्थात् प्रकाशित है कलनाम गंभीर है सुपद हैं भले हैं चरण जामें बृत्ति सुबसतु है नाम कैशिकी आरभटी आदि लेके सुन्दर बृत्ति जामें बसतु है उक्ति मध्य द्विजराज राजै नाम काव्योक्तिके बिषे चन्द्रमासों स्वच्छ सोहै है वर रीति सज नाम वैदर्भी पांचाली इत्यादिक श्रेष्ठ रीतिसे सजिरही हैं उत्तम नाम उत्तम काव्य है सुबानी करु नाम सुन्दर वानीकी करनवाली है भूषण लसतुहै नाम अलंकार जामें शोभितहैं धुनि शिवयुक्त छाजै नाम देवराति धुनि शृंगार रतिभाव ध्वनि इत्यादिक धुनि शिव नाम कल्याण युक्त सोहै हैं पर अर्थ धाम नाम उत्कृष्ट अर्थकी गेहहै छबिलोक में विदित यह नाम या काव्यकी शोभा जगत्में विदित है रस को रसतु है नाम शृंगारादिक नवरसको देत है कबि काशिराज कहे है किधों ऐसी कविकी काव्य दृष्टिमें आवत है ३ । ४१ ॥

अथअभंगश्लेषचतुर्थ ॥ क० ॥ इडाकरि शोभमान वरपद भूषण है मधुमें रुचिर रुचि उर अवरेखिये । लसत विमल भाव दायक परम तंत्र भनि काशीराज जामें पक्ष छबि पेखिये ॥ राजत है मृग गति छाजत है रूप शिखा पालि मरयादा जहाँ बसतहै लेखिये । ऐसे रामचन्द्र किधों ऋषिराज चन्द्र किधों किधों चारु चन्द्र किधों चन्द्रमुखी देखिये ४२ ॥

टी० ॥ (रामचन्द्रपक्षअर्थ) इडाकर शोभमान नाम पृथ्वी करिके शोभायमान है वर पद भूषणहै नाम श्रेष्ठ प्रतिष्ठाहै जिनकी अरु श्रेष्ठही आभूषण है मधुमें रुचिर रुचि नाम अशोक वृक्षमें है रुचिर रुचि जाकी उर अवरेखिये नाम उरमें यहबात बिचारिये लसत बिमलभाव नाम शोभितहै सन्ताभाव जिनमें

दायक परम तंत्र नाम दाता उत्कृष्ट पराक्रमके कबि काशीराज कहे हैं जामें पक्ष छबि पेखिये नाम जामें सहाय रूपी छबि देखिये राजतहै मृगगति नाम शोभितहै शिकारकी क्रिया जिनमें छाजतहै रूप शिखा नाम राजत है रूप श्रेष्ठ जिनको पालि मर्यादा जहाँ बसत है लेखिये पालि नाम पुल सेतु बाँधने की मर्यादा जिनमें बसत है यह लेख है ऐसें रामचन्द्र किधों ऐसे हैं रामचन्द्र १ ॥

(ऋषिपक्षअर्थ) इडाकरि शोभमान नाम कामधेनु करिकै शोभित हैं वरपद भूषण है वर नाम वरदान पद नाम वाक्य सोईहै आभूषण जिनके मधुमें रुचिर रुचि नाम दुग्धमें अधिक है रुचि जिनकी यह बात उर में अवरेखिये लसत विमल भाव नाम शोभित है निर्मल पूजामें प्रीति जिनकी दायक परमतंत्र नाम दाता उत्कृष्ट शास्त्रके कवि काशीराज कहै हैं जामें पक्ष छबि पेखिये नाम जिनमें गुरूकी छबि देखिये अर्थात् गुरू हैं राजतहै मृग गति मृग नाम भिक्षावृत्ति राजत है जिनमें छाजत है रूप शिखा नाम शोभितहै रूप अरुशिखा जिनके पालिमर्यादा जहाँ बसतहै पालिनाम चेलनको दियो है विद्या दान जहाँ यह बसत है अर्थात् विद्यारूपी प्रसाद दियो है यह लेख है ऋषिराज चन्द्र किधों ऐसे ऋषिनके राजा चन्द्रमा नाम ऋषि हैं २ ॥

(चन्द्रमापक्षअर्थ) इडाकरि शोभमान नाम आकाश करिकै शोभायमान हैं वरपद भूषण है नाम श्रेष्ठ रात्रि है आभूषण जिनको मधुमें रुचिर रुचि नाम अमृत मयहै रोचक शोभा जाकी उर अवरेखिये नाम उरमें लिखिये लसत विमल भाव नाम शोभित है निर्मल पदार्थ अर्थात् निर्मल पदार्थ है चंद्रमा दायक परम तंत्र नाम दाता उत्कृष्ट तंत्र नाम कुलके अर्थात् उत्तम चन्द्रवंश उत्पन्न किया है जिनने कबि काशीराज कहै है जामें पक्ष छबि पेखिये नाम जिसमें शुक्लपक्षकी छबि देखिये राजतहै मृगगति नाम राजत है हरिण गति करिके अर्थात् हरिण है वा-

हन जाके छाजत है रूप शिखा नाम शोभितहै रूप अरु शिखा नाम किरण जाके पालि मर्यादा जहाँ बसतहै नाम लाछन की मर्यादा जहाँ रहत है लेखिये नाम लिखी है किधों चारु चन्द्र ऐसे है सुंदर चन्द्रमा ३ ॥

(नायिकापक्षअर्थ) इडाकरि शोभमान नाम बचनकरिकेशोभायमानहै वरपदभूषण है नाम श्रेष्ठ चरणमें आभूषण है मधुमें रुचिर रुचि मधु नाम वसंतऋतुतामें रुचिरहै रुचिउरअवरेखिये उरमें लिखिरह्योहै जाके लसत बिमलभावनाम निर्मलभाव बिभाव इत्यादिक शोभि रह्यो है जामें दायक परमतन्त्र नाम दाता उत्कृष्टसुखकी कविकाशीराज कहै है जामें पक्ष छबि पेखिये नाम या नायकाके केश समूहमें छबिदेखिये राजतहै मृगगतिनाम शोभित है गजकीसी गति जामें छाजत है रूप शिखा नाम शोभित है रूप की शिखा नाम अग्रभाग अर्थात् कांति में मुख्य है पालि मर्यादा जहाँ बसत है नामस्तुति कीसी मायासें बसत है अर्थात् स्तुतिकरबेके योग्य है ऐसी दूसरी नहीं लेखिये नाम यह लेख है किधौंचन्द्रमुखी देखिये ऐसी चन्द्रमुखी नायिका देखिये ४।४२॥

अथअभङ्गश्लेषपंचार्थ ॥ क० ॥ कालिका लसत जहाँ मालती प्रसन्नकर रोहित रुचिरराचै लोकमें बखानीहै । दायक अम्रतबर कारण करणलसु सारँग क्रिया प्रवीन सबजगजानी है ॥ आत्मा छबिछाजतहै राधद्युति राजत है योग योग्य काशीराज ध्वनि सुखदानी है। ऐसे किधौं विस्नु किधौं कालिका की बरषाहै धन्वन्तरि वैद्य किधौं गोपिका सुहानीहै ४३ ॥

टी० ॥ (बिष्णुपक्षअर्थ) कालिका लसत जहाँ नाम सम्पूर्णता शोभित है जहाँ मालती प्रसन्नकर नाम चमेली प्रसन्नकरन वाली है जाकी रोहित रुचिरराचै नाम धीर पुरुषता सुन्दर सो है

है लोकमें कही है दायक अमृतवर नाम दाता मोक्ष वरदान के कारण करण लसु कारण नाम उत्पादक करण नाम कर्म हेतुके लसै हैं सारँग क्रिया प्रवीन नाम धनुष क्रियामें चतुर हैं सबजग जाने हैं आत्मा छविछाजत हैं परमात्मा की छवि जिनमें सोहै है राधा द्युति राजत है सिद्धि द्युति सोहै है योग योग्य ध्यान योग्यहैं काशीराज कवि नामध्वनि सुखदानी है जिनका शब्द सुखदाता है ऐसे किधौं विष्णु ऐसे हैं विष्णु १ ॥

(कालिकापक्षअर्थ) कालिका लसत जहाँ मदिरा सोहै है जहाँ मालती प्रसन्नकर कांचीमणि पात्रमें प्रसन्न करनवारो है अर्थात् पात्रमें मदिरा प्रसन्न करनवारो सोहै है रोहि रुचिरराचै कुंकुम रुचिर सोहै है लोकमें कही है दायक अमृतवर दाता सुवर्ण की उत्कृष्ट है कारण करण लसु नाम नृत्यकी आदि कारण सोहै है सारँग क्रिया प्रवीन खड्गक्रिया में प्रवीनहै सम्पूर्ण जन जानै हैं आत्मा छविछाजत है नर पिंजर की छवि सोहै है जहाँ राध द्युति राजत है छेदन विशेष द्युति सोहै है अर्थात् दैत्य मर्दन छवि सोहै है जहाँ योग योग्य तेज योग्य है जहाँ काशीराजकवि नाम ध्वनि सुखदानी है जाको शब्द सुखदाता है किधौं कालिका नाम ऐसी है कालिका २ ॥

(वर्षा पक्षअर्थ) कालिका लसत जहाँ नाम मेघघटा सोहै है जहाँ मालती प्रसन्नकर नदीको प्रसन्नकरनवालीहै अर्थात् परिपूर्णकरनवालीहै रोहित रुचिर राचै इन्द्रधनुष सुन्दर सोहै है लोकमें कहीहै दायक अमृतवर दाता जलकी श्रेष्ठ कारण करणलसु आदि कारण खेतकी सोहै है सारँग क्रिया प्रवीन केकी अथवा पपीहा की क्रियामें प्रवीन है सब जननने जानी है आत्मा छवि छाजत है नाम पवन की छवि सोहै है राध द्युति राजतहै बिजुरी की द्युति सोहै योग योग्य नाम उपमाके योग्य है काशीराजकवि नाम ध्वनि सुखदानी है नाम गर्जनध्वनि जाकी सुखदाता है किवर्षा है ऐसी है वर्षा ऋतु ३ ॥

(धन्वन्तरिवैद्यपक्षअर्थ) कालिकालसत जहाँजटामांसी औषधीसोहै है जहाँमालती प्रसन्नकर नाम बिशल्या औषधी प्रसन्न करनवारी है जहाँ रोहित रुचिरराचै रुहेडा औषधी सुन्दर सोहै है लोकमें कही है दायक अमृतवरदाता सिद्ध औषधी के ॥ कारण करण लसु क्रिया भेदमें आदि कारण सोहै है सारँगक्रिया प्रवीन नाम धातु बेधन क्रियामें चतुर है सब जग जाने है आत्मा छबि छाजत है नाम यत्नकी छबि सोहै है जिनमें राध द्युति राजतहै आमेर औषधी की द्युति जहाँ राजै है योग योग्य औषधी में योग्य है अर्थात् औषधी के मिलावने में योग्य है काशीराज कबि नाम ध्वनि सुखदानी है जाको बचन सुख दाता है धन्वन्तरि बैद्य किधौं ऐसे धन्वन्तरि वैद्य हैं ४ ॥

(गोपिकापक्षअर्थ) कालिका लसत जहाँ नाम रोमावली सोहै है जहाँ मालती प्रसन्नकर चन्द्र चांदनी जाकी प्रसन्न करन वारी है रोहित रुचिर राचै नाम हार जाके सुन्दर सोहै है लोक में कही है दायक अमृतवरदाता गोरसकी श्रेष्ठ कारण करण लसु हाथके रंगनेमें आदि कारण सोहै है अर्थात् मेंहदी महावरी लगावैही है सारँग क्रिया प्रवीन काम क्रियामें चतुरहै सब मनुष्य यहबात जानै हैं आत्मा छबि छाजत है स्वभावकी छबि सो है है जामें राधा द्युति राजत है राधा नाम गोपीकी कांति सोहै है योग योग्य नाम मिलापके योग्यहै यह वचन दूतीका नायकसों जानिये काशीराज कबि नाम ध्वनि सुखदानी है जाको वचन सुखदाताहै गोपिका सुहानी है राध नाम गोपी सुंदरहै ५। ४३ ॥

अथअभंगश्लेषषडर्थ ॥ क० ॥ शोभित सरसगंड सारँग सुखद अति भूषण विमल वर्ण जगमें प्रसिद्धहै । अमृत लसत जहाँ गुणमें अधिक हित धारण ललाम किये छबिकी सुवृद्धिहै ॥ कवि काशीराज भनि राजत है बरवृष तीर्थ सुप्रगट लषुछाजे भग ऋद्धि है । किधों

गणनाथ किधों वाणी ब्रजनाथ किधों नाथ नाथ दिवा नाथ किधों तिय निद्धि है ४४ ॥

टी० ॥ (गणपतिपक्षअर्थ) शोभित सरस गंड सारंग सुखद अति नाम शोभित है रस करिके युक्त गंडस्थल सो सारँग नाम भ्रमरताको अत्यंत सुखद है भूषण विमल नाम निर्मल हैं आभूषण जिनके वर्ण जगमें प्रसिद्ध है नाम स्तुति जिनकी जगमें प्रसिद्धहै अमृत लसतजहाँ नाम सुधालसैहै जहाँ अर्थात् चन्द्र शेखर हैं गुण में अधिक हित नाम सतोगुणमें है अधिक हित जिनको धारण ललाम किये नाम गुणाधिक पुरुषता धारणकिये हैं छविकी सुवृद्धिहै नाम छविकी भली वटवारहै कविकाशिराज कहै है राजत है वरवृष नाम राजतहै श्रेष्ठ मूषक वाहन जिनको तीर्थ सुप्रगट लसु नाम अवतार विष्णुका प्रत्यक्ष देखो छाजै भाग ऋद्धि है नाम ऐश्वर्यरूपी ऋद्धि जिनमें छाजै है किधों गण नाथ नाथ ऐसे गणेश हैं १ ॥

(वाणी पक्षअर्थ) शोभित सरसगंड सारंग नामशोभित है अधिक चिह्नवाणीको जिनमेंसुखद अतिनाम अत्यंत सुखदायक हैं भूषण विमल वर्णनाम निर्मल भूषण अरु निर्मलही है वर्ण नामअंगराग जाकोजगमें प्रसिद्धहै अमृत लसतजहां सुवर्णशोभै है जहां गुणमें अधिक हितनाम श्वेत गुण में अधिकहित जाको धारण ललाम कियेनाम अति उत्तमता धारण किये हैं छविकी सुवृद्धिहै नामकांतिकी सुवृद्धि है कविकाशिराज कहैहै राजत है वरवृष शोभितहैं वृषनाम श्रेष्ठबरदान जिनमें तीर्थ सुप्रगट लखु नामशास्त्र प्रत्यक्षदेखो छाजैनाम सोहैहै जिनमें भगऋद्धिहैनाम शोभाकी अधिकताहै किधोंबाणी ऐसीहै शारदा २ ॥

(कृष्णपक्षअर्थ) शोभित सरसगंडनाम शोभितहै अधिकशूर पुरुषनमें सारंग सुखद अतिनाम गरुड़के अत्यन्त सुखदाता हैं भूषण विमल वर्णनाम आभूषणहैं निर्मल सुवर्णके जगमेंप्रसिद्धहै

क्ष	[illegible]	घ	ब्र	ह्म	[illegible]	भा	रिव	म	[illegible]	क	वि	ज	[illegible]	प्र	भा
[illegible]	ल	[illegible]	त	[illegible]	र	भा	स	[illegible]	प	[illegible]	से	[illegible]	न	[illegible]	म
व	उ	पु	[illegible]	म	सु	भ्र	[illegible]	त	मं	त्र	[illegible]	व	न	स	[illegible]
ला	सा	को	[illegible]	प	[illegible]	भ्र	[illegible]	त्रि	[illegible]	नो	सा	षि	[illegible]	म	[illegible]
ता	ज	से	[illegible]	ला	कु	ऊ	[illegible]	ली	है	सा	[illegible]	ल	भ्रा	र	[illegible]
[illegible]	ज	[illegible]	ज	[illegible]	वं	[illegible]	स	[illegible]	ता	[illegible]	स्कु	[illegible]	ते	[illegible]	स्व
भ्र	[illegible]	त	सु	ल	[illegible]	[illegible]		के	[illegible]	व	धी	[illegible]	[illegible]	र	प्र
से	[illegible]	व	क	भ	[illegible]	कि	[illegible]	र	त	र	सी	सु	[illegible]	व	पु
स	र	[illegible]	यों	[illegible]	ल	[illegible]	भ	[illegible]	लो	[illegible]	म	द	म	[illegible]	सी
ब	ति	य	[illegible]	तु	[illegible]	म	[illegible]	रि	[illegible]	जा	न	भ्र	व	म	[illegible]
उ	सु	[illegible]	[illegible]	हे	व	न	भो	[illegible]	भ	ई	सा	व	न	म	ध्य
[illegible]	है	[illegible]	डा	[illegible]	ग	ड	रा	नु	[illegible]	क	न	दु	स्व	भ्र	ब
ति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स	[illegible]	स्यो	गु	या	न	[illegible]	ल	भ	ग	ल	[illegible]
स	[illegible]	[illegible]	त	[illegible]	ला	[illegible]	ज	भ्र	सु	स	[illegible]	न	प्र	[illegible]	न
[illegible]	ज	ल	[illegible]	र	[illegible]	भ्रु	[illegible]	स	ब	क	ऐं	[illegible]	[illegible]	न	ब्र
भ्रा	गे	ग	नि	[illegible]	ति	[illegible]	मि	[illegible]	ती	भ्र	सो	[illegible]	[illegible]	ला	[illegible]

व खि व व र र स व र ल कु चा खि

तं ध र धौ हु र सं व सु पा लि न ल

र न व लि ह द घ खा वा धू मी रं त्र

र ला यो लु जो सा घ ल नी र सं त लि

ती न सा त मा के लि तं गा ला ता नि है

लं द्रो प को ल को लि ना सां च्छ णं ध्या रे

ग हं सै हाँ र क त छा तु अ व भा व

द प डि म सो कि र सा नु क सा का र

लि क सु त कु कु त स चा स्व गा गा भ

रि जी ता नि रि स लि रो र ह्यो है सा नु

कु ला उ च लि व न हुँ ज न पुं ज लें

तं र प स्यो ति य खि तु ग ला स त्या तु

गी तु ही प र म स र स म रि ता न

व र स भा त सा ल ल न ख्र क त त्र

ती स नी ह ख ल व ह नी ना घ मा द

ग [illegible]

जगत् में प्रसिद्धनाम बिख्यात है यह अमृत लसत जहांनाम मोक्ष लसतहै जहांगुणमें अधिकहित गुणनाम भीमसेन तिनमें है अधिक हितजिनको धारण ललाम किये नाम तिलकधारण किये हुये हैं छबिकी सुवृद्धि है नाम कांति की सुन्दर बट वार है तिनमें कबि काशिराज कहैहै राजतहै बरवृषनाम शोभितहै श्रेष्ठ पराक्रम तीर्थ सुप्रगट लखु नाम यज्ञरूप प्रत्यक्ष देखो छाजै भग ऋद्धि है नाम छाजै है यश की समृद्धि जिनमें किधों ब्रजनाथ ऐसे हैं श्रीकृष्ण ३ ॥

(शिवपक्षअर्थ) शोभित सरस गण्ड नाम शोभित है अधिक योग भेद जिनमें सारँग सुखद अति नाम टेढो चन्द्रमा अत्यन्त सुखद है जिनके भूषण बिमलबर्ण नाम जिनको कीर्त्तिही निर्मल भूषण है जगत्में यह बात प्रसिद्ध है अमृत लसत जहाँ नाम जल सोहै है जहाँ अर्थात् गंगाधर हैं गुणमें अधिक हित नाम त्यागमें अधिक है हित जिनको धारण ललाम किये नाम ग्रहण शैलको किये है छबि की सुन्दर वृद्धि है कबि काशिराज कहै है राजत है बर वृष नाम शोभितहै श्रेष्ठ बैल जिनके तीर्थ सु प्रगट लखु नाम गुरु प्रत्यक्ष देखो अर्थात् शिव सबके गुरू हैं छाजै भग ऋद्धि है नाम शोभितहै शेषकी अधिकता जहाँ किधों नाथ नाथ नाम ऐसे हैं महादेव ४ ॥

(सूर्य्यपक्षअर्थ) शोभित सरस गंड नाम शोभित है अधिक है ग्रह भेदमें सारंग सुखद अतिनाम कमलके सुखद हैं अत्यंत करिके भूषण विमल वर्ण नाम निर्मल आभूषण वर्ण नाम गुण है जिनमें अर्थात् प्रकाश शक्ति जगत्में विख्यात है यह अमृत लसत जहाँ देवता लसै हैं जहाँ गुणमें अधिक हित नाम तेजमें अधिक है हित धारण ललाम किये नाम ग्रहण ललाम नाम अवधि किये हैं अर्थात् सूर्य्य करिके वर्ष मासादि ज्ञान होतहै छबि की सुवृद्धि है नाम कांतिकी बढवारहै जहाँ कवि काशिराज कहै हैं राजत है वरवृष शोभित है श्रेष्ठ धर्म जिनमें तीर्थ सुप्रगट

लखु नाम दर्शन प्रत्यक्ष देखो अर्थात् प्रत्यक्ष देवता हैं छाजै भग ऋद्धि है सोहै है महिमाकी अधिकता जिनमें किधों दिवानाथ ऐसे हैं सूर्य्य ५ ॥

(नायकापक्षअर्थ) शोभित सरस गंड नाम शोभायमान है सरस नाम हास्य रस करिके युक्त गंड नाम कपोल सारँग सुखद अति नाम जाको चन्दन अत्यंत सुखदायकहै भूषणविमल वर्ण नाम निर्मल है आभूषण अरु निर्मलही है रोली जाके जगमें प्रसिद्धहै अर्थात् जगत्में विख्यात यह नायका अमृत लसत जहाँ सुंदरता लसै है जहाँ गुणमें अधिक हित नामरूप गुणमें अधिक है हित जाकी अर्थात् शृंगार बनायोई करै है धारण ललामकिये नाम मणि भूषण धारण किये है छविकी सुवृद्धि है कांतिकी सुंदर बढ़वारहै जामें कवि काशिराज कहै है राजतहै वर वृष तीर्थ सु प्रगट लखुनाम शोभितहै श्रेष्ठ वृष नाम काम तीर्थ नाममंत्री सी अर्थात् श्रेष्ठ काममंत्रीसी सुंदर प्रत्यक्ष देखु सोहै है छाजै भग ऋद्धि है सो है है भग नाम सौभाग्यकी ऋद्धि जाके किधों तिय निद्धि है ऐसी तिय रूपी रत्न है ६ । ४४ ॥

अथअभङ्गश्लेष ॥ सप्तार्थ क० ॥ बरहंसकरि सोहै धारण किये हैं हरिदायक परम शिवजगमें बखानिये । करचो नैन भद्रा प्रिय गुण शुभ राजत है पक्षमें रुचिर रुचि लोकलोक गानिये । धरम प्रगट कियो सुखद शक्तिधर भग छवि छाजत है बचन प्रमानिये । भनिकाशीराज ऐसे हरि हरिहरि हरि ऐसे हरि हरि किधों प्रौढ़ा तिय जानिये ४५ ॥

टी० ॥ (विष्णुपक्षअर्थ) वर हंसकरि सोहै श्रेष्ठ निर्लोभता करिके सोहै है धारण किये हैं हरि धारण कियेहुये हैं गरुडको दायक परम शिवदाता उत्कृष्ट मोक्षके जगमें कहा है करयोनैन भद्रा प्रियभद्रा नाम हनूमान् भन्नक्षत्रं द्रवतीति भद्राकरयो है नेत्रनतें

हनूमान्‌को प्रीतिगुण शुभ राजतहै सतोगुण सुन्दर राजतहै पक्षमें रुचिर रुचि मयूर पक्षमें रुचिरहै रुचिजाकी लोकलोकमें गाई है धरम प्रगटकियो धनुष प्रगटकियो है सुखद शकतिधर सुखदेने वालशिकाति जो लक्ष्मी ताको धारण किये हैं भगछबि छाजतहै ऐश्वर्यकी छबि छाजत है बचन प्रमानिये या बचनको प्रमाण मानिये कबि काशीराज कहैहै ऐसे हरि ऐसे हैं बिष्णु १ ॥

(शिवपक्षअर्थ) बरहंस करि सोहै परमहंस अवस्था करिके शोभित है धारण किये हैं हरि धारण किये हैं चन्द्रमाको दायक परम शिवदाता परमकल्याणके जगमें बखानेहैं करयो नैनभद्रा प्रिय करयो है नेत्रनते वृषभको प्रीतिगुण शुभ राजत है तमोगुण शुभराजत है पक्षमें रुचिर रुचि सहायमें रुचिररुचि जाकी लोक लोकमें गाई है धरम प्रगटकियो स्वभाव प्रत्यक्षकियो है सुखद शकतिधर सुख देनेवाले हैं स्वामिकार्तिक के भगछबि छाजत है बैराग्यकी छबि छाजै है जिनमें बचन प्रमान कीजिये कबिकाशीराज कहैहै हरिऐसे हैं महादेव २ ॥

(ब्रह्मापक्षअर्थ) बरहंस करि सोहै श्रेष्ठ हंस पक्षी करिके सोहै है धारण किये है हरि धारण किये हैं धर्म सनातनको दायक परम शिव दाता परम वेदके जगमें कह्यो है करयो नैन भद्रा प्रिय करयो है नेत्रन ते साधु पुरुष नारदादिकको प्रीति गुण शुभ राजत है रजोगुण शुभ राजै है पक्षमें रुचिर रुचि साध्य वस्तुमें है रुचिर रुचि जाकी अर्थात् सम्पूर्ण साध्य है लोक लोकमें कह्यो है धरम प्रगट कियो अहिंसा धर्म प्रगट कियो है सुखद शकतिधर सुख देनेवाली उत्पन्न कारक शक्ति धारण किये हैं भग छबि छाजत है ज्ञानकी छबि छायरही है या बचनको प्रमाण मानिये काशीराज कहै है हरि ऐसे हैं ब्रह्मा ३ ॥

(इन्द्रपक्षअर्थ) बरहंस श्रेष्ठहै राजानमें करि सोहै गज सोहै है जिनके धारणकिये हैं हरि धारण कियो है खड्गको दायक परम शिव दाता उत्कृष्ट जलके जगममें कह्योहै करयो नैन भद्रा प्रिय

करयो है नेत्रन ते सुमेरु आश्रित पर्वतको प्रीतिजाने गुण शुभ राजत हैं राज्य गुण करिके शोभितहैं पक्षमें रुचिर रुचि बलमें है रुचिर रुचि जाकी लोक लोकमें जानिये धर्म प्रगट कियो यज्ञनको प्रगट किये हैं सुखद शकतिधर सुख देनेवाली बर्छीको धारण किये हैं ॥ भग छवि छाजतहै कीर्तिकी छबिकरि शोभित हैं वचन प्रमान मानिये काशीराज कहै है हरि ऐसे हैं इन्द्र ४ ॥

(सूर्य्यपक्षअर्थ) वर हंसकरि सोहै श्रेष्ठ घोडा करिके शोभित हैं धारण किये हैं हरि धारण किये हैं किरणको दायक परम शिव परम कमलके दाताहैं जगमें कह्योहै करयो नैनभद्रा प्रियकरयो है नेत्रन ते श्रेष्ठ पुरुष सूर्य्यवंशके राजानको प्रीति जिनने गुण शुभ राजत हैं तेज गुण शुभ राजे हैं पक्षमें रुचिर रुचि मित्रता में है प्रीति जाकी लोक लोकमें कह्यो है धर्म्म प्रगट कियो यमराजको प्रगट कियो है जाने सुखद शकतिधर सुख देनेवाली प्रकाशशक्ति धारण किये हैं भग छविछाजतहै बडाई की छविछाजत है अर्थात् नवग्रहनमें बडा है या वचनको प्रमानिये कबि-काशीराज कहै है हरि ऐसे हैं सूर्य्य ५ ॥

(चन्द्रमा पक्ष अर्थ) वर हंस करि सोहै सूर्य्य करिके श्रेष्ठ शोभित हैं धारण किये हैं हरि धारण किये हैं श्री जो शोभा ता को दायक परम शिवदाता उत्कृष्ट सुगंध औषधीन के जगतमें जानिये करयो नैन भद्रा प्रिय करयो है नेत्रन ते कल्याणनको प्रिय जिनने गुणशुभ राजत है शीतलता गुणशुभ राजतहै जा- में पक्षमें रुचिर रुचि शुक्लपक्षमें रुचिर रुचिहै जाकी लोकलोक में गायो है धरम प्रगट कियो नाम उपमा प्रगटकरी सुखद श कति धर सुखदेनेवाली उद्दीपन शक्ति धारण करै हैं भग छवि छाजत है हरिण लांछनकी छवि शोभित है या वचनको प्रमाण मानिये काशीराज कहै है हरि ऐसे हैं चन्द्रमा ६ ॥

(प्रौढ़ा स्त्रीके पक्षअर्थ) वरहंस करिसोहै श्रेष्ठ पुरुष जो है वरपति ता करिके शोभित है धारण किये हैं हरि धारण किये हैं

सुवर्ण भूषणको दायक परम शिवदाता परम सुखकी जगमें बखान्यो है करयो नैन भद्रा करयो है नेत्रनको खंजरीट जाने प्रियगुण शुभराजत है क्रीडादिक जो प्रिय गुणशुभ हैं ता करिके शोभित है पक्षमें रुचिर रुचि केश समूह में रुचिर है रुचि जाके लोकलोकमें प्रसिद्धहै धरम प्रगटकियो कुलाचार प्रगट कियो जिनने सुखद शक्तिधर सुखदेनवाली पतिव्रता जो शक्ति ताको धारण कीनी है भग छबि छाजत हैं वचन वचन की रचना में छबि छाजै है जाके प्रमानिये प्रमाण है अर्थात् जाको वचन मिथ्या नहीं है कवि काशिराज कहै है ऐसी प्रौढ़ा तिय जानिये ऐसी है प्रौढ़ा नायका ७ । ४५ ॥

इतिश्रीमत्काशीराजविरचित चित्रचन्द्रिकायां अर्थचित्रवर्णनो नामअष्टमः प्रकाश: ॥

अथ पदार्थसंकर्य्य यमक चित्र ॥

दो० ॥ शब्दअर्थको चित्रसम जहांबरणिये मित्र । अधिक न्यून होवैन जहँसो संकरहै चित्र १ ॥

टी० ॥ शब्दचित्र अरु अर्थचित्र हेमित्र जहांसम बर्णन कीजिये अर्थात् तुल्यहोयँ अधिक अरुन्यूनशब्द अर्थ में नहोयँ सो संकराचित्र जानिये १ ॥

अन्यच्च ॥ दो० ॥ कबिधुनि शब्दमें शब्दसोंअर्थअर्थ में प्रीति। शब्दअर्थमें प्रीति सम यहसंकरकीरीति २ ॥

टी० ॥ कबिधुनि शब्द में शब्द सो नाम जहांकबिकी धुनि नामप्रीति शब्दरचना में है सो शब्दालंकार चित्रजानिये अर्थ अर्थ में प्रीतिनामजहां कबिकी प्रीतिअर्थ रचनामें है सो अर्थालंकार चित्रजानिये शब्दअर्थमेंप्रीति समनाम जहांकबिकीप्रीति शब्द अर्थमें बराबर है यह संकर अलंकार चित्रकी रीतिहै २ ॥

तत्रदूषणम् ॥ दो० ॥ अलंकारहै रीतिकेअर्थ शब्द के भाइ। इहांजु संकरको कह्यो कौनग्रंथ मतपाइ ३ ॥

टी० ॥ अलंकार द्वैप्रकारकेहैं एकशब्दालंकार एकअर्थालंकार अरु तुमने शंकर जो बर्णन कियो सो कौन ग्रंथन के मतपाइके यहप्रश्न ३ ॥

अन्यच्च ॥ दो० ॥ यमकादिकको कहतकबि शब्दालंकृत माहि । अर्थचित्र कैसेबने यहाबिचार अवगाहि४ ॥

टी० ॥ यमकआदिदेके अलंकारनको शब्दालंकार काबिकहतुहैं यह बिचारि करिके तुम देखो कि यमकको अर्थचित्र कैसे कहैकाबि सम्प्रदाय बिरुद्धहोवैहै काहेते कि कबिजनयाको शब्दालंकार में गिनत हैं ४ ॥

अन्यच्च ॥ दो० ॥ भोजग्रंथमें नाहिं कियो यमकशब्द कोचित्र । शब्दचित्र ताकोकहैंकिहिविधिसमझोमित्र ५

टी० ॥ भोज ग्रंथजो है सरस्वती कंठाभरण तामें यमकालंकारको शब्दचित्रमें नहींकह्योहै तायमकको शब्दचित्रकैसेकहैं काहेतेकिसरस्वती कंठाभरणसेविरुद्धहोवै हेमित्रसमुझिलेव ५॥

तथाचसरस्वतीकंठाभरणपद्यम् ॥ यथा ॥ वर्ण स्थान स्वराकार गति बंधान् प्रतीहियः । नियमस्तुबुधैः षोढ़ा चित्र मित्य भिधीयते ६ ॥

टी० ॥ वर्ण कहे वर्ण चित्रमें एकाक्षरादि देके गणना करी है स्थान कहे कंठादिक स्थान चित्र जानिये स्वर अकारादि इकारादि चित्रजानिये आकारादिक चित्रजानिये आकार नामकमलादिकबंध आकार चित्रजानिये गतिनाम गतागतआदि देकेगति चित्र जानिये बंध नाम पर्वत बंधादिकबंधचित्र जानिये प्रतीहि नाम इनकोलखिकरिके यहाँ छः प्रकारकोजोनियम है ताको पंडित चित्र यानामकरिकेकहत हैं ६ ॥

उत्तर ॥ दो० ॥ शब्द अरु अर्थ दुहूनको चमत्कार सम देखि । यमक चित्र संकरलखो मंमटमत अवरेखि७॥

टी० ॥ शब्द अरु अर्थ दुहूनको चमत्कारतुल्य देखिके यमक चित्रको संकर चित्र कह्यो मंमट आचार्य्य को मत जो है काव्य-प्रकाश ताको विचार करिके कह्यो है संकर अलंकार ७ ॥

काव्यप्रदीपेनवमोल्लासे यथाग्रन्थावतरणिका यथा ॥ शब्दालंकारार्थालंकारोउभयालंकाररूपविशेष लक्षणत्रयंचार्थलभ्यमिति ८ ॥

टी० ॥ जारीतिसों शब्दालंकारकह्यो अरु अर्थालंकार कहे याहीरीतिसों उभयालंकार नाम संकर अलंकार इनतीनोंन को स्वरूपअर्थलभ्यहै नाम स्वभावहीकरिके इनकालक्षणप्रत्यक्षहै ८॥

उभयालंकारोदाहरणं काव्यप्रकाशे नवमोल्लासे यथा आर्य्या ॥ तनु बपु रज घन्यो सो करि कुजर रुधिर रक्त खरन खरः । तेजो धाम महः पृथुधाम्नामिन्द्रोहरिर्जिष्णुः ९ ॥

टी० ॥ तनु वपुरिति असौ सिंहः नाम यह सिंह है अज घन्यः सर्व सिंहेषु श्रेष्ठ नाम सम्पूर्ण सिंहनमें श्रेष्ठ है कीदृशः तनुकृशं-वपुर्यस्यसः तनुकहे नाम कृशहै वपु नाम शरीर जाको पुनः कीदृशः फिर कैसो है करिकुंजराणां गज श्रेष्ठानां रुधिरेण रक्ताः लोहिताः खरास्तीक्ष्णा नखरा यस्यसतादृशः करिनाम हाथी तिन में कुंजरनाम श्रेष्ठ तिनके रुधिरकरिके रक्त कहिये लाल हैं खर नाम तीक्ष्ण हैं नखर नाम नहजाके ऐसो सिंह है तेज सो धाम स्थानम् नाम तेजका घर है महसा बलेन पृथुमनसां विपुलांतःकरणानां इन्द्रः श्रेष्ठ मह नाम बलताकरिके पृथुकही बड़े हैं मन नाम चित्त जिनके तिन जीवनके मध्यमें इन्द्रनाम श्रेष्ठ है यह हरिनाम सिंह जिष्णुर्जय शीलःनामजय करनहै स्वभाव जाको अत्रतनु बपुरित्यादौ पुनरुक्ति वदाभासस्पष्ट इतिनाम याश्लोकमें तनुबपु इत्यादिक शब्दनमेंपुनरुक्तिअलंकारसो प्रगटदिखाई देतुहै परन्तु पुनरुक्तिहै नहीं ९ ॥

फक्किका ॥ अत्र एकस्मिन् पदे परिवर्त्तितेनालंकार इति शब्दाश्रयो अपरस्मिंस्तुपदे परिवर्त्तिते ऽपि सनहीयत इत्यर्थ निष्ठ उभयालंकारोयम् १० ॥

टी० ॥ अत्र कहे या श्लोकमें एक जो पद पलटिये तो अलंकार नहीं रहै इति शब्दाश्रयः इति कहिये या हेतुते शब्दके आश्रय रह्यो अर्थात् शब्दके पलटेते शब्दालंकारता न रहै याते शब्दालंकार है अरु अपरस्मिंस्तुपदेनाम और जो पद हैं ताके तो पलटिबेहूते सनाम सो अलंकार न नाम नहीं हीयतेनाम जाय है इत्यर्थ निष्ठः इतिकहे याते अर्थ के आश्रय है अर्थात् और पद के पलटेहूते अलंकार नगयो याते अर्थहूके आश्रित रह्यो याते अर्थालंकार है उभयालंकारोयम् यहां अलंकार शब्दके आश्रित हूरह्यो अरुअर्थहूकेआश्रित रह्योयातेंउभयालंकारजानिये १० ॥

फक्किका ॥ एकस्मिन्नितितनुकुंजररक्तेत्यादिरूपे । अपरस्मिन् वपुः करि रुधिरादिरूपं इतिश्रीवत्सलांछन ११ ॥

टी० ॥ श्री वत्सलांछन टीकाकारको लेख एकस्मिन्नितिनाम एक शब्दको अर्थ यह है कि तनु कुंजर रक्त इत्यादिक रूप शब्द को पलटिये तो अलंकार नहींरहै है अपरस्मिन् नाम और पद जो है वपुःकरि रुधिर इत्यादिक रूप शब्दनके पलटिबेहूते अलंकार नहीं जाय है यहीरीति शब्द यमक चित्रमें अरु अर्थ यमक चित्र में समान जानिये ११ ॥

अथसंकर यमकालंकार लक्षणम् ॥ दो० ॥

शब्द अर्थके यमकबिबिहैं पुनरुक्ति अधीन । सव्यपेत अव्यपेत कहिसांतर अंतरहीन १२ ॥

टी० ॥ शब्द अर्थकेयमक बिबिशब्दनाम शब्दके यमक अरु अर्थनाम अर्थके यमक बिबिनाम द्वै प्रकार के यमकहैं पुनिरुक्ति अधीननाम पुनि रुक्तिके अधीन हैं जहाँ शब्द की पुनिरुक्तिहै तहाँ

शब्दयमकहै अरु जहाँअर्थकी पुनरुक्तिहै तहां अर्थयमक जानियें इनदोउनके द्वैद्वैभेदहैं सव्यपेत अव्यपेतकहि नामएक सव्यपेत भेदहै अरुएक अव्यपेत भेदहै सांतर अंतर हीननाम सांतरकहे और शब्दजाके बीचमेंआवे सव्यपेत जानिये अरु अन्तरहीन नामजाके अन्तरमें और शब्दनहोय सोअव्यपेत जानिये १२ ॥

अथ संकर शब्दयमक सव्यपेत ॥ यथा कवित्त ॥

उगिले अनेकमणितारेके कितारे नहीं ताहीको प्रकाश भासतासों जोन्हितरसै । दशहूं दिशामें जीभि फिरन किरनसमशीतना अशीत को प्रतापतापबरसै ॥ कवि काशीराज भनिशेष गोतहोत श्वेतहिये लियेविष द्युति श्यामताई सरसै । युक्तपरिवेष रेखनाही चन्द्रचन्द्रमुखी कुंडलीकियेहुये फणिन्द्रफणदरसै १३ ॥

टी० ॥ प्रलापिकावस्थामें नायकाका बचन सखीसों उगिले अनेकमणि तारेकेकितारे नहीं नामयह सर्पकेउगिले भये मणि हैं तारानकी पंक्तिनहीं है ताही को प्रकाश भास तासों जोन्हितरसै तामणिनको प्रकाशभास नाम देदीप्यमान ताकरिके जोन्हि जो हैचांदनीसो बराबरीको तरसै है दशहूं दिशामें जीभि फिरनकिरन सम नामदशों दिशामें यहजीभि फिर रही है किरनके बराबर अर्थात् किरन नहीं है जीभिहै सर्पकी शीतना नामशीतलता नहीं है अशीतको प्रताप ताप बरसै अशीत जो है उष्णता ता तेज सों ताप जो है दुःख ताको बरसै है कविकाशीराज कहै है शेष गोत होत श्वेत नाम शेषनागके बंशमें श्वेत बर्ण सर्पहोतहैं हिये लिये बिष द्युति श्यामताई सरसै हृदय में लियेहुये जो बिष है ताक-रिकै श्यामता सरस होयरही है काहे ते कि चन्द्रमाका नाम सु-धाधर है अरु सुधाहै अति स्वच्छ जो सुधा याके हृदयमें होती तो श्यामता न होती याते यह बिषधरही है युक्त परिबेष रेख-नाही चन्द्र चन्द्र मुखी हेचन्द्रमुखी सखी परिबेष नाम मंडलता

रेखा करिके युक्त यहचन्द्रमा नहीं है कुंडली कियेहुये फाणींद्रफण दरसै यह कुंडली किये भये नाम फेटी मारे हुये फणिन में जो इन्द्रहै सर्पराज ताको फण देखिपरतु है अर्थात् फण तो चन्द्रमाहै अरु कुंडली मंडलहै तारेके कितारे इत्यादिक शब्दनमें के अरु कि यहबर्ण जो अन्तरमें आयगये याते सव्यपेत यमक जानिये १३ ॥

अथसंकरशब्दयमकअव्यपेतप्रथमपदयमक यथा ॥ दो० ॥ सुमनस सुमनस वरलिये निजकर मंडहिकेश। परमसुअद्भुत हावयहधरिश्यामाको भेश १४॥

टी० ॥ यहां लीलाहावहै सुमनसनाम पुष्प सुमनस वरनाम देवतान में जो श्रेष्ठहैं ऐसे जो हैं श्रीकृष्ण सो लिये नाम पुष्पको ले करिके निज करते मंडहि नाम पोहे हैं बारनको परम सुअद्भुत हाव यह परम अद्भुत लीला हाव है धरि श्यामाको भेश नाम स्त्री का भेश धारण करिके नायकाके केशमंडन करैं हैं यहां सुमनस सुमनस या पदमें कोऊ और बर्ण बीचमें न आयो याते अव्यपेत यमक जानिये १४ ॥

अथसंकरअव्यपेतद्वितीयपदयमक। यथा॥दो०॥ चिबुक गांठ तेरो तिया मोहन मोहन यंत्र। भुजमेलत गर मुरति क्यों पढ्यो मानको मंत्र १५ ॥

टी० ॥ यहदूती की उक्ति नायका सों हेतिया तेरो जो चिबुक नाम ठोडी ता की जो गांठहै सो मोहन नाम श्रीकृष्ण तिनको मोहन यंत्रनाम मोह लेनेवारो यंत्रहै भुज नायकके गरेमें डारबे में तू क्यों मुरै है अर्थात् क्यों रुकै है पढ्यो मानको मंत्र कहीं मानको मंत्र पढ़ि आई है १५ ॥

अथसंकरअव्यपेततृतीयपदयमक।यथा॥ दो० ॥ गोदनवर शोभित चिबुक मनु शशि शनि लिये अंक। रती रती अति द्युति रती कंज भ्रमर ते रंक १६ ॥

टी० ॥ दूतीका वचन नायक सों गोदन नाम गोदना अस शोभित है चिबुक पर मानो चन्द्रमा शनैश्चर को गोदी में लेकर बैठे हैं ऐसी शोभा गोदना की भई रती नाम कामपत्नी ताकी जो रती नाम भाग्य सोतो कांति करिके अत्यन्त रतीमात्रहै नाम चिरमिठी के बराबरहै अर्थात् कामपत्नी वा नायकाके तुल्य नहीं है कंज नाम कमल अरु भ्रमर ये अत्यन्त गरीबहैं अर्थात् गोदना चिबुकके उपमा सें कमलमें भ्रमर वा शोभाको नहींपहुँचे है १६

अथसंकरअव्यपेतचतुर्थपद। यथा ॥ दो० ॥ कहा बजत ब्रजमें सखी रहत बनत नहिं गेहु । जो चाहति कुलकानि तिय कानन कानन देहु १७ ॥

टी० ॥ यहां सखी नायका सों उत्तर प्रति उत्तर हे सखी ब्रज में कहा बजत है या शब्द करिके घरमें रहत नहीं बने है अर्थात् वहीं जायबेको चित्तकरै है जो चाहत कुलकानि तियहेतिय जो अपने कुलकी कानि नाम लज्जाचाहो तो काननंनाम बन ताकी ओर कान न देहु काननाम कर्ण वा ओरको मतकरौ अर्थात् वा शब्दकोसुनो मतकाहेतें कि शब्दसुनेपर कानन रहैगी १७ ॥

अथ संकरचित्र अव्यपेतआद्यंतयमक ॥ यथा कबित्त ॥ चटकि चटकि उठैचूरी चारुकर बीच आपुही ते लटखुलि लटकिलटकि उठै। मटकि मटकिउठै बाईं अंगमेरी आजुबाजूभुज युगमध्य अटकि अटकिउठै ॥ छटकि छटकिउठै चूड़ाकीलकाशीराज बारबार बन्द पटकि पटकि उठै। भटकि भटकिउठै आलीनिहचैमिलेंगे काकफटकि फटकिउठै १८ ॥

टी० ॥ यहसगुन हर्षिता नायकाका बचन सखीसों चटकिउठै चूरीचारुकर बीचनाम टूटिटूटिजायहै चूरीसुन्दर बीचमें आपुहीते लटखुलि लटकि लटकिउठै अरु आपुही

जो चोटीमें बँधी है सो आपुहीसे खुलिके लटकि लटकि परै है
मटकि मटकिउठै बाईं अंग मेरीआजु नाम फरकि फरकि उठै है
आजमेरो बाँयों अंग बाजूभुज युगमध्य अटकि अटकिउठै बाजू
दोनोंभुजनमें फँस फँसजाय है छटकि छटकिउठै चूडाकीलनाम
कंकनकी कील निकस निकसजायहै काशीराज कविनाम बार
बार आँगीबंद पटकि पटकिउठै बारहीबार कंचुकीके बंदटूटटूट
जायहैं भटकि भटकिउठे मोहनमें मनआली हेआली श्रीकृष्णमें
मेरोमनआज भटकि भटकिउठै है नाम स्मरण आवै है निहचै
मिलेंगे काक फटकि फटकि उठै काकनाम कौवा फटकि फटकि
नाम उड़िउड़ि उठै है इनशकुननते यहदीसपरै है कि श्रीकृष्ण
निश्चय मिलेंगे १८ ॥

अथसंकर अव्यपेत तुकांतयमक॥ यथा कवित्त॥
मीसीमें रुचिर रुचिराजै द्विजराजमानों नीलमणिखाने
मध्यउच्चबसु कैसी है। बिंबकंजखंजरीटकीरओ कपोत
चाप लज्जितकियेहैं आजु शोभित सुकेसीहै॥ झाँखी
ते उझकिझांकि मेरोमनलीनों मोहि मोहिना मिलावै
बाहितू तियसुकेसीहै। काशीराज ऐसीभुवमंडलमें देखी
नाहिं इन्द्रलोकते जो किधौं उतरी सुकेसीहै १९ ॥

टी०॥ यहां उपपति नायक को वचन दूती से मीसी में
नाम शोभा की रुचि है राजै द्विजराज शोभायमान है द्विज
नाम रुचिर दन्त तिनकी पंक्ति जामें मानों नीलमणि खाने
मध्य उच्चवसु कैसी है मनहु नीलमणि के जो घर हैं तामें उच्च
वसु नामउच्च जो द्रव्य है अर्थात् हीरा मोती जो है कैसी है
नाम तैसी है शोभाबिंब नाम कुंदरू अरुकमल अरु खंजन अरु
तोता अरु कबूतर अरुचापनाम धनुष इनसबनको अंग प्रत्यंग
शोभा ते लज्जित आजु कियोहै शोभित सुकेसी है शोभायमान
हैं सुन्दर केशजाके ऐसीनायका झरोखाते झाँकि करिके उझकि

कारिके मेरो जोमनहै ताको मोहिलियो है मोहिनामिलावै वाहि तू तियसुकेसी है हेतिय तूकैसी तियाहै जो वानायकासों मोहिं नहीं मिलावै है अर्थात् वानायका को मिलायदे काशिराज कबि नाम ऐसी नायका पृथ्वी मंडलमें नहीं देखी किधों इन्द्रलोकते सुकेसीनामकी अप्सरा उतरी है अर्थात् पृथ्वीमंडलमें आईहै १९

अथसंकर अव्यपेत पादानुयमक ॥ यथा छन्द चौपैया ॥ सरसचिकुर सीताकोपक्ष । सरसचिकुर सीता कोपक्ष ॥ हरिअँगभासत स्थिरादक्ष । हरिअँग भासत स्थिरादक्ष २० ॥

टी० ॥ (सीतानाम पार्वती पक्षअर्थ) अधिकहै चिकुरनाम केश सीतानाम पार्वतीजी के पक्षनाममयूर पक्षहूते अर्थात् पार्वतीके केश मोरपक्षहूते सरसहैं हरिअंगनाम महादेवके अर्द्धांग भासत है भासतपद देहरी दीपक न्यायकरिके स्थिरानाम पर्वत दक्षनाम नंदीताकरिके शोभितहैं अर्थात् महादेव अरु पर्वत अरु नांदी इनकरिके शोभायमान हैं पार्वती १ ॥

(गंगापक्षअर्थ)सरसनाम जलकरिकेयुक्त चिकुरनाम चंचल सीतानाम गंगाके पक्षनाम पराक्रम अर्थात् अति चपलपराक्रम है हरि अँगभानाम विष्णुके अंगसोंभई सतनामसो अर्थात् अनेक प्रकारके स्थिरानाम मोक्षकी दक्षनाम चतुरहैं अर्थात् दाताहैं २०

अथ संकर अव्यपेत अर्द्धयमक ॥ यथा दोहा ॥ हरिसारँग भद्रासुभग सीतासुरगुण युक्त । हरिसारँग भद्रासुभग सीतासुरगुण युक्त २१ ॥

टी० ॥(रामचन्द्रपक्ष अर्थ) हरिनाम रामचन्द्रसारँग नाम धनुषभद्रा नाम हनूमान सु नाम सुन्दरभग नाम ऐश्वर्य्य सीता नाम सीताजी सुर नाम देवता गुण नाम सतोगुण इन करिके युक्तहैं अर्थात् शोभित हैं रामचन्द्र १ ॥

(शिवपक्ष अर्थ)हरि नाम महादेव सारँग नाम टेढ़ो चन्द्रमा

भद्रा नाम गंगासुन्नाम सुन्दर भग नाम शेष अर्थात् सुन्दर शेष सीता नाम पार्वती सुर नाम नंदीश्वर गुण नाम तमोगुण इन करिके युक्त हैं अर्थात् शोभित हैं महादेव २१ ॥

अथ संकर अव्यपेत सर्वयमक॥ यथा कवित्त ॥
बनीबनमालाछबि बनीबनमालाछबि बनीबनमालीछबि बनतटदेखिये। ब्रजकोशिंगार बरब्रजकोशिंगारबर ब्रज को शिंगारबर तोहीतिय लेखिये ॥ कबिकाशीराज मन मोहन मनमोहन तेरे मनमोहनही मैनमतपेखिये। मैन मतवारीमान मैनमतवारीमान मैनमतवारीमान चलन बिशेखिये २२ ॥

टी० ॥ यहांउत्तम दूतीका बचन मान मोचनमें नायका सों बनी वनमाला छबि बनरही है बनकी माला नाम पंक्तिकीशोभा बनी बनमाला छबि तैसिये बनमालाकी शोभाहै बनी बनमाली छबि अरु तैसिये श्रीकृष्णकी शोभा बन तट देखिये जलके किनारेपर देखिये ब्रजको शिंगार बर ब्रजको शिंगार जो है बंशीबट अर्थात् तहाँ ब्रजको शिंगार बर ब्रजके शृंगार बर जो है तेरोपति श्रीकृष्ण ब्रजको शिंगार वर ब्रजकी शोभा श्रेष्ठ तोहीं तिय लेखिये हे तिय तूही है काशीराज कबि नाम मन मोहन मन मोहन मन मोहन जो श्रीकृष्ण सो तो मनके मोहने वारे हैं अर्थात् तिनको तेरे मनमोहनही तेरे मनमें प्रीति नहीं मैन मत पेखिये काम शास्त्र देखे भये पर मैन मतवारी मान कामदेवके मसलन वारी है मानु नाम प्रमाणकी मैन मतवारी मान मैननाम हे मोमकरनवारी माननाम मानहु मैन मतवारी माननाम सुभ्के बावरी मत जानु चलन विशेखिये विशेष करिके चलिये २२ ॥

अथसंकरअर्थ यमकसव्यपेत ॥ यथा कवित्त ॥
द्वारपर बारबार आवतहौं नन्दलाल जे हैं कृष्ण हिये

बालचरचा मचाइहैं । वनतटकाननमें बेचन में दधि मिस मिलौंगी जो तोसों दहीसौति ललचाइहैं ॥ कवि काशीराज भनिराखिहौं बनारसमें शपथ तिहारे सो हैं झूठी न खचाइहैं । हाहाअब पीतमजूखोवो मतिमेरी पतिचरण गहतपद कैसेकै बचाइहैं २३ ॥

टी० ॥ यहस्वयंदूतिका नायकाकी उक्तिनायकसों द्वारपरबार बार आवतहौ नन्दलालनाम मेरे दरवाजेपर बारबार तुमआवो हो हेनन्दलाल अर्थात् बारबार तुम्हारे आयबेते जेहैं कृष्ण हिये बालनामजे बालहृदयकी कृष्णनाम श्यामहैं अर्थात् जे मलिन हृदयहैं तेचरचा मचाइहैंनाम चवावकरैंगी बनतट काननमें बेचनमेंदधिमिस मिलौंगी जोतोसों बननामजल ताकेकिनारेपर अरु काननाम बनमें दहीबेचबेकेमिस करिके तोसों मिलौंगी मैं दहीसौति ललचाइहै दहनाम जरीभई जेसौतिहैं तेहमारेतुम्हारे मिलापको देखिके ललचाइँगी काशीराज कविनाम भनिनाम कहै है राखिहौं बनारसमें नाम रसको बनारक्खौंगी मैं अर्थात् तुमसे प्रीति न तोरोंगी शपथ तिहारेसो हैं नाम सौगंद तुम्हारे सन्मुख झूठी नखचाइहैं नाममिथ्या न लिखैंगी हमहाहा अब पीतमजू खोवोमति मेरीपति हे पीतमजू अबहाहाखातिहूँ मेरी पतिजो लज्जाहै ताकोमति दूरकरो चरणगहत अरु पाँयन परतीहौं काहेते कि जोतुमद्वारपर मेरेबारबार आवोगे तो पदनाम प्रतिष्ठा कैसेकैबचाइ हैं नामकौनरीति करिकै प्रतिष्ठा बचावैंगी हमसंसारमें या कवित्तमें द्वारबार नन्दलाल कृष्णबन कानन इत्यादिक शब्दजोहैं तिनमें अर्थ पुनरुक्ति वदाभासहै तासोंअर्थ यमक जानिये अरु द्वारपर बार यहां द्वारबार शब्दकेमध्यमें पर शब्दआयो याते सव्यपेत जानिये २३ ॥

अथ संकरअर्थ यमकअव्यपेत ॥ यथा कवित्त ॥

भृगुलातपद हियापियवर राजतहै मोर पंखपक्षछाजैमेरे

मनभावै है। राजैहारबनमालआड़ते दिखाईदेत काशी राज तनपर गोरजसुहावै है। हरैपर दोषसांझसमयमें बिहारीश्याम ललितअरुण अंगताम्रकूलजावै है ॥ दक्षिणहरित हरेरंगसंग बलदेवकुंजरमतंगदंत कंध धरे आवैहै २४ ॥

टी० ॥ यहाँ उक्ति गोपीकी गोपीनसों जासमयमें कुबलयापीड़ हाथीको मारिके आये हैं श्रीकृष्ण भृगुलात नाम भृगुलता पद हिय पियवर नाम पीतम श्रेष्ठ को हृदयपद नाम स्थान है अर्थात् भृगुलताको स्थान है हृदय जाको राजत है मोरपंखनाम मयूरका पंख शोभायमान है जिनके पक्ष छाजै नाम सहायक वा शोभायमान है जिनमें सो मेरे मनको भावै है राजै हारनाम हार शोभायमान है जिनके सो बनमाल आड़ते दिखाई देत नाम बनकी जो माला कहे अवली ताकी ओटते दिखाई देतहै कवि काशीराज नाम तनपर गोरज सुहावै है नाम गौवनके खुरनते उड़ीभई जो रज सो शोभायमान ह्वैरही है शरीर के ऊपर हरैं पर दोष नाम पराये दोषको दूरकरै हैं साँझ समयमें बिहारी नाम ऐसे जो बिहारी श्रीकृष्ण हैं सो साँझ समयमें श्यामललित अरुण अंग नाम श्यामरंग अरु अरुणरंग इनकरिके मिश्रित सुन्दर अंगता अंग रुचिकरके ताँवेको लजावै हैं दक्षिण हरितनाम दाहिनी हरित नाम दिशा अर्थात् दाहिनी ओर हरेरंगसंग बलदेव हरे नाम डहडहे अर्थात् प्रसन्न रंगसों बलदेवजी संगमें हैं कुंजर नाम श्रेष्ठ मतंग दन्त कन्धधरे आवै हैं नाम हाथी श्रेष्ठ जो है कुवलयापीड़ ताको जो दन्त है सो कन्धेपर धरेहुये आवै हैं श्रीकृष्ण या कवित्तमें लातपद पियवर पंख पक्ष हार बनमाल इत्यादिक शब्दनमें अर्थ पुनरुक्तिसी है याते अर्थ यमक है लात पद इन शब्दनके बीचमें कोई शब्द नहीं आयो याते अव्यपेत जानिये २४ ॥

अथ उभयसंकर लक्षणम् ॥ दो० ॥ शब्द अर्थ पुनरुक्ति विवि एकछन्दमें होय । यमक उभय संकर तहां कहत सयाने लोय २५ ॥

टी० ॥ शब्द नाम शब्द यमक अर्थ नाम अर्थ यमक ये पुनरुक्ति दोऊ जहाँ एक छन्दमें होयँ ताको सयाने लोग उभय संकर यमक चित्र कहतहैं २५ ॥

यथा कबित्त ॥ तनुतनु मध्यसोहै देवअंग नासीअंगरागराग भावै मननेह सरनेहमें । कामकामभरी मैन पेखीमैनकैसोहिय अंबरसुवास वासअंबर सुदेहमें ॥ काननमें मेरेवैन मानिचलोकाननमें मिलिबोगहन फिरि गहनसुछेहमें । कविकाशीराज लालदेखेबनै गुणरूप धामधामऐसीतिय नाहीं गेह गेहमें २६ ॥

टी० ॥ यहाँ उत्तम दूतीका वचन नायक सों तनु तनु मध्य सो है तनु नाम सूक्ष्म तनु नाम शरीर मध्य नाम बीच अर्थात् शरीरका मध्य जो है कटि सो कृश शोभायमान है जाकी देव अंगनासी नाम देवताकी स्त्री सी है अंगराग राग भावै मन नाम अंगराग चन्दनादि अरु राग रागिनी जाके मनको रुचै है नेह सर नेहमें नेह नाम प्रीति सर नाम सरोवर नेह नाम जल अर्थात् या समयमें वा नायकाकी प्रीति सरोवरके जल में है काम काम भरी काम नाम कामदेव काम नाम कामना ता करिके परिपूर्ण ह्वै रही है मैन पेखी नाम मैंने ऐसी नहीं देखी मैन कैसो हिय नाम मोम कैसो है हृदय जाको अंबर सुवास वास अंबर सुदेहमें अंबर नाम औषधी ताकी है सुवास नाम सुगंधकी वास नाम स्थान है अंबर नाम वस्त्र जाको अर्थात् सुगंध युत वस्त्र ऐसो है जाके सुंदर देहमें काननमें मेरे वैन मानि चलो नाम कर्णमें मेरे वचन सुनिके चलो काननमें नाम वनमें काहेते

कि मिलिवो गहन फिर नाम वाको मिलाप फिरि कठिनहै गहन सु छेहमें गह नाम गहोल सु छैहमें नाम सुंदर अवकाश सें याको आशय यह है कि ऐसी नायका या समयमें जल क्रीड़ामें है ऐसे एकांत समयमें चलिके वनमें ग्रहणकरो क्यों नहीं कवि काशी-राज कविको नाम लाल देखे बनै गुणरूप धाम धाम हे लाल गुण अरु रूप अरु धाम नाम तेज इन तीननके धाम नाम निवास स्थान है देखेई बनै है अर्थात् अकथनीय है ऐसी तिय नाहीं गेह गेह में नाम ऐसी तिया घर घर प्रति नहीं है या कवित्तमें तनु तनु राग राग काम काम वास वास धाम धाम गेह गेह यह अव्यपेत शब्द यमक हैं अरु अंग अंग नेह नेह मैन मैन अंबर अंबर कानन कानन यह सव्यपेत शब्द यमक हैं अरु तनु अंग राग नेह काम मैन अंबर वास कानन गहन धाम गेह यह अर्थ यमक हैं या कवित्तमें अर्थ यमक भी अरु शब्द यमक भी अरु अव्यपेत अरु सव्यपेत दोऊ आये याते उभय संकर जानिये २६ ॥

अथ कविवंश वर्णनम् ॥ दो० ॥ गौतमऋषिके वंशमें भयेनृपति बरबंड । काशी में शिवकृपाते कीनों राजअखंड २७ तासुतनयजग विदितहैं चेतसिंहमह-राज । आगम निगमप्रवीन अति दानिनमें शिरताज २८ हौंसुततिनको जानिये विदितनामबलवान । काशीराजसुग्रंथमें कियोनाम परधान २९ अति लघुमेरी बुद्धिहै कविकोविद मतिधाम । भूलचूककीक्षमाजो यही बड़नको काम ३० ॥

अथ ग्रंथसंवत्सर ॥ कवित्त ॥ देवगुरु बारसोहैल-सैप्रिय धृतियोग श्रवणसुखद गुणआगम बखानिये । आशातिथिपूरी जहांइषुशुक्ल पक्षयुत हरन विघनखल जगमेंप्रमानिये ॥ निधिसिद्धिनागचन्द्र विक्रमसुअब्द

अलिराशिहै ललिततहां राजै पहिचानिये । कविकाशी-
राजमन आनन्द करनहार ग्रंथकोजनम दिनकिधौंशि-
वजानिये ३१ ॥

टी० ॥ (अथग्रन्थजन्मदिनपक्षअर्थ) देव गुरु वार सोहै नाम देवतान के गुरु जो बृहस्पति तिनको दिन सोहै है ता दिन अर्थात् वादिन बृहस्पतिवार है लसै प्रिय धृतियोग अरु सत्ताईस योगमें धृति नाम जो योगहै सो लसैहै प्रिय जहां श्रवण सुखद गुण आगम बखानिये अरु सत्ताईस नक्षत्रनमें श्रवण नाम नक्षत्र है ता समयमें कैसो है श्रवण नक्षत्र जाको सुखदायक ता गुण आगम जो है ज्योतिषशास्त्र सो बखानै है यह सर्व दिग्गसन्तता प्रसिद्ध है आशा तिथि पूरी जहाँ आशा नाम दिशा दिशा संख्याकी जो तिथि है सो है पूरी जहाँ अर्थात् नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा यह जो पाँच तिथि हैं तामेंसे पूरी नाम पूर्णा तिथि है पूर्णातिथि तीन तामें दिशा कहे दश यासों दशमी तिथि जानिये कौन मासकी दशमी है इषु शुक्लपक्ष युत इषु नाम क्वार महीना की शुक्लपक्ष करि युत है अर्थात् बिजयदशमी है कैसी है दशमी कि हरन विघन खल जगमें प्रमानिये नाम विघ्न रूपी जो खलहैं तिनको दूर करनवारी है ऐसे जगमें प्रमाण कीजिये निधि सिद्धि नाग चन्द्र विक्रमसुअब्द नाम विक्रमादित्यके सुअब्द नाम सुकहे सुंदर सुंदर अरु शोभन इन दोऊनको एकअर्थ है याते शोभन नामको विक्रमादित्यको संवत्सर जानिये अरु विक्रमादित्य गत राज्य वर्ष संवत् १८८९ जानिये निधि कहे नौ सिद्धि कहे आठ नाग कहे आठ चन्द्र कहे एक अंकानां वामतो गतिः या रीति करिके यह संवत्काढ्यो अलि राशिहै ललित तहाँ राजै पहिचानिये अरु ता समयमें अलि नाम वृश्चिकराशि ललित नाम सुन्दर राजै है सो जानिये कवि काशीराजके मनको आनंद करनवारो ग्रंथको जनमदिवसहै ऐसो किधौं शिवजानिये १

(अथशिवपक्षअर्थ) देव गुरुवार सो है नाम देवतानमें श्रेष्ठ वार नाम महादेव सो है हैं अर्थात् देवतानमें श्रेष्ठ महादेव सो है हैं कैसे हैं महादेव कि लसै प्रिय धृतियोग नाम योगकी धारणा प्रिय लसैहै जिनको श्रवण सुखद गुण आगम बखानिये आगम कहे शास्त्र ताके विषे जिनके गुण बखानै हैं वे गुण श्रवणके सुख दाता हैं आशा तिथि पूरी जहाँ अतिथि कहे याचक जन तिनकी जो आशा कहिये कामना सो पूरनहोय है जहाँ यहाँ अकः सवर्णेदीर्घः करिके अतिथि शब्द कढ्यो इषु शुक्लपक्ष युत इषु नाम बाण कैसे हैं कि शुक्ल कहे श्वेतपक्ष कहे पंख इन करिके युक्त हैं अर्थात्सुपेद परगीरी हैं जिनमें ऐसे जोबाणहैं सोहरनविघनखल नामजेखल्ल विघ्नकरनवारे हैं तिनके हरन हैं अर्थात् नाशकर्ता हैं यहबात प्रमाणहीहै कि महादेवका शस्त्रहै बाणअरु बाणकोकर्म यही है निधिसिद्धि नागचन्द्र बिक्रम सुअब्दनाम नौनिधिहैं यह महापद्म-पद्म-शंख-मकर-कच्छप-मुकंद-कुंद-नील-खर्व-ये नौनिधिकेनाम जानिये अरु अष्टसिद्धिहैं यह-अणिमा-महिमा-गरिमा लघिमा-प्राप्तिः-प्राकाम्य-ईशित्व-वशित्व—यह अष्टसिद्धि हैं अरु नाग अष्टकुलहैं यह-अनंत-वासुकि-तक्षक-कर्कोटक-शंख-कुलिक पद्म-महापद्म-यह आठजाति जानिये चन्द्रनाम चन्द्रमा विक्रम नाम विशेष करिके क्रमनाम संचार सुअब्दनाम सुन्दरपर्वत अर्थात् सुन्दर जोपर्वत है कैलाश तापर निधि अरु सिद्धि अरु नाग अरु चन्द्रमा येविचरैं हैं जहां अलिराशिहै ललित तहांअरु अलिनाम भ्रमरकीराशि कहिये समुदाय है तहांनाम ताहीठौर पर ललितनाम शोभायमान हैं तहांयहशब्द देहरीदीपक न्याय करिके तहँराजै पहिचानिये नाम ताहीपर्वतपर शिवराजे हैं यह जानिये । कविकाशिराज मन आनन्द करनहार काशिराज जो कविहै ताकेमनमें हर्षकेवृद्धि करनवारे किधौं शिव जानियेनाम ऐसेहैं महादेवजीसो जानिये २१ ॥

अथ ग्रंथपरिपूर्ण मंगलाचरण ॥ कवित्त ॥

कमल नयनवर अंगरुचि नीरदसी पीतपट कटिराजै मुकुटमयूरपक्ष । आकृत मकरकान कुंडल कलितमणि मोतीमाल वनमालसोहै भृगुलातवक्ष ॥ अधरमधुरपर मुरली विराजमान गोपिनके मध्यछाजे दक्षिण परम दक्ष । चरण शरणआय कविकाशीराज ताके चित्रचन्द्रिका जोग्रंथकीनो जगमें समक्ष ३२ ॥

टी० यह मंगलाचरण है ग्रन्थकर्ता कबि श्रीकृष्णकी स्तुति करैहै कैसेहैं श्रीकृष्ण कि कमलनयनवरनाम कमलतेश्रेष्ठहैं नेत्र जाकेअंगरुचि नीरदसी नाम जाकेअंगमेंशोभा मेघकीसी है पीत पट कटिराजैनाम पीताम्बर कटिमेंराजै है मुकुटमयूर पक्षनाम जिनकामुकुट मयूर पंखकोहै आकृत मकरकान कुण्डल कलित मणिनाम मकराकृत मणिकरिके कलितनाम जटित ऐसो है कानमें कुंडल जाके मोतीमाल वनमालसोहै भृगुलात वक्षनाम मोतीकीमाला अरुबनमाल अरुभृगुमुनिकीलात जाकेवक्षनाम हृदयमें सोहैं हैं अधर मधुरपर मुरली विराजमान नामजाके मधुर ओष्ठके ऊपर बांसुरी शोभायमान है गोपिनके मध्यछाजै नाम गोपिनके बीचमें शोभायमानहै दक्षिणनाम दाक्षिणनायक है अरु परमदक्षनाम परम चतुर है चरण शरणआय कविकाशी राजताके तिन श्रीकृष्णके चरण शरणमेंआय करिके कविकाशी राज चित्रचन्द्रिका जोयहग्रन्थहै ताकोकीन्हों जगमें समक्षनाम संसारमें प्रत्यक्षकीन्हों ३२ ॥

इतिश्रीमच्छ्रीलक्ष्मीनारायणचरणकमलप्रसादात्श्रीकविकाशीराज विरचितचित्रचन्द्रिकाग्रन्थःसम्पूर्णतामियात् ॥

दो० ॥ इन्दुरामग्रह शशिवरष मार्ग शुक्ल रविबार ।
चित्रचन्द्रिकापूर्णभो पंचमितिथिसविचार ॥

समाप्तः ॥

छंदार्णवपिंगल

जिसमें मात्रावृत्त, बर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघुगुरु स्थापन रीति और सब छन्दोंके दृष्टान्त सहितरूप हैं ॥

कबिकुलकल्पतरु

भूषणचिन्तामणिजीरचित जिसमें अतिरुचिर छन्दोंमें नायकाभेदकी पूरी बातें लिखी हैं ॥

सतशयीसटीकबिहारीलालजीरचित

श्रीकृष्ण राधाजीके बिषयमें सम्पूर्ण नायका भेदका बर्णन सातसौ दोहोंमें है और दोहेके भावार्थके सवैये और कवित्तभीहैं॥

प्रेमरत्न

राजाशिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादी रत्नकुवँरि रचित केवल श्रीकृष्ण और रामचंद्रजीकी भक्तिपक्षका बिषय दोहा चौपाई में है ॥

जगद्बिनोद

पद्माकर कविकृत जिसमें नायकाभेदमें सर्वप्रकार के रस वर्णन किये गयेहैं ऐसी उत्तम सर्वलक्षण युक्त काव्यकी पुस्तक कोई नहीं है ॥

रसचन्द्रोदयवरसवृष्टि

उदयनाथजी व शिवनाथजी रचित इसमें सब प्रकार की नायकाओं का भेद और उनके सर्व प्रकारके अलंकार रचित हैं ॥

अनुरागवर्द्धनी

मातादीनपांडे रचित जिसमें नये प्रकारके दोहे चौपाई और कवित्त भक्तों के अनुराग और प्रीति के बढ़ानेकेलिये वर्णन किये गये हैं ॥

रामानंदबिहार

ठाकुर जानकीप्रसाद कृत—श्रीरामचन्द्रका सुयश छंदोंमें वर्णन किया गयाहै—देखनेके योग्य है ॥

रघुबीरध्यानावली

ठाकुर जानकीप्रसाद कृत—यह पुस्तक राम रसरसिक पुरुषोंको अत्यंतही आनन्द दाता है उत्तमता अवलोकन करने से प्रकट होगी ॥

प्रेमतरंगिणी

मुंशी हफ़ीजुल्लाहखां संग्रहीत—प्रत्येकविषयके कवित्त व सवैया हैं ॥

सीतारामनखशिख

चौधरी रघुवरसिंह कृत—नखसे शिखपर्य्यंत श्रीराम जानकी की शोभाका अद्भुत वर्णन है ॥

रसार्णव

क्याही उत्तम कविताकी पुस्तक है प्रत्यक्षही रस टपका पड़ताहै—रसिकोंको तो सजीवनहै ॥

कुमारसंभव

काव्य तो प्राचीनहै—परन्तु तिलक निहायत उत्तम भाषामें कियागयाहै ॥

प्रेमरत्नाकर

लक्षीराम कविकृत—नायका भेदमें यह ग्रंथ अद्वितीय है ॥

बिचित्रोपदेश

सामयिक कवित्त ऐसे उत्तम इसमें हैं जो वर्षों ढूंढ़नेसे नहीं मिलते ॥

रसिकमोहन

कहांतक इसकी प्रशंसा करैं रसिकोंका मनमोहनहीं है ॥
